अंक 01- 2018

आवरण

प्रकृति और भाषा का

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
(पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार)
क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ

मार्गदर्शन : श्री एस. के. गुप्ता, क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय निदेशालय लखनऊ

सम्पादन : डॉ. आर. के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ'

रूप सज्जा एवं संयोजन : डॉ. चन्द्रकांत दीक्षित, वैज्ञानिक 'ख'

टंकण : श्रीमती रंजना सक्सेना, अ.श्रे. लिपिक, कु. साक्षी विश्वकर्मा

महत्वपूर्ण नोट:

- इस पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे सरकार अथवा केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं का मूल उद्देश्य राजभाषा का प्रचार-प्रसार करना एवं अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करना है।
- पत्रिका का प्रकाशन किसी व्यवसायिक उद्देश्य के लिए नहीं किया गया है।

S.P. Singh Parihar, I.A.S
Chairman
एस. पी. सिंह परिहार भा.प्र.से.
अध्यक्ष

सत्यमेव जयते

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
CENTRAL POLLUTION CONTROL BOARD
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार
MINISTRY OF ENVIRONMENT, FOREST & CLIMATE CHANGE GOVT. OF INDIA

संदेश

मुझे हर्ष है कि केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय निदेशालय लखनऊ द्वारा **"आवरण"** नामक पत्रिका प्रकाशित की जा रही है।

भाषा किसी भी देश के साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक पहलुओं को जानने व समझने का सशक्त एवं प्रभावी माध्यम होती है। राजभाषा के रूप में हिन्दी को अपनाए लगभग छः दशक हो गए हैं। 14 सितम्बर 1949 को भारतीय संघ की राजभाषा बनने के बाद से हिन्दी का प्रयोग क्रमिक रूप से बढ़ा है किन्तु राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में संयुक्त प्रयास करने की आवश्यकता है। हिन्दी दिवस / सप्ताह / पखवाड़ा मनाते हुए हमें हिन्दी के प्रयोग सम्बंधी संवैधानिक दायित्वों को पूरा करने के लिए ऐसे ठोस कदम उठाने होंगे ताकि हिन्दी के प्रयोग में गुणात्मक व संख्यात्मक वृद्धि के साथ-साथ कम्प्यूटर का भी प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।

इस अवसर पर मैं क्षेत्रीय निदेशक, लखनऊ एवं सम्बंधित सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि **"आवरण"** पत्रिका पर्यावरण एवं राजभाषा हिंदी को सहज रूप में प्रचारित करने की दिशा में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किये गए सफल प्रयास के रूप में सिद्ध होगी।

इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(एस. पी. सिंह परिहार)

'परिवेश भवन' पूर्वी अर्जुन नगर दिल्ली-110 032 **(भारत)**
'Parivesh Bhawan' East Arjun Nagar, Delhi-110 032 India
Tel. +91-11-22307233, Tele Fax : +-11-22304948, e-mail: ccb.cpcb@nic.in

Prashant Gargava
Member Secretary
डॉ. प्रशांत गार्गव
सदस्य सचिव

सत्यमेव जयते

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
CENTRAL POLLUTION CONTROL BOARD
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार
MINISTRY OF ENVIRONMENT, FOREST & CLIMATE CHANGE GOVT. OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय निदेशालय लखनऊ द्वारा "आवरण" नामक पत्रिका प्रकाशित की जा रही है | इस अवसर पर मैं क्षेत्रीय निदेशालय लखनऊ के सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ |

हिंदी भारत के जनमानस की अभिव्यक्ति की सशक्त भाषा है। देश विदेश में सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी के महत्व को देखते हुए संविधान निर्मात्री सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया। तभी से प्रतिवर्ष हम इस दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

मुझे आशा है कि "आवरण" पत्रिका के प्रकाशन से न केवल हिंदी भाषा के क्षेत्रीय निदेशालय स्तर पर प्रचार और प्रसार में किये गए प्रयासों को बल मिलेगा बल्कि कार्यालय के सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्यों में हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रोत्साहन भी मिलेगा ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(प्रशांत गार्गव)

'परिवेश भवन', सी.बी.डी.-कम-ऑफिस कॉम्पलैक्स, पूर्वी अर्जुन नगर, दिल्ली-110 032
'PARIVESH BHAWAN', C.B.D.-CUM-OFFICE COMPLEX, EAST ARJUN NAGAR, DELHI-110 032
PHONE: 011-22303655 TEL./FAX: 91-11-22307078, e-mail : prashant.cpcb@gov.in | mscb.cpcb@gov.in

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
Central Pollution Control Board
क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ
Regional Directorate, Lucknow
(पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार)
(Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Govt. of India)

संदेश

भारतीय संविधान निर्मात्री सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को 'हिंदी' को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। परिणामस्वरूप 26 जनवरी, 1950 में लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार यह प्रावधान किया गया है कि संघ सरकार की राजभाषा 'हिंदी' एवं लिपि 'देवनागरी' होगी। संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ सरकार को यह दायित्व सौंपा गया कि वह भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक तत्वों तथा अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए हिंदी का प्रचार-प्रसार एवं अभिवृद्धि सुनिश्चित करे।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति केवल अपनी भाषा में ही संभव है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्र प्रेम को भी मजबूत बनाता है। अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अभिव्यक्ति सरल, सहज और स्वाभाविक होती है।

मुझे हर्ष है कि केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय निदेशालय लखनऊ द्वारा "आवरण" नामक पत्रिका प्रकाशित की जा रही है। इस अवसर पर मैं क्षेत्रीय निदेशालय लखनऊ के सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका पाठकों को नए और उपयोगी शोध सम्बन्धी जानकारी, पर्यावरण के क्षेत्र में हो रहे वैज्ञानिक क्रियाकलापों, वैज्ञानिक लेखों एवं सूचनाओं को राजभाषा हिंदी के माध्यम से पहुँचाने में सफल होगी।

मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल एवं सफल भविष्य की कामना करता करता हूँ।

एस. के. गुप्ता

(एस. के. गुप्ता)

क्षेत्रीय निदेशक

पिकप भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (उ.प्र.)
PICUP Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar,
Lucknow-226010 (U.P.)
EPABX दूरभाष : 0522-4087600, 4087700
दूरभाष / Tel. : 0522-4087601, 2721915
फैक्स / Fax : 0522-4087602
ई मेल / e-mail : cpcblucknow@gmail.com

प्रधान कार्यालय/Head Office
परिवेश भवन, ईस्ट अर्जुन नगर, दिल्ली-110032
Parivesh Bhawan, East Arjun Nagar, Delhi-110032
EPABX दूरभाष/ Tel. : 011-43102030, 22303717
फैक्स/Fax : 011-22307078, 22305793, 22304948
ई मेल/e-mail : cpcb@nic.in
वेबसाईट/website:http://www.cpcb.nic.in

संयोजक की अभिव्यक्ति

क्षेत्रीय निदेशक महोदय की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ द्वारा "आवरण" हिंदी पत्रिका का प्रथम अंक प्रकाशित किया जा रहा है | पत्रिका के नामकरण, रूप सज्जा एवं संयोजन का अवसर मिलना मेरे लिए अत्यंत गौरव का विषय है |

तकनीकी विकास के चलते आज कम्प्यूटर और मोबाइल आदि पर हिंदी में कार्य करना कठिन नहीं रह गया है | सामान्य तकनीकी जानकारी रखने वाला व्यक्ति भी सरलता से हिंदी में टंकण का कार्य कर सकता है |

पत्रिका के प्रकाशन का मूल उद्देश्य राजभाषा का प्रचार-प्रसार करना, पर्यावरणीय, वैज्ञानिक विषयों का राजभाषा हिंदी में प्रकाशन तथा कार्यालय के सभी सदस्यों को राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करना है ।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु बनाई गई समिति के अन्य सदस्यों डॉ. आर. के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ', श्री जे. पी. मीणा, वैज्ञानिक 'ग' एवं श्री श्रीराम शाह, वरिष्ठ लिपिक का बहुत आभार है, विशेष रूप से डॉ. आर. के. सिंह जिनके कुशल सम्पादन एवं बहुमूल्य सुझाव से यह पत्रिका मूर्त रूप ले पाई | मैं पत्रिका के प्रकाशन हेतु प्रेरित करने के लिए श्री पी. के. मिश्रा, पूर्व क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ का आभारी हूँ | पत्रिका हेतु मुख्यालय स्तर पर मिले विशेष सहयोग के लिए मैं बहुत आभार व्यक्त करता हूँ |

पत्रिका के मुखपृष्ठ की रूप-रेखा बनाने में श्री वी. के. सचान, वैज्ञानिक 'घ' एवं श्री राजेश प्रसाद शाक्य, क. प्र. स. का विशेष सहयोग मिला जिसके लिए मैं उनका आभारी हूँ |

पत्रिका में प्रयुक्त कुछ चित्र एवं तथ्य इन्टरनेट के माध्यम से साभार लिए गए हैं, जिनके लिए उनके मूल छाया चित्रकार/रचनाकार का आभार व्यक्त किया जाता है |

पत्रिका हेतु अपनी रचनाएँ भेजने वाले निदेशालय के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए मुझे आशा है कि पत्रिका के आगामी अंको के लिए भी इसी प्रकार सहयोग प्राप्त होता रहेगा |

कोई भी कृति अपने आप में सम्पूर्ण नहीं होती अतः आगामी अंक को और अधिक रोचक व ज्ञानवर्धक बनाने हेतु आपके बहुमूल्य सुझाव एवं रचनाएँ सदैव सादर आमंत्रित हैं |

डा. चन्द्रकांत दीक्षित
वैज्ञानिक 'ख'
क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ

****अनुक्रमणिका****

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
	कार्यालय द्वारा हिंदी में किये कार्यों का संक्षिप्त विवरण	
1	हिंदी में पत्राचार	9
2	कार्यालयीन कार्यों में हिंदी भाषा का समुचित प्रयोग एवं उपलब्धियां	11
3	'तनाव प्रबंधन' पर कार्यशाला	12
4	"पर्यावरण एवं वन्यजीवों का संरक्षण" पर कार्यशाला	14
5	राजभाषा हिंदी पखवाड़ा 2015 .....गतिविधियां	17
6	'तनाव मुक्ति एवं योग' पर कार्यशाला	22
7	'हिंदी में तकनीकियों का प्रयोग- वर्तमान एवं भविष्य' पर कार्यशाला	25
	****पुरस्कृत रचनाएँ (निबंध एवं कविताएँ)****	
	निबंध (वर्ष 2013) विषय: फेसबुक पर हिन्दी	
8	प्रथम पुरस्कार (संयुक्त), डॉ. एच.पी.एस. राठौर, वैज्ञानिक 'ग'	28
9	श्री ए.के. त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'ख', प्रथम पुरस्कार (संयुक्त)	30
10	श्री बी.एम. सिंह, वरिष्ठ तकनीशियन, द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त)	32
11	श्री जे.पी. मीणा, वैज्ञानिक 'ग', द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त)	34
	कविताएँ (वर्ष 2013)	
12	घोर अमावस की रातों में डॉ. चन्द्रकांत दीक्षित, वैज्ञानिक 'ख', प्रथम पुरस्कार, वर्ष 2013	36
13	माँ-गंगा, पिता-हिमालय श्री श्रीराम शाह, वरिष्ठ लिपिक, प्रोत्साहन पुरस्कार, वर्ष 2013	37
	निबंध (वर्ष 2014) विषय: हिन्दी भाषा, चुनौतियां तथा निदान	
14	श्रीमती रंजना सक्सेना, अ.श्रे. लिपिक, प्रथम पुरस्कार	38
15	श्री बी.एम. सिंह, वरिष्ठ तकनीशियन, द्वितीय पुरस्कार	40
16	श्री आर.डी. पाटिल, वैज्ञानिक 'ग', तृतीय पुरस्कार	42

	कविताएँ (वर्ष 2014)	
17	चलो जलाएं एक दिया हम डॉ. चन्द्रकांत दीक्षित, वैज्ञानिक 'ख', प्रथम पुरस्कार, वर्ष 2014	44
18	पर्यावरण है ये..... डॉ. पूनम पाण्डेय, रिसर्च एसोसिएट, द्वितीय पुरस्कार, वर्ष 2014	45
	निबंध (वर्ष 2015) विषय: विश्व मंच पर हिंदी की स्वीकार्यता	
19	श्री श्रीराम शाह, वरिष्ठ लिपिक, प्रथम पुरस्कार	47
20	श्री जे.पी. मीणा, वैज्ञानिक 'ग', द्वितीय पुरस्कार	49
21	डॉ. संजय सिंह, रिसर्च एसोसिएट, तृतीय पुरस्कार	51
	कविताएँ (वर्ष 2015)	
22	कंक्रीट के जंगल में.... डॉ. चन्द्रकांत दीक्षित, वैज्ञानिक 'ख', प्रथम पुरस्कार, वर्ष 2015	52
23	रे कारे बदरा रूठ गए .... डॉ. संजय सिंह, रिसर्च एसोसिएट, द्वितीय पुरस्कार, वर्ष 2015	53
24	जो लोग अभी भी गाते हैं.... डॉ. रजनीश कुमार शर्मा, रिसर्च एसोसिएट, प्रोत्साहन पुरस्कार, वर्ष 2015	55
25	जलवायु परिवर्तन (निबंध) श्री प्रकाश पंत, प्रथम पुरस्कार (परिचर वर्ग), वर्ष 2015	56
	निबंध (वर्ष 2016) विषय: विद्यालय स्तर पर राजभाषा हिन्दी का क्या समुचित अध्ययन अध्यापन होता है ?	
26	डॉ. आर. के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ' प्रथम पुरस्कार	56
27	डा. फरीद अंसारी, रिसर्च एसोसिएट द्वितीय पुरस्कार	58
28	**निबंध (वर्ष 2017) विषय: स्वच्छता में हमारा योगदान**	
29	डॉ. संजय सिंह, रिसर्च एसोसिएट प्रथम पुरस्कार	60
30	डॉ. आर. के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ' द्वितीय पुरस्कार	62
	****आमंत्रित रचनाएँ****	
31	गंगा मैली : उत्तरदायी कौन ? डॉ. देवेंद्र कुमार सोनी, वैज्ञानिक 'घ', डॉ. फरीद अन्सारी, रिसर्च एसोसिएट	65
32	स्वच्छ रहे पर्यावरण श्री राजेश प्रसाद शाक्य, क. प्र. स.	70
33	पर्यावरण नारे श्री श्रीराम शाह, वरिष्ठ लिपिक	71

34	अच्छी और सस्ती अक्षय ऊर्जा से देश का आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संतुलन श्री राम बालक सिंह, वैज्ञानिक 'ग'	72
35	गंगा की पुकार डॉ. राज किशोर सिंह, वैज्ञानिक 'घ'	75
36	असंतुलित पर्यावरण श्री श्रीराम शाह, वरिष्ठ लिपिक	76
37	राजभाषा हिंदी से सम्बंधित रोचक तथ्य डॉ. चन्द्रकांत दीक्षित, वैज्ञानिक 'ख'	77
38	हरियाली - हरियाली श्री श्रीराम शाह, वरिष्ठ लिपिक	79
39	विभिन्न वर्षों में विश्व पर्यावरण दिवस की थीम डॉ. आर. के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ'	80
40	हिंदी लेखन-सुधार की संभावनाएं डॉ. चन्द्रकांत दीक्षित, वैज्ञानिक 'ख'	82
41	आओ गंगा को पुनः स्वच्छ बनायें डॉ. पूनम पाण्डेय, रिसर्च एसोसिएट	83
42	पर्यावरण-संरक्षण पर केंद्रित .....एक चिंतन डॉ. आर.के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ'	84
43	प्रेरक वचन डॉ. आर.के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ'	87
44	राजभाषा संकल्प, 1968	90

कार्यालय द्वारा हिंदी में किये कार्यों का संक्षिप्त विवरण

01. हिंदी में पत्राचार

हिंदी पत्राचार का लेखा जोखा (01.04.2017 से 31.03.2018)

- कुल प्राप्त पत्र : 2605
- हिंदी में प्राप्त पत्र : 762
- अंग्रेजी में प्राप्त पत्र : 1843
- हिंदी में भेजे गए पत्र : 553
- अंग्रेजी में भेजे गए पत्र : 1641

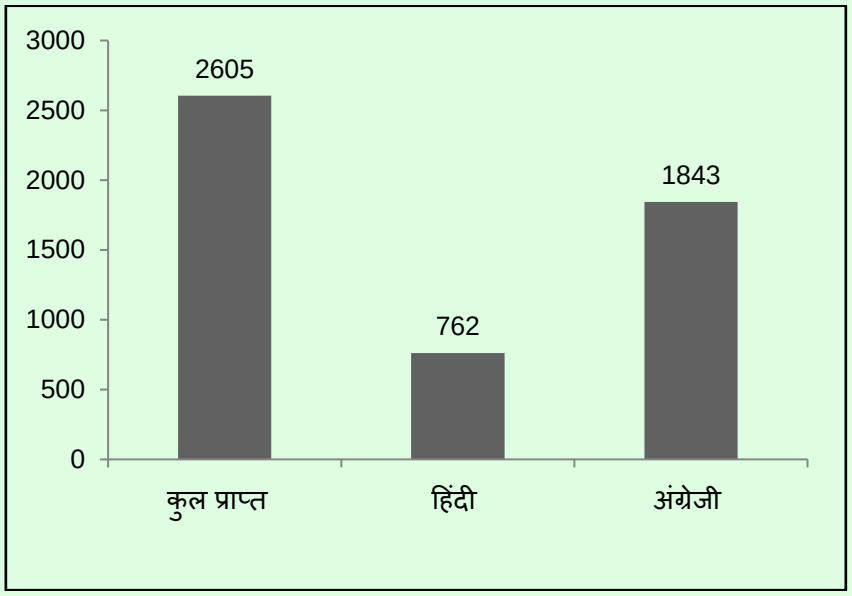

--प्राप्त पत्रों का लेखा चित्र--

**** राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है, आइये एक साथ बढिए, हिंदी को अपनाइये ****

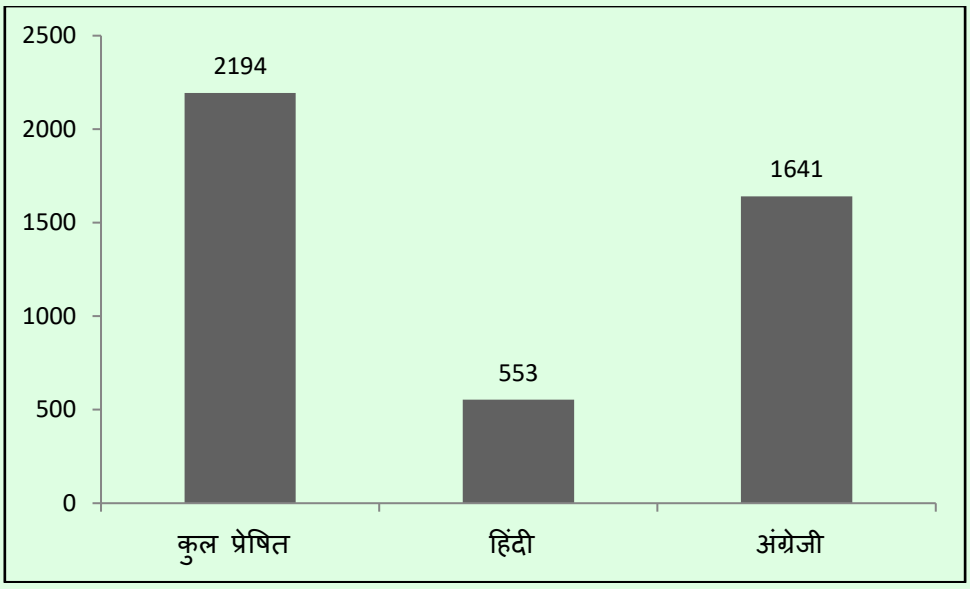

--प्रेषित पत्रों का लेखा चित्र---

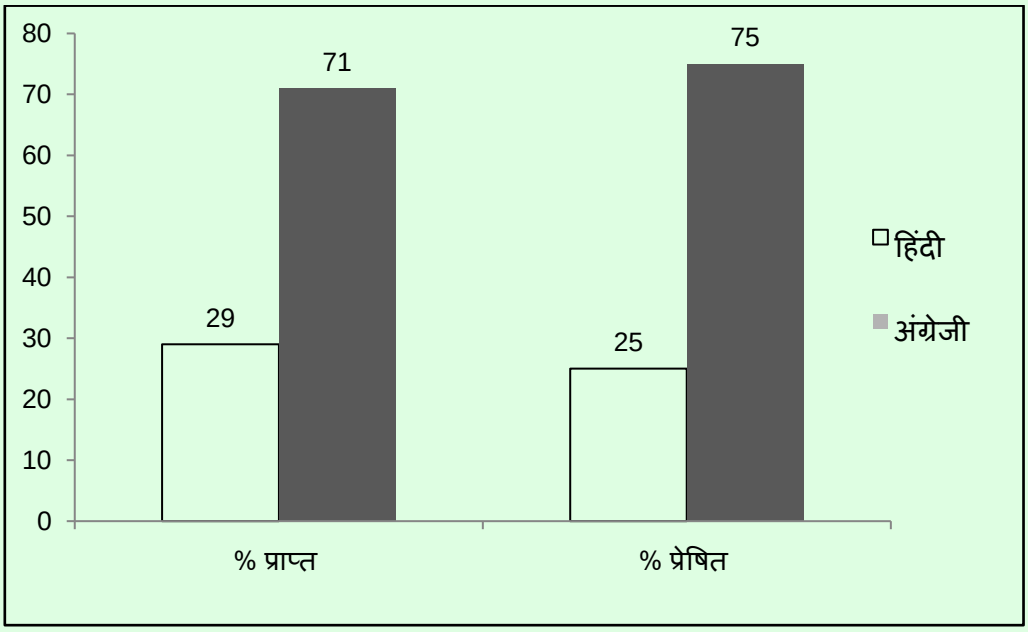

--हिंदी और अंग्रेजी में प्राप्त एवं प्रेषित पत्रों का प्रतिशत दर्शाता लेखा चित्र--

**** हिंदी में पत्राचार हो, हिंदी में हर व्यवहार हो, बोलचाल में हिंदी ही अभिव्यक्ति का आधार हो ****

02. कार्यालयीन कार्यों में हिंदी भाषा का समुचित प्रयोग एवं उपलब्धियां

1.समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने की प्रवीणता प्राप्त है।

2.कार्यालय कार्य के दौरान बोल-चाल की भाषा, राजभाषा हिन्दी है।

3.कार्यालय कार्य में प्रयोगी समस्त प्रकार के प्रपत्र हिन्दी में छपे हैं।

4.नाम पट्टिका एवं सूचनापट्ट द्विभाषी बनवाए गए हैं।

5.रबर की मुहरें हिन्दी अथवा द्विभाषी बनवाई गई हैं।

6.लेटरहेड एवं नोटशीट पैड पर कार्यालय का नाम व पता द्विभाषी है।

7.कार्यालय आदेश, परिपत्र, ज्ञापन एवं अनुबन्ध आदि हिन्दी में जारी किये जाते हैं।

8.कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित है। हिन्दी बैठक के दौरान समिति द्वारा कार्य की समीक्षा की जाती है एवं रिपोर्ट नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) तथा केन्द्रीय बोर्ड, मुख्यालय को प्रेषित की जाती है।

9. प्रत्येक वर्ष हिन्दी सप्ताह, पखवाड़ा या हिन्दी माह मनाया जाता है।

10.हिन्दी में अच्छे और सर्वाधिक कार्य करने वालों को प्रोत्साहन दिया जाता है।

11.प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है एवं प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाता है।

**** वर्ष 1918 में महात्मा गांधी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन में हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने को कहा था, इसे गांधी जी ने जनमानस की भाषा भी कहा था ****

'तनाव प्रबंधन' पर कार्यशाला

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ में दिनाँक 04.03.2016 को 'तनाव प्रबंधन' विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सी.डी.आर.आई), लखनऊ के डॉ. विजय नारायण तिवारी, निदेशक (राजभाषा) को कार्यशाला में 'तनाव प्रबंधन' विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था। तत्कालीन कार्यालय प्रभारी श्री पी. के. मिश्रा के दौरे पर होने के कारण कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. आर.के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ' द्वारा की गयी।

कार्यशाला में सर्वप्रथम माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर माल्यार्पण किया गया तत्पश्चात श्री गोविंद भगत, अनुभाग अधिकारी द्वारा कार्यशाला में उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया गया तथा व्याख्यान हेतु आमंत्रित डॉ. वी. एन. तिवारी का परिचय उपस्थित कार्यालय सदस्यों से कराया गया तत्पश्चात डॉ. तिवारी का स्वागत करते हुए उन्हें व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। डॉ. तिवारी ने विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि व्यवहार विज्ञान के विषयों में यह सबसे रोचक एवं विशेष विषय है।

उन्होंने बताया कि तनाव का प्रबंधन या नियंत्रण कैसे करें ? यह जानने से पहले यह जानना आवश्यक है कि तनाव क्या है और क्या इससे बचा जा सकता है, क्या तनाव मुक्त रहा जा सकता है ? डॉ. तिवारी ने बताया कि आज के समय में सभी तनाव में हैं कोई भी तनाव मुक्त नहीं है | तनाव से बचा नहीं जा सकता केवल इसे कम किया जा सकता है।

उन्होंने बताया कि हमारे शरीर को हमारा मस्तिष्क नियंत्रित करता है और कुछ असामान्य अथवा अप्रिय घटित होने पर हमारे शरीर में कुछ हार्मोंस स्वत: स्रावित होते हैं जिनका विपरीत प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है और हम तनाव में आ जाते हैं।

सहज से असहज होना ही तनाव है। जब कोई व्यक्ति तनाव में होता है तो उसके व्यवहार एवं भाव-भंगिमा से इसका बोध हो जाता है कि वह तनाव में है। तनाव में आने पर हमारी श्वास तेज चलने लगती है भ्रकुटियाँ तन जातीं हैं और हम क्रोध में आ जाते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति में तनाव के लक्षण अलग-अलग होते हैं तथा स्ट्रेसर अर्थात तनाव देने वाले कारण - व्यक्ति, घटना, पर्यावरण, स्थान इत्यादि भी अलग-अलग होते हैं।

डॉ. तिवारी ने बताया कि जिसमें जितना अहं होता है उसमें उतना ही तनाव भी होता है क्योंकि उसे केवल अपनी बात ही सही लगती है दूसरे की बात अथवा गलती उसे सहन नहीं हो पाती है अत: वह तनाव में आ जाता है।

"मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता"

आचार्य विनोबा भावे

डॉ. तिवारी ने बताया कि तनाव की गंभीर अवस्था में नकारात्मकता बढ़ जाती है, हाइपरटेंशन, नींद न आना, एसीडिटी इत्यादि समस्याएं आने लगती हैं और अगर ध्यान न दिया जाए तो कभी-कभी व्यक्ति समूह से दूर एकांत में बैठने लगता है। ऐसे व्यक्ति के साथ सहृदयता तथा नैतिक समर्थन (Moral support) की आवश्यकता होती है।

डॉ. तिवारी ने बताया कि तनाव को समय रहते नियंत्रित करना अति आवश्यक है। तनाव को नियंत्रित करने के लिए सर्वप्रथम स्वयं को, अपने क्रोध को, नियंत्रित करना आवश्यक है।

आत्म स्वरूप का सम्यक बोध अहं को पिघला देता है और जब अहं अर्थात स्व की भावना समाप्त हो जाती है तो किसी दूसरे के व्यवहार से हम पर कोई फर्क नहीं पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति 'विशिष्ट' होता है यदि इस सत्य को स्वीकार कर लिया जाए तो दूसरे के व्यवहार से पड़ने वाले प्रभाव से बचा जा सकता है जो तनाव का एक प्रमुख कारण है।

डॉ. तिवारी ने बताया कि हम तनाव से बचने के लिए स्वयं को नियंत्रित कर सकते हैं इसके लिए क्रोध आने पर थोड़ा रूक जायें, अपने विवेक का प्रयोग करें, स्थितियों/परिस्थितियों का मूँल्याकन करने पर स्वत: सुझाव (Auto suggestion) मिल जाता है जो तनाव की स्थिति को नियंत्रित करने का सबसे उत्तम उपाय है।

अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. आर.के. सिंह द्वारा श्री तिवारी को 'तनाव प्रबंधन' विषय पर उनके महत्वपूर्ण व्याख्यान हेतु धन्यवाद दिया तथा वर्तमान व्यस्त जीवनशैली में 'तनाव प्रबंधन' की कला की व्यापकता, रोचकता एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भविष्य में होने वाली कार्यशालाओं में श्री तिवारी को पुन: इसी विषय पर व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किये जाने का सुझाव दिया जिससे विषय को और अच्छी तरह समझा जा सके तथा तनाव का प्रबंधन करने की कला को बेहतर तरीके से सीखा जा सके।

"जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता"
डॉ. राजेंद्र प्रसाद

"पर्यावरण एवं वन्यजीवों का संरक्षण" पर कार्यशाला

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ में दिनाँक 03.06.2016 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में सी.डी.आर.आई., लखनऊ के डॉ. विजय नारायण तिवारी, उप-निदेशक (राजभाषा) को कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून समीप होने के कारण कार्यशाला का विषय 'पर्यावरण एवं वन्यजीवों का संरक्षण' रखा गया था। कार्यालय में उपस्थित सभी कार्यालय सदस्यों ने कार्यशाला में सहर्ष भाग लिया।

कार्यशाला की अध्यक्षता तत्कालीन कार्यालय प्रभारी श्री पी.के. मिश्रा द्वारा की गयी। कार्यशाला में सर्वप्रथम प्रभारी महोदय द्वारा डॉ. तिवारी का स्वागत किया गया।

तथा प्रभारी अधिकारी सहित कायार्लय सदस्यों द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर माल्यार्पण किया गया।

तत्पश्चात प्रभारी महोदय द्वारा 'विश्व पर्यावरण दिवस 2016' की थीम पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालते हुए बताया गया कि United Nations Environment Programme (UNEP) द्वारा वर्ष 2016 की विश्व पर्यावरण दिवस की थीम 'Go wild for life; Zero tolerance for the illegal wildlife trade' अर्थात 'वन्यजीवों के अवैध व्यापार के लिए शून्य सहिष्णुता' है।

तत्पश्चात श्री क्षितिज शुक्ला, अ. श्रे. लिपिक द्वारा वन्यजीवों के अवैध व्यापार के लिए शून्य सहिष्णुता से संबंधित वृत्तचित्र के साथ ही प्लास्टिक से निर्मित वस्तुओं एवं उनके नष्ट होने पर विभिन्न जीवों द्वारा ग्रहण किये जाने से प्रतिवर्ष लाखों जीवों की मृत्यु हो जाने संबंधित लघु चित्र कथा प्रोजेक्टर पर दिखायी गयी जिसमें प्लास्टिक के प्रयोग के कारण परोक्ष रूप से होने वाली हानि के साथ ही प्लास्टिक का प्रयोग न करने अथवा कम से कम प्रयोग करने हेतु जागरूक किया गया ।

डॉ. तिवारी द्वारा व्याख्यान में बताया गया कि 'वन्य जीवों के अवैध व्यापार के लिए शून्य सहिष्णुता' का तात्पर्य है कि विभिन्न प्रयोजनों के लिए वन्यजीवों का जो अवैध तरीके से शिकार किया जाता है उसे हम सहन न करें। इसके लिए हम जो भी हैं और जहाँ भी रहते हैं उस क्षेत्र में वन्यजीवों, पशुपक्षियों इत्यादि के शिकार के प्रति शून्य सहिष्णुता दिखायें और उसे रोकने में अपना सहयोग दें।

डॉ. तिवारी ने बताया कि विश्व में वन्यजीवों के दाँत, त्वचा (चमड़े), सींग इत्यादि से बनी हुई विभिन्न सामग्रियों के व्यापार एवं अन्य प्रयोजनों से वन्यजीवों का शिकार तेजी से किया जा रहा है जिसके कारण वन्यजीवों की बहुत सी प्रजातियाँ प्राय: लुप्त हो गयी हैं या लुप्त होने के कगार पर हैं। अत: हम सभी का यह दायित्व है कि हम इस प्रकार के कार्य में प्रवृत्त न हों तथा यदि अपने आस-पास हम इस प्रकार का कोई कार्य होते देखें तो उसे सहन न करें अर्थात उसे रोकने का यथा संभव प्रयास करें।

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है"
महात्मा गांधी

डॉ. तिवारी ने बताया कि विज्ञान व अध्यात्म दोनों सत्य तक पहुँचने के साधन हैं। **अहिंसा परमो: धर्म:** के आधार पर यदि हम सभी के अंदर अहिंसा का भाव जाग्रत हो जाये तो हम स्वत: ही इस प्रकार की प्रवृत्तियों से दूर रहेंगे और किसी जीव की हत्या/शिकार नहीं करेंगे।

कार्यशाला के दौरान तत्कालीन प्रभारी अधिकारी श्री पी.के. मिश्रा द्वारा क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ से राजभाषा की प्रगति एवं प्रसार के लिए प्रकाशित करवाई जाने वाली पत्रिका ***'आवरण'*** के मुखपृष्ठ का विमोचन किया गया ।

****

- हिंदी की दौड़ किसी प्रांतीय भाषा से नहीं अंग्रेजी से है
- एकता की जान है, हिंदी देश की शान है
- जब तक आपके पास राष्ट्रभाषा नहीं, आपका कोई राष्ट्र भी नहीं
- हिंदी में काम करना आसान है, शुरू तो कीजिये
- राष्ट्रभाषा सर्वसाधारण के लिये जरुरी है और हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी ही बन सकती है
- प्रांतीय ईर्ष्या - द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी उतनी दूसरी चीज में नहीं
- हिंदी सीखे बिना भारतीयो के दिलो तक नही पहुँचा जा सकता
- हिंदी शताब्दियों से राष्ट्रीय एकता का माध्यम रही है
- हिंदी का सम्मान, देश का सम्मान है
- हमारी स्वतंत्रता कहाँ है, राष्ट्रभाषा जहाँ है

राजभाषा हिंदी पखवाड़ा 2015.....गतिविधियां

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ में हिंदी दिवस 2015 के अवसर पर सितम्बर माह में राजभाषा हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय में उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने सहर्ष एवं उत्साह के साथ भाग लिया। राजभाषा हिंदी पखवाड़े के आयोजन के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं अन्य कार्यक्रम कार्यालय में आयोजित किये गये जिनका विवरण निम्नानुसार है-

उद्घाटन समारोह - हिंदी दिवस के सुअवसर पर दिनाँक 14.09.2015 को राजभाषा हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम प्रभारी महोदय एवं उपस्थित कार्यालय सदस्यों द्वारा माँ सरस्वती को माल्यार्पण के साथ ही दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया ।

राजभाषा की प्रगति के विषय में विचार विमर्श के दौरान प्रभारी महोदय द्वारा सभी कार्यालय सदस्यों से पखवाड़े के दौरान शतप्रतिशत कार्य राजभाषा में करने का आह्वान किया गया तथा तकनीकी सदस्यों को हिंदी में शोधपत्र लिखने, राजभाषा हिंदी में रिपोर्ट बनाने तथा आमजन को जानकारी उपलब्ध कराने के लिए प्रेरित किया गया।

टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता- हिंदी पखवाड़ा के दौरान पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कार्यालय सदस्यों हेतु आयोजित की जाने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं के अंतर्गत दिनाँक 16.09.2015 को टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गयी जिसमें कार्यालय के 18 सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता की उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्याँकन श्री पी.के. सिंह, सचिव नराकास, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ द्वारा किया गया।

"हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम माध्यम है"
सुमित्रानंदन पंत

निबंध प्रतियोगिता- कार्यालय में दिनाँक 18.09.2015 को निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के 11 सदस्यों ने भाग लिया। निबंध हेतु तीन शीर्षक दिये गये थे जिनमें से प्रतियोगिता के समय पर्ची उठा कर एक विषय 'विश्व मंच पर हिंदी की स्वीकार्यता' का चयन कर सभी प्रतिभागियों द्वारा निबंध लिखा गया। निंबध प्रतियोगिता की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्याँकन डॉ. राजबहादुर सिंह, उपनिदेशक (राजभाषा), केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, लखनऊ द्वारा किया गया।

12वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त कर्मचारियों हेतु निबंध प्रतियोगिता- 2015 में 12वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त कर्मचारियों के प्रोत्साहन हेतु दिनाँक 21.09.2015 को निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। कार्यालय में इस श्रेणी में आने वाले पाँच में से चार सदस्यों ने सहर्ष एवं उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिंदी कार्यशाला- हिंदी पखवाड़े के आयोजन के दौरान दिनाँक 22.09.2015 को कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय में उपस्थित सभी सदस्यों ने सहर्ष भाग लिया। आज की व्यस्त जीवन शैली एवं प्रदूषण इत्यादि के कारण आम जन में बढ़ते हुए तनाव एवं उसके कारण कार्यक्षमता में कमी को ध्यान में रखते हुए कार्यशाला का विषय 'कार्यक्षमता वृद्धि में योग का योगदान' निर्धारित किया गया था। अत: कार्यशाला में संबंधित विषय के ज्ञाता श्री पीयूष कांत श्रीवास्तव, अध्यक्ष, पतंजलि योग समिति, लखनऊ को व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया था।

कार्यशाला में सर्वप्रथम श्री गोविंद भगत, अनुभाग अधिकारी द्वारा उपस्थित सभी जनों का स्वागत करते हुए व्याख्यान हेतु आमंत्रित श्री पीयूष कांत श्रीवास्तव का परिचय कार्यालय के सदस्यों से कराया गया तथा उन्हें व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया।

श्री पीयूष कांत श्रीवास्तव जी ने निर्धारित विषय 'कार्यक्षमता वृद्धि में योग का योगदान' पर प्रकाश डालते हुए बताया कि भारतवर्ष में योग का अस्तित्व वैदिक काल से रहा है। प्रकृति और जीवात्मा का संयोग पहला योग है। उन्होंने बताया कि महर्षि पतंजलि ने योग के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अष्टांग योग या आठ योग क्रियाओं का वर्णन किया है जो निम्न है -

1) यम, 2) नियम, 3) आसन, 4) प्राणायाम, 5) प्रत्याहार, 6) धारणा, 7) ध्यान और 8) समाधि

"सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है"
न्यायमूर्ति कृष्णस्वामी अय्यर

श्री पीयूष कांत जी ने बताया कि योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:, अर्थात योग से समस्त तरह की चित्तवृत्तियों का निरोध होता है योग के द्वारा मनुष्य अपनी वृत्तियों (काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, राग-द्वेष आदि) भावनाओं को रोकने में समर्थ होता है अर्थात मन को इधर उधर भटकने न देना, केवल एक ही वस्तु में स्थिर रखना ही योग है। परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में योग का मुख्य उद्देश्य व्यवहारिक है क्योंकि यौगिक पद्धतियों के द्वारा मनुष्य अपनी कार्यक्षमता में वृद्धि करना चाहता है। इसके लिए अष्टांग योग के तीसरे एवं चौथे भाग - आसन (योगासन) एवं प्राणायाम को महत्व देना चाहिए क्योंकि योग जीवन जीने की कला है।

योग एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। श्री पीयूष जी ने बताया कि हमारा शरीर पंचमहाभूत - वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी और आकाश से बना हुआ है। वायु की सबसे छोटी इकाई प्राण है जो हमारे शरीर को संचालित करता है और प्राण शरीर के जिस हिस्से में शिथिल पड़ जाता है वो हिस्सा कमजोर पड़ने लगता है व बीमार पड़ जाता है।

आलस्य, थकान, उदासीनता, कार्य से संबंधित चीजों की मानसिक अस्वीकार्यता आदि कुछ ऐसे प्रमुख घटक हैं जो मनुष्य मात्र के कार्य की गति को धीमा करते हैं। प्रतिदिन किये जाने वाले योगाभ्यास शरीर और मानस को शक्ति प्रदान करने और कार्यक्षमता को बढ़ाने में सहायक होते हैं। दिन भर एक जगह बैठे-बैठे कार्य करने वाले लोगों की ऊर्जा को गतिमान करने की आवश्यकता होती है। जब वे ऐसा नहीं करते हैं तो असंतुलन पैदा होता है और इस असंतुलन का उपचार विशेष योगाभ्यासों व प्राणायाम से ही हो सकता है।

श्री पीयूष जी ने बताया कि मुख्य रूप से योग पाँच प्रकार के हैं जिनमें तीन क्रियात्मक हैं व दो ध्यानात्मक हैं। योग करने से पूर्व ॐ के जाप से मन को एकाग्र किया जाता है। ॐ (ओउम्) को ईश्वर का निज नाम व अनहद/अनाहत नाद भी कहते हैं, अनाहत अर्थात वो ध्वनि जो किसी संघात से उत्पन्न न हो ओर ॐ के उच्चारण में हमारी जिह्वा स्थिर (stand still) रहती है अर्थात हिलती नहीं है।

"हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी"
सी. राजगोपालाचारी

श्री पीयूष कांत जी ने बताया कि चित्त को शांत करने के लिए ॐ का उच्चारण (अ– नाभि, उ- हृदय एवं म- ओष्ठ से) तीन बार करना चाहिए जिससे शरीर में अच्छे हार्मोन्स का स्राव होने लगता है। इसके पश्चात श्री पीयूष जी द्वारा भस्त्रिका प्राणायाम, कपालभांति, अनुलोम-विलोम, भाम्ररी प्राणायाम के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी दी गयी तथा इसके साथ ही श्री पीयूष जी द्वारा योगासन व प्राणायाम किसी योगाचार्य के निर्देशन में ही प्रारंभ करने की सलाह भी दी गयी।

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह- दिनाँक 24.09.2015 को राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें एन.टी.पी.सी. लखनऊ में भूतपूर्व अपर महाप्रबंधक एवं राजभाषा प्रभारी श्री राकेश जेटली को मुख्य अतिथि तथा जायसी पंचशती सम्मान, जवाहर साहित्य सम्मान एवं हिंदी साहित्यकार सम्मान सहित अन्य अनेक अवसरों पर सम्मानित डॉ. सुरेश को स्वरचित कवितापाठ प्रतियोगिता के मूल्याँकन कर्ता एवं कवि के रूप में आमंत्रित किया गया था।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम प्रभारी महोदय सहित उपस्थित आदरणीय जनों द्वारा माँ सरस्वती को माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित किया गया तथा आमंत्रित अतिथियों का परिचय कार्यालय सदस्यों से कराया गया। तत्पश्चात स्वरचित कवितापाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कार्यालय के सात प्रतिभागियों ने स्वरचित कवितापाठ प्रस्तुत कर समारोह को रोचक एवं खुशनुमा बनाने में अपना योगदान दिया। तदनंतर कवि डॉ. सुरेश द्वारा अपनी कविताओं व गीतों के कुछ अंश सुनाये गये तथा श्री जेटली ने राजभाषा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि भाषा हमारी माँ है चाहें वो कोई भी भाषा हो अत: हमें अपनी भाषा का सम्मान करना चाहिए और इस पर गर्व महसूस करना चाहिए। राजभाषा हिंदी हमारी मातृ भाषा है अत: इसके प्रयोग में हमें किसी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिए क्योंकि जब तक हम स्वप्रेरित नहीं होंगे तब तक हम राजभाषा के विकास तथा उत्तरोतर प्रगति के लिए अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाने तथा उन्हें राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार हेतु प्रोत्साहित करने में समर्थ नहीं होंगे। आज की युवा पीढ़ी जो तेजी से पाश्चात्य संस्कृति की ओर आकृष्ट हो रही है उन्हें जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं का ज्ञान कराते हुए उन्होंने कहा कि-

रोटी और वसन जीवन में दो सोपान प्रमुख हैं,

हे नवयुवकों, इसमें तुम्हें भ्रम है ?

तत्पश्चात प्रतियोगिताओं में विजेता सभी प्रतिभागियों को प्रभारी महोदय एवं आमंत्रित अतिथियों द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया। अंत में तत्कालीन प्रभारी श्री पी.के. मिश्रा द्वारा अपने अध्यक्षीय संबोधन में राजभाषा पखवाड़ा कार्यक्रम में सक्रिय योगदान देने वाले सभी सदस्यों का आभार प्रकट किया गया तथा कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा कि-

'हिंदी बढ़ेगी तभी जब चाहेंगे सभी'

****

- हम सबका अभिमान है हिंदी...भारत की शान है हिंदी
- हिंदी अपनाओ....देश का मान बढाओ
- हाथ में तुम्हारे देश की शान ..हिंदी अपना कर तुम बनो महान
- देश की आशा.... हिंदी भाषा
- हिंदी मेरी पहचान है
- इग्लिश दिवस ?..चाइनीस दिवस ? तो फिर हिंदी दिवस क्यों ?
- हिंदी बोलने में शर्म नहीं... गर्व करना सीखें
- अंग्रेजी हमारी मजबूरी ..हिंदी हमारा स्वाभिमान ...चुनाव आपका
- हिंदी का विकास ...हमारा विकास
- हिंदी....भारत के माथे की बिंदी
- हिन्दी ही वह भाषा है, जिसने भारत की आजादी के लौ को कभी कम नहीं होने दिया
- अंग्रेजी भारत के लिए उपयोगी है, लेकिन हिन्दी भारत के लिए जरूरी है

'तनाव मुक्ति एवं योग' पर कार्यशाला

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ में दिनाँक 19.12.2017 को अपराह्न 4.00 बजे से हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में श्री पीयूष कांत श्रीवास्तव, अध्यक्ष, पतंजलि योग समिति, लखनऊ को 'तनाव मुक्ति एवं योग' विषय पर व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया था। कार्यालय में उपस्थित सभी कार्यालय सदस्यों ने कार्यशाला में सहर्ष भाग लिया। कार्यशाला में सर्वप्रथम क्षेत्रीय निदेशक सहित कायार्लय सदस्यों द्वारा माँ सरस्वती को माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित किया गया ।

श्री गोविंद भगत, प्रशासनिक अधिकारी द्वारा उपस्थित सभी जनों का स्वागत करते हुए व्याख्यान हेतु आमंत्रित श्री पीयूष कांत श्रीवास्तव का परिचय कार्यालय के सदस्यों से कराया गया तथा क्षेत्रीय निदेशक श्री गुप्ता के द्वारा उन्हें व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। श्री पीयूष कांत श्रीवास्तव ने 'तनाव मुक्ति एवं योग' पर प्रकाश डालते हुए बताया कि भारत में योग का अस्तित्व वैदिक काल से रहा है।

योगश्चित्तवृत्तिनिरोध: - योग से समस्त तरह की चित्तवृत्तियों का निरोध होता है योग के द्वारा मनुष्य अपनी वृत्तियों (काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, द्वेष आदि) अर्थात भावनाओं को रोकने में समर्थ होता है। अपने शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक ऐश्वर्य को एकत्रित करना ही योग है।

श्री पीयूष जी ने बताया कि हमारे शरीर में तीन दोष वात, पित्त और कफ होते हैं अगर इनका संतुलन बिगड़ता है तो हम बीमार पड़ जाते हैं | इसलिए वात, पित्त और कफ इन तीनों का संतुलन बना रहना बहुत ही आवश्यक है। यह हमारे शरीर के तीनों भागों में बंटे होते हैं। शरीर के ऊपर के भाग में कफ होता है, शरीर के मध्य में पित्त होता है और शरीर के निचले भाग में वात होता है।

अत: शरीर में वात, पित्त और कफ का संतुलन बनाये रखने के लिए विशेष योग व प्राणायाम का सहारा लिया जा सकता है। श्री पीयूष जी ने बताया कि मुख्य रूप से योग पाँच प्रकार के हैं जिनमें तीन क्रियात्मक हैं व दो ध्यानात्मक हैं। योग करने से पूर्व ॐ के जाप से मन को एकाग्र किया जाता है। ॐ (ओउम) को ईश्वर का निज नाम व अनहद/अनाहत नाद भी कहते हैं, अनाहत अर्थात जो ध्वनि किसी संघात से उत्पन्न न हो। ॐ के उच्चारण में हमारी जिह्वा स्थिर (stand still) रहती है अर्थात किसी प्रकार का घात अर्थात मुख में किसी अन्य स्थान को स्पर्श नहीं करती है।

श्री पीयूष कांत ने बताया कि चित्त को शांत करने के लिए ॐ का उच्चारण (अ- नाभि, उ- हृदय एवं म- ओष्ठ से) तीन बार करना चाहिए जिससे शरीर में अच्छे हार्मोन्स का स्त्राव होने लगता है। इसके पश्चात श्री पीयूष जी द्वारा भस्त्रिका प्राणायाम, कपाल भांति, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी एवं उद्गीथ प्राणायाम के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी दी गयी। भस्त्रिका प्राणायाम से श्वसनतंत्र, कपालभांति

से उदर संबंधी तथा अनुलोम-विलोम से मस्तिष्क संबंधी व्याधियां ठीक हो जाती हैं तथा शरीर स्वस्थ रहता है और शरीर स्वस्थ रहने पर मन स्वस्थ रहता है। इस प्रकार तनाव मुक्त रहने में योग का महत्वपूर्ण योगदान है।

इसके साथ ही श्री पीयूष जी द्वारा योगासन व प्राणायाम किसी योगाचार्य के कुशल निर्देशन में ही प्रारंभ करने की सलाह भी दी गयी ।

अंत में क्षेत्रीय निदेशक द्वारा श्री पीयूष कांत को कार्यशाला में आने तथा अपना व्याख्यान राजभाषा हिंदी में देकर सभी कार्यालय सदस्यों का मार्गदर्शन करने हेतु धन्यवाद देते हुए कार्यशाला का समापन किया गया।

****

'हिंदी में तकनीकियों का प्रयोग- वर्तमान एवं भविष्य' पर कार्यशाला

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ में दिनाँक 28.06.2018 को अपराह्न 3.00 बजे से हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में श्री अजय कुमार शाह, प्रिंसिपल साइंटिस्ट एवं इंचार्ज, प्रभारी राजभाषा, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ को कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का विषय 'हिंदी में तकनीकियों का प्रयोग-वर्तमान एवं भविष्य' था । कार्यालय में उपस्थित सभी सदस्यों ने कार्यशाला में सहर्ष भाग लिया। कार्यशाला में सर्वप्रथम क्षेत्रीय निदेशक श्री एस. के. गुप्ता सहित कायार्लय सदस्यों द्वारा माँ सरस्वती को माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित किया गया।

श्री गोविंद भगत, प्रशासनिक अधिकारी द्वारा उपस्थित सभी जनों का स्वागत करते हुए व्याख्यान हेतु आमंत्रित डॉ. अजय कुमार शाह का परिचय कार्यालय के सदस्यों से कराया गया। तत्पश्चात क्षेत्रीय निदेशक श्री एस. के. गुप्ता द्वारा डॉ. शाह को पूर्व निर्धारित विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया।

अपने व्याख्यान में सर्वप्रथम श्री शाह द्वारा बताया गया कि आज का युग सूचना, संचार तथा विचार का युग है जिसमें कम्प्यूटर एक कल्पवृक्ष के समान है। उन्होंने बताया कि यूनीकोड एक हिंदी फॉण्ट है जिसमें वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण को एक यूनिक नंबर दिया गया है। वर्तमान समय में कम्प्यूटर पर यूनीकोड अन्तर्निहित होता है जिसे इंटरनेट की सहायता से कम्प्यूटर पर एनेबल कर लिया जाता है।

यूनीकोड जिस कम्प्यूटर पर एनेबल होता है उसकी स्कीन पर ईएन लिखा हुआ दिखाई देता है जिसे ऑल्ट+शिफ्ट प्रेस करके आवश्यकतानुसार अंग्रेजी में कार्य करने के लिए ईएन तथा हिंदी में कार्य करने के लिए एचआई सलेक्ट कर लिया जाता है।

श्री शाह ने बताया कि वैसे तो वर्तमान में कम्प्यूटर पर हिंदी में अनेक फॉण्ट प्रयोग में लाये जा रहे हैं किंतु यूनीकोड फॉण्ट अपनी विशेषताओं के कारण सर्वाधिक एवं सुविधाजनक रूप से प्रयुक्त किया

जा रहा है क्योंकि इसमें जिनको हिंदी में टंकण नहीं आता है वे इंडिक इनपुट टूल की सहायता से विभिन्न प्रकार के कीबोर्ड का चुनाव करके अपनी आवश्यकतानुसार टंकण कार्य कर सकते हैं।

इसके साथ ही यूनीकोड के अंतर्गत मंगल फॉण्ट में तैयार की गयी फाईल को किसी भी अन्य कम्प्यूटर पर मूलरूप में पढ़ा जा सकता है। अत: यूनीकोड का ही प्रयोग किया जाना श्रेयस्कर है।

डॉ. शाह द्वारा पावर पॉइंट प्रस्तुतिकरण के माध्यम से राजभाषा से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी गयी तथा उन्होंने बताया कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी को सुगमता के साथ प्रयोग करना चाहिए जिसे सभी के द्वारा आसानी से समझा जा सके। अत: ज्यादा क्लिष्ट (कठिन) शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए यथा- प्रौद्यौगिकी के स्थान पर तकनीकी शब्द का प्रयोग अधिक सुगम होगा।

अंत में डॉ. आर. के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ' द्वारा डॉ. अजय कुमार शाह का आभार व्यक्त किया गया तथा कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने हेतु सभी कार्यालय सदस्यों को प्रेरित करने व मार्गदर्शन करने के लिए धन्यवाद देते हुए कार्यशाला का समापन किया गया।

****

पुरस्कृत रचनाएँ

निबंध एवं कविताएँ*

*निबंध का विषय प्रतियोगिता शुरू होने के समय ही दिया गया था तथा स्वरचित कविताएं प्रतिभागियों द्वारा स्वैच्छिक विषयों पर सुनाई गई |

फेसबुक पर हिन्दी

डॉ. एच.पी.एस. राठौर, वैज्ञानिक 'ग'

प्रथम पुरस्कार (संयुक्त), वर्ष 2013

फेसबुक पर हिन्दी का शाब्दिक अर्थ है किताब के चेहरे पर हिन्दी । आजकल कम्प्यूटर पर गूगल, जी मेल, याहू, स्काईप, रेडिफ आदि अनेक वेबसाइट उपलब्ध हैं उनमें फेसबुक नाम की भी एक वेबसाइट है। पहले तो केवल अँग्रेजी भाषा का ही उपयोग वेबसाइट पर किया जाता था लेकिन विज्ञान के क्षेत्र में विशेषकर कम्प्यूटर, साफ्टवेयर में आजकल इतना विकास हो चुका है कि अँग्रेजी भाषा के अलावा हिंदी के साथ साथ दूसरी भाषाओं का प्रयोग भी अब बडे ही सहज तरीके से किया जा रहा है। अब वह व्यक्ति जिसकी अंग्रेजी भाषा का ज्ञान थोडा है या बिल्कुल भी नही है अपनी बात को, विचारो को बडे ही सुगमता और सहज तरीके से लिखकर फेसबुक के द्वारा अपने दोस्तो के साथ-साथ दूसरो तक आसानी से रख सकता है, पहुँचा सकता है। अपने इन विचारो को पूरे विश्व में भेज सकता है।

फेसबुक पर हिन्दी को संदेश के द्वारा व्यक्त कर सकना अब बहुत आसान हो गया है। आजकल चाहे वह विद्यार्थी हो या किसी कार्यालय में कार्यरत कर्मचारी या अधिकारी, घर में पत्नी हो या पति, बेटा हो या बेटी सभी तो इस फेसबुक के प्रयोग करने के आदी हो चुके है।

आजकल तो सभी नेता चाहे वह मन्त्री है या मुख्यमंत्री अपनी बात को, विचार को और यहां तक पूरी राजनैतिक गतिविधियां इस वेबसाइट के जरिये भेजते है। फिर उसी आधार पर आम जनता के मन में उपजे विचारो का विश्लेषण करके आगे की राजनीति तैयार करते है। यह बात अलग है वह उसमें किस सीमा तक सफल होते है।

फेसबुक पर हिन्दी के फायदे :-

फेसबुक पर हिन्दी का प्रयोग करने से अनेक फायदे होते हैं जैसे हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त होना क्योकि वैसे आजकल की नई युवा पीढी हिन्दी भाषा का प्रयोग करना तो बहुत दूर की बात है, बोलना भी अपनी शान के विरुद्व समझती है।

हिन्दी भाषा के पठन-पाठन में रुचि का विकसित होना-

फेसबुक पर हिन्दी को संदेश के रुप में देखकर, हिन्दी भाषा को पढने में रुचि विकसित हो जाती है। यदि यह रुचि एक बार विकसित हो गई फिर हिन्दी को बोलने के अलावा लिखने में किसी तरह की कठिनाई का सामना नही करना पड़ता है ।

हिन्दी भाषा का लेखन में रुझान-

यदि कोई व्यक्ति हिन्दी फेसबुक पर उपयोग कर रहा है तथा यदि कोई संदेश हिन्दी में है तब सामान्यतया वह उसका जबाव हिन्दी में ही देगा। चाहे शुरुआत में वह हिन्दी भाषा का अशुद्ध प्रयोग ही क्यो न कर रहा हो । धीरे-धीरे उपयोग के साथ साथ वह एकदम शुद्ध हिन्दी भाषा का प्रयोग करने लगता है ।

"प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती"

नेता जी सुभाषचंद्र बोस

हिन्दी भाषा का विकास व प्रसार-

भारत सरकार ने बहुत कोशिश की कि हिन्दी भाषा का विकास पूरे तरीके से हो तथा साथ में इसका प्रसार भी उसी अनुपात में हो। शायद इन सब बातों को ध्यान में रखते हुये यूनीकोड के साथ-साथ फेसबुक पर हिन्दी जैसी साइटो का कम्प्यूटर साफ्टवेयर विकसित किया । शायद इसके प्रयोग से ही कर्मचारियो व अधिकारियों में हिन्दी भाषा में कार्य करने की रुचि जाग जाये। यह बहुत ही कारगर तरीका है। हिन्दी भाषा को लिखने व हिन्दी में कार्य करने का ।

फेसबुक पर हिन्दी के दुष्प्रभाव :-

जहाँ किसी तकनीक के फायदे होते है वहाँ उसके नुकसान भी होते है। इसका सबसे बडा दुष्प्रभाव विद्यार्थियों पर होता है और पति-पत्नी के बीच बढती हुई दूरियां। इसके सभी इतने आदतन हो गये है कि बच्चे अपनी पढाई को दर किनार करके पूरे पूरे दिन इसका प्रयोग करते हैं जिससे उनकी पढाई पर बहुत असर पढता है। इसी तरह पति-पत्नी के बीच दूरियों का पैदा होना भी हानिकारक प्रभाव है। यही नही इसका बहुत समय तक या पूरे-पूरे दिन प्रयोग करने से स्वास्थ पर भी बुरा असर पडता है जैसे कि आँखों की बीमारियों का होना। पेट खराब होना क्योकि व्यक्ति विशेष रात-रात भर जगता है जिससे नींद पूरी नही होती है ।

दिन-चर्या का कुप्रभाव-

जब व्यक्ति विशेष रात-रात भर जगेगा तब वह आफिस में कोई कार्य नही कर सकता है।

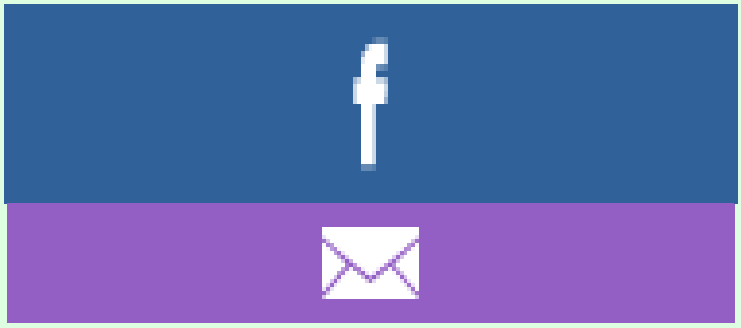

"हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है"
कमलापति त्रिपाठी

फेसबुक पर हिन्दी

श्री ए.के. त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'ख'
प्रथम पुरस्कार (संयुक्त), वर्ष 2013

वर्तमान समय में हिन्दी भाषा की उपयोगिता किस प्रकार से महत्वपूर्ण है इसकी सार्थकता एवं भाषा की अभिव्यक्ति को इस प्रकार से समझा जा सकता है जिसका प्रयोग करके हम अपने विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ, सामाजिक बदलाव एवं राजनीतिक परिदृश्य इत्यादि कम्प्यूटर के माध्यम से सामाजिक रुप से एक दूसरे से जुडने वाली बेवसाइट 'फेसबुक एक सामाजिक नेटवर्किंग साइट' द्वारा कर सकते है।

फेसबुक पर जानकारियां

आजकल विशेष रुप से अपने आस पास घटने वाली महत्वपूर्ण समसामयिक घटनाँए, सामाजिक परिदृश्य, राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक जानकारियो को फेसबुक के माध्यम से अपनी सहज भाषा हिन्दी के द्वारा सम्प्रेषित कर सकते हैं।

फेसबुक पर हिन्दी का महत्व

अपनी भाषा के माध्यम से हम प्राप्त जानकारियों को सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट फेसबुक पर लिख सकते है जिससे हिन्दी राजभाषा का उत्थान एवं सरलता से कम समय में प्राप्त जानकारियों को समझा जा सकता है इस प्रकार हिंदी भाषा की उपयोगिता उसकी सरलता तथा अभिव्यक्ति के महत्व को समझा जा सकता है। आजकल किसी भी प्रकार की जानकारी को सम्प्रेषित करने में 'सोशल नेटवर्किंग' फेसबुक द्वारा अविलम्ब भेजा जा सकता है एवं प्राप्त किया जा सकता है ।

फेसबुक की सामाजिक उपयोगिता

फेसबुक के माध्यम से हम आज जिस प्रकार से एक दूसरे के निकट बने रहते है, वर्तमान में इस 'सोशल नेटवर्किंग' साइट की महत्वपूर्ण भूमिका है । आधुनिक समय में समय की कमी एवं दैनिक कार्यो की व्यस्तता के कारण फेसबुक की सामाजिक उपयोगिता बढी है ।

फेसबुक पर विचारों की अभिव्यक्ति की सहजता में भाषा का महत्व

हिन्दी भाषा जिसे राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है यदि हम अपने सभी दैनिक कार्य एवं जानकारियों को अपनी भाषा के माध्यम से जोड़े एवं एक दूसरे को उपलब्ध जानकारियों को सम्प्रेषित करे तो भाषा की अभिव्यक्ति एवं उसकी सहजता के महत्व को समझा जा सकता है। इस प्रकार हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार एवं उत्थान के द्वारा हम गौरवान्वित होगें। हिन्दी भाषा को सार्वभौमिक रुप से स्वीकार किया जायेगा।

फेसबुक पर हिन्दी भाषा का महत्व

फेसबुक पर हिन्दी भाषा का योगदान अति महत्वपूर्ण है हम प्रतिदिन फेसबुक का उपयोग करते है यदि हम अन्य भाषाओं के स्थान पर अपने विचार अपनी बोलचाल की भाषा के माध्यम से सम्प्रेषित करें जिससे कि भाषा के महत्व को समझा जा सकता है । हिन्दी भाषा की उपयोगिता फेसबुक पर अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

आधुनिक समाज में सोशल नेटवर्किंग फेसबुक पर हिन्दी का योगदान

आधुनिक समय में सोशल नेटवर्किंग फेसबुक के द्वारा अपनी भाषा के माध्यम से विभिन्न महत्वपूर्ण जानकारियों को सहजता एवं सुगमता से सम्प्रेषित किया जा सकता है । जिससे हिन्दी भाषा का उपयोग,

"मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है"

लोकमान्य बाल गंगाधर

महत्व एवं योगदान को समझा जा सकता है। इस प्रकार फेसबुक एवं हिन्दी भाषा की उपयोगिता के महत्व को समझा जा सकता है।

विभिन्न प्रकार के योगदान

हिन्दी भाषा के द्वारा सुगमता से फेसबुक जैसी सोशल नेटवर्किंग साईट से जुडा जा सकता है। भाषा की उपयोगिता को समझा जा सकता है।

****

- हिन्दुस्तान के लिए हिन्दी से अच्छी कोई भाषा नहीं हो सकती है
- हिन्दी का महत्व इसी बात से समझा जा सकता है कि चाहे किसी नेता, अभिनेता या व्यापारी को हर भारतीय तक अपनी बात पहुंचानी होती है, तो उसे हिन्दी का उपयोग करना ही पड़ता है
- हिन्दी हम अपनाएंगे. राष्ट्र की शान बढ़ाएंगे
- हिन्दी एक जानदार और शानदार भाषा है
- हिन्दी ही एक मात्र भाषा है, जिसने भारत को एक सूत्र में पिरोये रखा है
- हिन्दी चिरकाल से ही एक ऐसी भाषा रही है, जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी भी शब्द का बहिष्कार नहीं किया है
- हिन्दी से सरल दूसरी कोई भाषा नहीं है
- मातृभाषा के बिना स्वतन्त्रता बरकरार नहीं रह सकती है

फेसबुक पर हिन्दी

श्री बी.एम. सिंह, वरिष्ठ तकनीशियन
द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त), वर्ष 2013

आजकल सम्पूर्ण विश्व में कम्प्यूटर के व इन्टरनेट के युग में लोगों की आपसी संचार व्यवस्था काफी तीव्र गति से तरक्की कर रही है। इस युग में एक और जबरदस्त आधुनिकता का उदय हो चुका है जो कि आजकल सबसे ज्यादा प्रचलित हो गया है। इस आधुनिक माध्यम या व्यवस्था का नाम है फेसबुक। फेसबुक विश्व में सभी आपसी चाहने वाले न चाहने वाले, आपसी विचारो का आदान प्रदान करने वाले व फोटो आदि के प्रसार माध्यम से लोगो को जोडती है। घर बैठे-बैठे व्यक्ति किसी से भी अपने विचार फेसबुक पर भेजकर जुड सकता है। फेसबुक पर अपने विचारों का आदान प्रदान हम जरुरत के अनुसार हिन्दी में भी कर सकते है। फेसबुक पर हिन्दी माध्यम से कार्य करना काफी लोकप्रिय हो रहा है। फेसबुक पर हिन्दी माध्यम में कार्य करना सबसे ज्यादा सुविधाजनक है। हिन्दी में फेसबुक पर अपने विचार भेजने से व्यक्ति देश में सही व्यवस्था को लागू करवाने में सहायता कर सकता है। फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने को निम्न रुपरेखा द्वारा समझा जा सकता है।

फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने की उपयोगिता

फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने की काफी उपयोगिता है आप अपने देश में बैठे - बैठे विदेश में रहने वाले अपने मित्रों, सगे सम्बन्धियों से जुड जाते है यहां तक कि मांगलिक कार्यक्रम की रुपरेखा भी तैयार हो जाती है। नित्य प्रतिदिन अपने परिवार के क्रिया कलापों को चित्र सहित भेज सकते हों। अपने पुराने से पुराने मित्रों से जुड सकते हो। अभी हाल में प्रकाशित घटना में फेसबुक पर हिन्दी के माध्यम से एक बीस वर्ष से ज्यादा समय से बिछडे व्यक्ति को अपने परिवार से मिलाना संभव हो पाया । बडे-बडे नामी गिरामी व्यक्तियों के विचार हिन्दी मे सुनने को मिलते है। कम पढ़े लिखे पर हिन्दी समझने वाले व्यक्तियों के लिये यह एक संचार क्रांति है। फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने का मतलब है आप अपने हदय से निकले शाश्वत विचारों का आदान प्रदान कर रहे हो। यह सिर्फ हिन्दी में ही संभव हो सकता है। क्योंकि फेसबुक पर हिन्दी में कार्य या उपयोग करने के लिये आपके पास बहुत समृद्ध शब्द होते है।

फेसबुक पर हिन्दी की आवश्यकता

फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने की आवश्यकता व्यक्तियों को दूसरे व्यक्तियों से सम्पूर्ण व सजीव रुप से जुडने के लिये पडती है। यदि आप फेसबुक पर है आपका कोई मित्र हिन्दी में अपने विचारों को आपसे साझा करना चाहता है तो आपको भी फेसबुक पर अपने विचारो को खुलकर हिन्दी में साझा करके ज्यादा सुविधा जनक प्रतीत होता है। आजकल तो विदेश में रहने वाले भी जानते है यदि फेसबुक पर हम अपने विचार दूसरों से साझा करना चाहते हैं तो उसका माध्यम हिन्दी से बढिया कोई नही हो सकता है।

"हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है"
राहुल सांकृत्यायन

फेसबुक पर हिन्दी की आवश्यकता इसलिये भी काफी प्रचलित है क्योकि फेसबुक पर हिन्दी में विचार डालने से आपसे साझा करने वालो की संख्या में काफी अधिक वृद्धि हो जाती है। फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने से आप अपने बुजुर्गो से जो कि हिन्दी के अलावा कुछ नही समझते है उनसे भी जुड सकते है।

फेसबुक पर हिन्दी की लोकप्रियता

फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करना काफी लोकप्रिय हो गया है। अब तो बडे-बडे बुद्विजीवी, वैज्ञानिक, कलाकार, खिलाडी, नेतागण फेसबुक पर हिन्दी के माध्यम से जुडे हैं और नित्य प्रतिदिन अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं । युवा वर्ग में फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने का एक जूनून व नशा सा हो गया है। अब फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने वालो की संख्या इसकी लोकप्रियता के कारण अत्यधिक है। फेसबुक पर हिन्दी की इतनी लोकप्रियता है कि बडे-बडे कवि अपनी कविता आजकल फेसबुक पर हिन्दी के माध्यम से लिखते है। हमारे कार्यालय के ही एक सहयोगी अक्सर अपनी कविता व सारगर्भित विचार फेसबुक पर हिन्दी के माध्यम से साझा करते है। फेसबुक आजकल इसलिये भी ज्यादा लोकप्रिय है क्योकि व्यक्ति इससे अपनी दैनिक घरेलू कार्यालय आदि की समस्याऐं बडी आसानी से हल कर रहे है। ऐसा फेसबुक पर हिन्दी के माध्यम से सम्भव हो सका है। काफ्रेंस, मीटिंग आदि फेसबुक पर हिन्दी के माध्यम से साझा करने मात्र से सरल एवं सुगम हो जाती है। जिससे सभी का बहुमूल्य समय बचता है। इसलिये फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने से हिंदी एवं फेसबुक की लोकप्रियता में चार चांद लग गये हैं ।

फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने के लाभ व हानि

फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने के लाभ ज्यादा है हानि बहुत कम है ।

लाभ

1.फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने से आप के काफी लोग से संपर्क करने की संख्या अधिक हो जाती है।

2.फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने से आप अपने कम पढ़े लिखे मित्रों सम्बन्धियों से जुड सकते हैं।

3.फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने से विदेशों में रहने वाले व्यक्तियों की निगाहों में देश का व अपना नाम ऊँचा होता है।

4.फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने से आप हिन्दी का प्रचार प्रसार करते हैं।

5.फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने से आप बडे-बडे लोगो की निगाहों में आ जाते है व उनसे सम्पर्क में आ जाते हैं।

6.फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने से आप में आत्मविश्वास का संचार होता है।

हानि

1.फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने से आप पूर्ण रुप से वैश्विक नहीं हो पाते हैं।

2.आपको दूसरे की भाषा को सीखने की इच्छा में कमी आ जाती है।

3.फेसबुक पर काफी चीजे खुल जाती हैं, गोपनीयता खत्म हो जाती है।

4.फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने से आप कूप मंडूक बन सकते हैं।

उपसंहार

फेसबुक पर हिन्दी में कार्य करने से सामाजिक जुड़ाव तो होता ही है, साथ ही लोकप्रियता भी बढ़ती है।

"हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता"
पंडित गोविंद बल्लभ पंत

फेसबुक पर हिन्दी

श्री जे.पी. मीणा, वैज्ञानिक 'ग'
द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त), वर्ष 2013

फेसबुक एक सोशल नेटवर्किंग साइट है, इसे 2004 में स्थापित किया गया | हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा के रुप में 14 सितम्बर 1949 को अपनाया गया | वर्धा हिन्दी समिति के आग्रह पर 1953 में एक समिति का गठन किया गया जिससे हिन्दी के राजकाज कार्यो में बढावा देने के लिए प्रयास किया गया | आज हिन्दी राजभाषा विभाग भारत सरकार के गृह मंत्रालय के आधीन है, यह विभाग हिन्दी के कार्य को बढावा देने के लिए समय-समय पर इसके लिए दिशा निर्देश भी जारी करता है तथा प्रति वर्ष अपनी वार्षिक रिपोर्ट संसद में प्रस्तुत करता है साथ ही इसके लिए भारत सरकार ने एक अलग से संसदीय समिति का गठन किया जो, राज्य सरकार व अधीनस्थ सरकारी कार्यालय व केन्द्र सरकार के कार्यालयों में समय-समय पर औचक निरीक्षण करती है तथा हिन्दी के कार्यो का विवरण तथा इसकी वृद्धि के आंकड़ों का मूल्यांकन करती है। भारतीय सर्विधान के अनुच्छेद 353 में राजभाषा के कार्यकलापों का सम्पूर्ण विवरण है।

फेसबुक पर हिन्दी :-आजकल हिन्दी का प्रचलन, फेसबुक पर विचारों का आदान-प्रदान तथा गूगल ने भी अपनी साइट पर विभिन्न भाषाओं में अपने लेखों को अनुवादित करके भेजने की सुविधा प्रदान कर रखी है अतः वर्तमान समय में विचारों के आदान प्रदान के लिए विभिन्न भाषाओं में अपने संदेश भेजने की सुविधा है जिनमें हिन्दी द्वारा भेजे गये संदेशों के आधार पर भारत विश्व में तीसरे नम्बर पर है। तथा इस पर भेजे गये संदेश को विभिन्न लोग देश ही नही विदेशों में शेयर करते हैं। क्योंकि भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा हिन्दी है तथा हमें आज भी इसे उपेक्षा की दृष्टि से होने के कारण हिन्दी भारतवर्ष में अपना वो सम्मान प्राप्त नही कर पाती है जिसकी हमारे महापुरुषों जैसे महात्मा गांधी एवं विवेकानन्द ने आशा की थी।

ई. गवर्नेस पद्धति

संचार के माध्यमों जैसे इंटरनेट द्वारा अपने संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से भेज सकते है। दूरस्थ लोग इसके माध्यम से आसानी से संवाद कर सकते है, प्रेषण में समय व खर्च में कमी आती है तथा पेपर रहित कार्य को बढावा देने के लिए सरकार इसे अपने दूतावासो में आसानी से वीडियों संवाद कर सकती है।

मित्रों से संवाद व फोटो

इस साइट के माध्यम से हम अपने दूरस्थ मित्रों से आसानी से अपनी भाषा में संदेश प्रेषित कर सकते है व अपने चित्रों को भी आसानी से आदान प्रदान कर सकते हैं।

संस्कृतियों का आदान प्रदान भी संदेशों के माध्यम से हम एक दूसरे को आसानी से सुनिश्चित कर सकते हैं। आजकल इस सोशल नेटवर्किंग साइट ने विश्व पटल पर लोगों को समीप ला दिया है। तथा सारे विश्व में इस सोशल नेट वर्किंग साईट का जबरदस्त प्रचार प्रसार हो रहा है तथा इससे सामाजिक व आर्थिक आदान प्रदान भी आसानी से किया जा रहा है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सोशल मीडिया द्वारा इस साइट से लोग आसानी से अपने विचारों व भावनाओं को सरकार तक पहुँचा सकते हैं तथा सरकार को इस माध्यम से लोगो की भावनाओं का आसानी से समझा व सीधे संवाद किया जाना आसान है।

प्रचार-प्रसार में इस साइट की उपयोगिता

भारत जैसे विशाल व लोकतांत्रिक देश में यह सोशल साइट लोगों से जुडने व अपने विचारों को सरकार तक पहुँचाने का एक माध्यम बन गयी है क्योकि आज के परिदृश्य में विभिन्न राजनैतिक पार्टिया अपने पार्टी के नेताओं की जनता द्वारा भावनाएं व वोटरों की तह तक नब्ज टटोलने का काम इस सोशल साइट के विचारों तथा लोगों द्वारा किये गये सुझावों के माध्यम से आसानी से कर लेती हैं जिससे एक निर्णायक भूमिका के रुप

में यह साइट काम कर रही है। हाल ही में भी इस वेबसाइट के द्वारा भारतीय जनता पार्टी ने भावी प्रधानमंत्री के रुप में मोदी को चुना है। लोगों ने इसके प्रति भावनाएं व विचारों का आदान प्रदान फेसबुक द्वारा किया है।

इस साइट के माध्यम से पूर्व से पश्चिम व उत्तर से दक्षिण लोगों को दूरस्थ बैठे अपनों से आसानी से जुडना आसान हो गया है, वे आसानी से इस सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से विश्व में हो रही घटनाओं से ओत प्रोत होते हैं वहाँ के सामाजिक, त्योहार तथा एक दूसरे से रुबरु हो जाते हैं तथा कम्प्यूटर बनाने वाली कंपनियों से अपने सिस्टम से विभिन्न भाषाओं में संदेश प्रेषित करने में सुगमता महसूस करते हैं |

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दी पर इस सोशल नेटवर्किंग साइट का जोर-शोर से प्रचार हो रहा है तथा आजकल हमारी सरकार विभिन्न सरकारी दस्तावेजों के लिए आसानी से अपने विचार व आसानी से अपनी भावनाएँ इस साइट के माध्यम से प्रेषित कर पा रही हैं, तथा विभिन्न बेहद कठिन मसलों पर सरकार इस साइट के माध्यम से लोकतांत्रिक देश के गणमान्य लोगो की भावना जान सकते हैं, तथा इससे निर्णय लेना आसान होता है। इस साइट के माध्यम से लोग आसानी से अपने विचार, सुझाव दे सकते हैं। भाषा एक माध्यम होती है तथा इस साइट के माध्यम से लोग आसानी से अपनी राज भाषा हिन्दी में अपने विचार प्रेषित करते है। इसलिए इन दिनों यह सोशल साइट जबरदस्त लोकप्रिय हो रही है ।

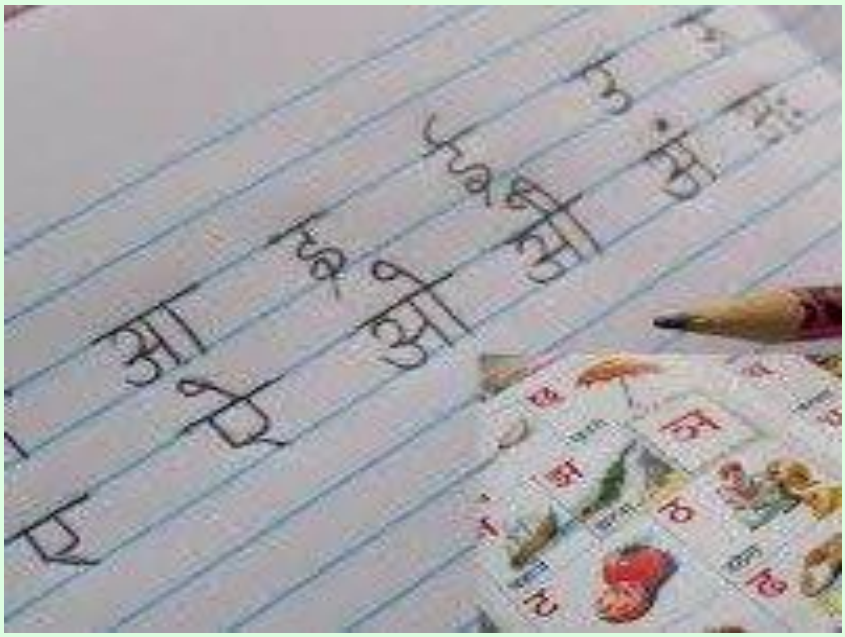

****

- हिन्दी है भारत के एकता और अखंडता की पहचान
  हिन्दी ही तो है मेरे भारत की जान
- जब भारत करेगा हिन्दी का सम्मान
  तभी तो आगे बढ़ेगा हिन्दुस्तान
- हिन्दी है भारत की आशा
  हिन्दी है भारत की भाषा
- हर भारतीय की शक्ति है हिन्दी
  एक सहज अभिव्यक्ति है हिन्दी

घोर अमावस की रातों में

डॉ. चन्द्रकांत दीक्षित, वैज्ञानिक 'ख'

प्रथम पुरस्कार , वर्ष 2013

घोर अमावस की रातों में, मैं दीवाली खोज रहा हूँ |
शहर पत्थरों का है लेकिन, मैं हरियाली खोज रहा हूँ ||

क्या जाने सूखे बादल में, कोई अमृत कण मिल जाये |
दिशा बदल दे जो जीवन की, ऐसा कोई क्षण मिल जाये ||
अमृत जिसमें भरकर पी लूँ, ऐसी प्याली खोज रहा हूँ
घोर अमावस की रातों में, मैं दीवाली खोज रहा हूँ

ऊँचे महल रहन वालों में, कुछ दिल वाले भी मिलते हैं |
भटकाने वाले रस्तों में, मंजिल वाले भी मिलते हैं ||
जाम लगी सड़कों पर मैं तो रस्ता खाली खोज रहा हूँ
घोर अमावस की रातों में मैं दीवाली खोज रहा हूँ

तेज हवा के झोंको में भी, कुछ पत्ते तो रह जाते हैं |
कठिनाई में कैसे जीना, ये संदेशा कह जाते हैं ||
आंधी तूफानों में मैं तो रुत मतवाली खोज रहा हूँ
घोर अमावस की रातों में मैं दीवाली खोज रहा हूँ

मुंदी मुंदी सोती आँखों में, मीठे कुछ सपने भी होंगे |
गैर नहीं हैं सब दुनिया में, ढूढों कुछ अपने भी होंगे ||
अपनों को पहचान सकूँ मैं, अब कंगाली खोज रहा हूँ
घोर अमावस की रातों में मैं दीवाली खोज रहा हूँ

चाहे बंजर धरती हो पर, कुछ अंकुर जीवन के होंगे |
लिपटे हों विषधर तो क्या है, पेड़ तो वो चन्दन के होंगे ||
महका दे जीवन की बगिया ऐसा माली खोज रहा हूँ
घोर अमावस की रातों में मैं दीवाली खोज रहा हूँ

"हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है"
विलियम केरी

माँ-गंगा, पिता-हिमालय

श्री श्रीराम शाह, वरिष्ठ लिपिक
प्रोत्साहन पुरस्कार, वर्ष 2013

गंगा मेरी माँ, पिता हिम हिम्मतवाला
मईया मेरी तरण-तारणी
पिता रक्षा करनेवाला
गंगा मेरी माँ
पिता हिम हिम्मतवाला

मईया मेरी पतित-पावनी
पिता आशीष देनेवाला
मईया प्यास बुझानेवाली
पिता बूटी देनेवाला
गंगा मेरी माँ
पिता हिम हिम्मतवाला

भागीरथ भाग्य बहानेवाले
मोदी अविरल कहनेवाला
मईया की है स्वच्छ चुनरी
पिता हिम मुकुटवाला
गंगा मेरी माँ
पिता हिम हिम्मतवाला

कल-कल है मईया की धारा
पिता वर्षा करने वाला
शिव की है यह महिमा सारी
भक्त भजन करनेवाला
गंगा मेरी माँ
पिता हिम हिम्मतवाला

मईया की धारा साफ रखूंगा
सेवक पुत्र कहनेवाला
जनमानस की रक्षा करने में
रक्त दान देनेवाला
गंगा मेरी माँ
पिता हिम हिम्मतवाला

राम की महिमा सब पर होवे
भारत वतन कहनेवाला
गंगा मेरी माँ
पिता हिम हिम्मतवाला

"हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है" महात्मा गांधी

हिन्दी भाषा, चुनौतियां तथा निदान

श्रीमती रंजना सक्सेना, अ.श्रे. लिपिक

प्रथम पुरस्कार, वर्ष 2014

हिंदी हमारी मातृभाषा है। यह विश्व में सर्वाधिक प्रचलित भाषाओं में दूसरे स्थान पर है । जैसा कि विदित है कि हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन में सम्पूर्ण भारत वर्ष के लोगों में सम्पर्क सूत्र के रुप में महती भूमिका निभाई थी। अतः संविधान निर्मात्री सभा ने इसकी महत्ता को स्वीकार करते हुए 14 सितम्बर 1949 को हिंदी भाषा को 'राजभाषा' के रुप में स्थापित किया जिसके अनुसार शासकीय प्रयोजनों में हिंदी हमारी राजभाषा होगी एवं इसकी लिपि देवनागरी होगी।

हिंदी को राजभाषा बनाये जाने के साथ-साथ सम्पूर्ण भारतवर्ष के समस्त प्रान्तों में प्रान्तीय भाषाओं का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इस संबंध में श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर की निम्न पंक्तियां हिंदी के गौरव के साथ-साथ प्रांतीय भाषाओं के सम्मान की सूचक हैं-

'मैं चाहता हू कि सभी प्रांतीय भाषाएं अपने घरों में रानी बनकर रहें एवं राजभाषा हिंदी मणिकर्णिका बनकर भारत-भारती के रुप में सदा विराजती रहे।'

यहां यह उद्धृत करते हुए मुझे खेद का अनुभव हो रहा है कि वर्तमान समय में राजभाषा हिंदी को वह सम्मान नहीं मिल पा रहा है जो उसे मिलना चाहिए। हमारी युवा पीढ़ी जो कल का भविष्य है, हिंदी के प्रयोग में हिचकिचाने लगी है। उसका कारण यह है कि विश्व पटल पर अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व कायम है। आज के माता-पिता अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हें अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में शिक्षा दिलवाते हैं जहां हिंदी बोलने पर जुर्माना (फाइन) लगाया जाता है । इस कारण बच्चे केवल अंग्रेजी भाषा पर ही ध्यान देते हैं तथा हिंदी भाषा पर उनकी पकड़ छूटती जा रही है। बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में पढ़वाने के पीछे माता पिता का यही विचार होता है कि बड़े होकर उनके बच्चे प्रतिस्पर्धा के इस दौर में आगे निकल कर आर्थिक रुप से मजबूत बन सकेंगे क्योंकि अधिकांश प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं एवं मौखिक परीक्षाओं में अंग्रेजी पर अधिक महत्व दिया जाता है तथा हिंदी बोलने वाले परीक्षार्थिओं को कमतर आंका जाता है।

वर्तमान समय में अंग्रेजी के प्रयोग के चलते आज की युवा पीढी का माँ को 'मॉम' व पिताजी को 'डेड' कहते सुनना एक आम व निराशाजनक बात है।

इसके साथ ही उच्चतर शिक्षा की अधिकाँश पाठ्य सामग्री अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध होती है। यहां हम अंग्रेजी भाषा का विरोध नहीं कर रहे हैं क्योकि ज्ञान चाहें किसी भी भाषा में प्राप्त किया गया हो ज्ञान, ज्ञान ही होता है परन्तु उस ज्ञान को सभी देशों से ग्रहण करके उसका प्रचार यदि अपनी भाषा में किया जाये तो हमारे देश का प्रत्येक नागरिक चाहे वह उच्च स्तर का हो, या निम्न स्तर का, समान रुप में लाभाविन्त हो सकेगा।

इसके साथ ही 'हिंदी राजभाषा' के उत्थान के लिए उसके रास्ते में आने वाली कठिनाईयों को दूर करने के लिए हमारे राजनेताओं द्वारा शुरु से ही प्रयास किये गये हैं और जिनका पालन सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार के अधीन गृह मंत्रालय के अन्तर्गत 'राजभाषा विभाग' बनाया गया है जो राजभाषा के प्रचार प्रसार हेतु समय-समय पर अनेक नियम लागू करने के साथ-साथ उनका अनुपालन भी सुनिश्चित करवाता है।

केन्द्रीय कार्यालयों के साथ-साथ राजकीय कार्यालयों में भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु अनेक योजनाएं लागू की गयी है जिनके अंतर्गत कार्यालय का सभी सरकारी कार्य राजभाषा हिंदी में किया जाना अनिवार्य किया गया है किन्तु इसके लिए किसी दण्ड का प्रावधान नहीं किया गया है। केवल प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई हैं जिनके माध्यम से कार्यालयों के सदस्यों में राजभाषा में कार्य करने की प्रेरणा का संचार किया जाता है।

इस विषय में मेरा यही मानना है कि जब हम सभी लोग स्वेच्छा पूर्वक अपनी राजभाषा का सम्मान करेंगे और शतप्रतिशत अपने कार्यों में इसका प्रयोग करेंगे तभी हम राजभाषा को उसका वास्तविक सम्मान दिला सकेंगे और अपने देश की उन्नति में सहायक बनेंगे क्योंकि जैसा कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा है-

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।

बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।।'

इसके साथ ही हम अपनी भावी पीढ़ी को अपनी मातृभाषा, राजभाषा का आदर करना सिखायें उन्हें साधारण वार्तालाप में हिंदी का प्रयोग करना सिखायें जिससे हमारी युवा पीढ़ी भी राजभाषा के विस्तृत शब्द भण्डार, वर्तनी, व्याकरण आदि में पारंगत हो सके, उसे समझ सके, उसका सही प्रयोग सीख सकें।

इसके साथ ही सभी विद्यालयों में राजभाषा (हिंदी) विषय को अनिवार्य किया जाना चाहिए चाहे वो विद्यालय अंग्रेजी माध्यम का ही विद्यालय क्यों न हो । ऐसा करने से हमारी युवा पीढ़ी व हमारे बच्चे हिंदी भाषा को अच्छी तरह समझने के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी सीख सकेंगे। क्योंकि हिंदी ही एक ऐसा विषय है जिसमें तुलसीदास जी व कबीरदास जी के दोहे, सूक्तियां इत्यादि पढायी जाती हैं जिनके द्वारा बच्चे चारित्रिक विशेषताओं के साथ-साथ अन्य अच्छे संस्कार भी सीखते हैं।

निष्कर्ष में यही कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में जहाँ विश्व बहुत शीघ्रता से उन्नति कर रहा है, तकनीकी क्षेत्र आज बहुत तेजी से विकसित हो रहा है, जहाँ अंग्रेजी में सम्प्रेषण करना आसान होता जा रहा है, वहीं यदि हम सच्चे दिल व ईमानदारी से प्रयास करें तो हम अपनी राजभाषा को उन्नति के शिखर पर ले जा सकते हैं क्योकि तकनीकी क्षेत्र में कम्प्यूटर इत्यादि में आज हिंदी में भी सम्प्रेषण किया जा सकता है। हिंदी में आज संक्षिप्तीकरण आसान हो गया है जो पहले अंग्रेजी भाषा का धरोहर माना जाता था। जैसे 'नराकास' नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, संक्षप्तिकरण का एक सटीक उदाहरण है।

हम सब यदि स्वेच्छापूर्वक पूरी लगन से 'हिंदी' का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे तथा दूसरों को भी राजभाषा के प्रयोग एवं प्रचार के लिए प्रोत्साहित करेंगे तो ऐसी कोई भी कठिनाई या चुनौतियां नहीं हैं जो हमारी राजभाषा के विकास के मार्ग में बाधक बने । राजभाषा का राष्ट्रभाषा बनना सहज और सम्भव हो सकता है क्योंकि यह कहा गया है -

'जहाँ चाह है वहाँ राह है।'

हिन्दी भाषा, चुनौतियां तथा निदान

श्री बी.एम.सिंह, वरिष्ठ तकनीशियन

द्वितीय पुरस्कार, वर्ष 2014

हिन्दी भाषा - चुनौतियां तथा निदान वास्तव में एक अर्थपूर्ण विषय है, निश्चित रुप से आजकल हिंदी भाषा के विकास व प्रचार-प्रसार में अत्याधिक चुनौतियां है, साथ ही साथ उनका निदान भी आवश्यक है। समर्पण भावना की आवश्यकता होने की जब चुनौतियाँ है तो उनका निदान भी अवश्य ही होगा। इस विषय को विस्तृत रुप से वर्णित करने हेतु निम्नलिखित रुपरेखा के माध्यम से प्रारम्भ करते हैं।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में अभाव

प्रायः यह देखा गया है कि हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार मात्र हिन्दी पखवाडों, हिन्दी दिवस आदि के अवसर पर ही प्रभावी होता है। अतः हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार एक बडी चुनौती है। जिसके कारण हिन्दी भाषा अन्य भाषा के मुकाबले पिछली कतार पर खड़ी नजर आती है। प्रचार-प्रसार में अभाव का निदान भी निश्चित रुप से है | हिन्दी भाषा के प्रचार - प्रसार का कार्यक्रम निरन्तर जारी रहना चाहिये, चाहे वो प्रिन्ट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया या अभियान चला कर हो। प्रचार - प्रसार को रुचिपूर्ण तरह से प्रस्तुत किया जाये। जिससे सभी इसका दिल से अनुसरण कर सके व अपने प्रयोग में ला सकें ।

कान्वेन्ट स्कूलों की अधिकता

आजकल देश में कान्वेन्ट स्कूलों की अधिकता होने के कारण हिन्दी भाषा विलुप्त सी होती जा रही है चुंकि कान्वेन्ट स्कूलो का माध्यम अँग्रेजी होता है और हिन्दी विषय को औपचारिकता के तौर पर लिया जाता है, अतः यह चुनौती हिन्दी भाषा के सामने बड़ी चुनौती है। इस चुनौती का निदान भी है सभी को अपने बच्चों को स्कूलों के अतिरिक्त अपने घर में हिन्दी भाषा के बारे में व उसकी महत्ता का समुचित ज्ञान देना चाहिये साथ ही बताना चाहिये कि वे स्कूल जाकर हिन्दी विषय को महज औपचारिक विषय न समझें । बच्चों से बोलचाल का माध्यम अधिकाधिक हिन्दी में रखें व उन्हें बतायें कि अपनी भाषा को बोलने में मन में आनन्द की अनुभूति होती है।

तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दों का अभाव

हिन्दी भाषा के प्रयोग में वैज्ञानिक / तकनीकी शब्दों की प्रचुरता न होने के कारण भी व्यक्ति हिन्दी भाषा का प्रयोग करने में असहज महसूस करते हैं व अपने कार्य अंग्रेजी में करते है। यह चुनौती भी हिंदी भाषा को आगे बढने से रोकती है। इसका निदान भी हम सभी के पास है वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली, शब्दकोष उपलब्ध है आजकल तो इन्टरनेट व हिन्दी साफ्टवेयर के माध्यम से इस चुनौती से निपटा जा सकता है।

संकोच व शर्म की भावना होना

यह एक चुनौती है भी और नहीं भी क्योंकि सिर्फ आत्ममंथन की जरुरत है। प्रायः यह देखने में आता है लोगों के अन्दर शर्म व संकोच की भावना होने के कारण वह जानते हुए भी हिन्दी भाषा का प्रयोग करने से कतराते हैं व हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में चुनौती खड़ी करते हैं | इस चुनौती का भी निदान है, लोगों को दपर्ण के सामने आपस में बातचीत करके अपनी संकोच व शर्म की भावना को दूर करना चाहिये |

हिंदी भाषा को प्रयोग करते समय गर्व होना चाहिए कि हमारे पूर्वज चाहे वो विवेकानन्द हो या अन्य सभी ने हिन्दी भाषा का प्रयोग करके देश को गौरवान्वित किया है ।

उपलब्ध संसाधनो का अभाव होना

हिन्दी भाषा के लिये उपलब्ध संसाधनों का अभाव है जैसे कार्यालयों में हिन्दी साहित्य, पुस्तकालय, तकनीकी शब्दकोष आदि प्रायः नहीं होते हैं व महापुरुषों पर हिन्दी में लिखी किताबें, हिन्दी समाचार पत्र प्रचुर मात्रा में न होने से हिन्दी भाषा के सही रुप से प्रचार - प्रसार होने में चुनौती आती है। अतः इसके निदान के लिये उपर्युक्त संसाधनों की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता होनी चाहिये व रुचिपूर्ण पुस्तकें भी होनी चाहिये।

इन्टरनेट व इलेक्ट्रानिक वस्तुओं का प्रचलन होना

इन्टरनेट व इलेक्ट्रानिक वस्तुओं जैसे मोबाइल, टेबलेट आदि के प्रचलित होने से हिन्दी भाषा के सामने एक बड़ी चुनौती खड़ी हो गयी है चुंकि सभी इनका अधिकांश उपयोग अँग्रेजी में करते है। इसका भी निदान है आजकल उपर्युक्त उपकरणों में अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी का भी साफ्टवेयर पड़ा होता है जो कि बहुत सरल व उपयोगी है अतः आधुनिकता के दौर में भी आप इन्टरनेट, मोबाइल आदि पर उसको प्रयोग करके हिन्दी भाषा में कार्य कर इस चुनौती का सामना कर सकते है।

प्रांरम्भ से ही बच्चों में हिन्दी भाषा के लिये लगाव न होना

आजकल प्रारम्भ से ही बच्चो में हिंदी भाषा के प्रति लगाव नही होता है चूँकि वे इसे पिछडी व गाँव की भाषा समझते हैं जिससे वे बड़े होने तक इसे मन से ग्रहण नही कर पाते हैं । इस चुनौती का भी निदान यह है कि घरों में बच्चों से शुरुआत से ही बातचीत का माध्यम हिन्दी में रखें व उन्हें बतायें कि हमारी संस्कृति हिन्दी भाषा में ही निहित है।

हिन्दी भाषा को उचित सम्मान न मिलना

यह भी एक बड़ी चुनौती है। इसका निदान यह है कि सभी जगह अपनी भाषा को संस्कृति से जोड़कर लोगों को समझायें व बतायें। हिन्दी भाषा में सभी कार्यालयों में भाषण, साक्षात्कार आदि होने चाहिये ताकि भाषा को उचित सम्मान प्राप्त हो और चुनौती का हल हो।

राष्ट्रीय स्तर पर गोष्ठी - सम्मेलनों का अभाव होना

इस चुनौती का हल है कि गोष्ठी सम्मेलन अधिक से अधिक हिंदी भाषा में होने चाहिये ताकि इस चुनौती का सामना किया जा सके।

****

- **हिन्दी है भारत के एकता और अखंडता की पहचान**
  हिन्दी ही तो है मेरे भारत की जान
- **जब तक हिन्दी नहीं बनेगी, गरीबों की शक्ति**
  तब तक देश को नहीं मिलेगी, गरीबी से मुक्ति
- **हिन्दी ने देश को जोड़े रखा है**
  हमारे मतभेदों को तोड़े रखा है
- **हर दिन नया विहान है हिन्दी**
  मेरे हिन्द की प्राण है हिन्दी

हिन्दी भाषा, चुनौतियां तथा निदान

श्री आर.डी. पाटिल, वैज्ञानिक 'ग'

तृतीय पुरस्कार, वर्ष 2014

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। क्या वास्तव में हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा है ? राष्ट्रभाषा का मतलब है, राष्ट्र की भाषा। भारतवर्ष में ज्यादातर लोग हिंदी बोलते हैं तथा हिन्दी बहुसंख्य लोगों के लिये विचारों के आदान-प्रदान की भाषा है। किन्तु इस राष्ट्रभाषा की दिन पर दिन जो दुर्दशा होती जा रही है, ऐसे समय में यह सवाल मन में उठना कि क्या सच में हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा है ? यह सवाल स्वाभाविक है।

आज के इस कलयुग में, इन्सान स्नेह, प्यार, अपनापन यह लब्ज जैसे भूल गया है। ऐसे समय में हिन्दी की भारतवर्ष के विकास, स्वतंत्रता की लडाई में भूमिका को यदि कोई याद करता हो तो वो किसी अजूबे से कम नही है। आज हिन्दी के इन एहसानों को याद करने के लिये प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस मनाना उतना ही जायज है, जितना जायज आज के युग में Mother's day, Father's day एवं पर्यावरण दिवस मनाना है।

अब घूम फिर के एक ही सवाल आता है कि यदि हिन्दी भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा है तो उसका उचित विकास क्यों नहीं हुआ ? विकास होने के बजाय इस भाषा की दुर्दशा क्यों होती जा रही है। ऐसी अनगिनत चुनौतियों में से कुछ चुनौतियां तथा उनके निदान निम्नानुसार है।

1-मातृभाषा बनाम राष्ट्रभाषाः भारत जैसे विशाल देश में अनेक भाषायें बोली जाती हैं । हर एक राज्य की अपनी मातृ भाषा है तथा संबंधित राज्यों की सरकारें अपनें राज्य की मातृभाषा में कामकाज करना पसंद करती है, ताकि उस राज्य की सामान्य जन उसको समझ सकें। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि हिन्दी को किसी प्रांतीय भाषा से खतरा नहीं है । किन्तु किसी भी दो प्रांतों के बीच होने वाले वैचारिक आदान प्रदान के लिये, हिन्दी का समुचित उपयोग अनिवार्य होना चाहिए, जो कि अक्सर अंग्रेजी में ही किया जाता है। प्रांतीय भाषा (जो कि उस प्रांत की मातृ भाषा हो) उसके बाद हिंदी को वरीयता मिलनी चाहिए। अक्सर राष्ट्रभाषा का हक अंग्रेजी छीन ले जाती है। अतः हिन्दी को चुनौती किसी प्रांतीय भाषा के बाद हिन्दी के बजाय अंग्रेजी को वरीयता देने से है।

2-इलेक्ट्रानिक क्षेत्र में हिन्दी: आज का युग सूचना (आई. टी.) का युग है, और यदि कोई भाषा आई. टी. के उपकरणों में उपयोग करने हेतु सरल ना हो, तो उसका विकास होना कठिन है। आई.टी. के उपकारणों में व्यापार करने हेतु सरलता के कारण आज अंग्रेजी का इतना विकास होना संभव हो पाया है। तथा हिंदी के संवाद भी अंग्रेजी में टाइप करके भेजे जाते है।

इस समस्या के निदान हेतु राजभाषा साफ्टवेयर तथा बहुभाषी की बोर्ड आदि का उपयोग किया जा रहा है। इन साफ्टवेयर / कीबोर्ड के उपयोग से हिन्दी टाइप करना काफी हद तक आसान एवं सरल किया गया है। किन्तु और अत्यधिक प्रोत्साहन के लिये आई. टी. उपकरणों में ऐसे इन्टरफेस का विकास करना पड़ेगा जिससे कि हिंदी बेहद आसानी से आई. टी. संसाधनो पर टाइप की जा सके ।

3-संवाद में हिन्दी: आज के समाज में अंग्रेजी बोलने वाले को उच्च / ज्ञानी समझा जाता है तथा हिन्दी बोलने वाले को पिछडा/गंवार समझा जाता है । जब तक इस समाज में यह मानसिकता ना आये कि आदमी की पहचान उसके ज्ञान से करनी चाहिये ना कि भाषा से, तब तक राष्ट्रभाषा में संवाद रखने वाले ज्ञानी भी दिन

ब दिन पिछडते जायेंगे। इस भारतवर्ष में भाषा के बजाय ज्ञान के कारण अत्यधिक सफलता पाने वाले उदाहरणों के साथ, अगर समाज में इस विषय पर जागृति की जाये, तो समाज की यह मानसिकता बदलने में वक्त नहीं लगेगा।

सामाजिक जीवन में उच्च पदों पर बैठे सम्मानित गण यदि हिंदी को अपने संवाद की मुख्य भाषा बनाये, तो समाज की मानसिकता में जल्द बदलाव की संभावना है।

4-तकनीकी क्षेत्र में हिंदी: कोई तकनीकी विषय हिन्दी में बयान करना शायद सबसे कठिन काम है। यह इसलिये है क्योंकि भारतवर्ष में तकनीकी शिक्षा केवल अंग्रेजी में उपलब्ध है। जिसके कारण किसी भी तकनीकी शब्द का हिंदी में पर्यायवाची शब्द ढूंढना महा कठिन कार्य लगता है। यदि तकनीकी शिक्षा को हिन्दी में उपलब्ध कराया जाये तथा उसको बढावा दिया जाये तो इस चुनौती को भी आसानी से पार किया जा सकता है।

ऐसी अगणित चुनौतियों के बावजूद हिंदी के विकास को दुर्लक्षित नहीं किया जा सकता है। आज कई सारे समाचार (News) एवं खेल (Sports) चैनल को हिंदी में प्रसारित किया जाता है क्योंकि उनको देखने वाले लोगों की संख्या अन्य किसी भी भाषा से कई गुना अधिक है। आज भारत के प्रधानमंत्री अन्य देशों में जाकर हिंदी में संवाद करने का जज्बा रखते है, तो हिंदी भाषा का विकास आने वाले समय में निश्चित लगता है ।

****

- हिन्दी का पतन भारत का पतन है
- निज भाषा का जो नहीं करते सम्मान
  वे कहीं नहीं पाते हैं सम्मान
- हिन्दी के बिना न तो आजादी पाई जा सकती थी
  और न तो हिन्दी के बिना आजादी बरकरार रह सकती है
- भारत के गाँवों और कस्बों की भाषा है हिन्दी
  शहरों और गाँवों की ताकत है हिन्दी

चलो जलाएं एक दिया हम

डॉ. चन्द्रकांत दीक्षित, वैज्ञानिक 'ख'
प्रथम पुरस्कार, वर्ष 2014

चलो जलाएं एक दिया हम, और अँधेरा कम कर लें
हरियाली ही हरियाली हो, कुछ ऐसा मौसम कर लें
चलो जलाएं एक दिया हम, और अँधेरा कम कर लें

कुछ कठिनाई, हर जीवन में
कुछ तो दुःख है, सबके मन में
सूरज को भी ढकने वाले
बादल मिलते नील गगन में
आओ बांटे दर्द किसी का, आंखे अपनी नम कर लें
चलो जलाएं एक दिया हम, और अँधेरा कम कर लें

लोग बटें हैं, धर्म जात में
करें लड़ाई, बात बात में
जाने क्यूँ चलना ना चाहें
मिलजुल कर ये एक साथ में
ऊँच नीच का भेद मिटा कर, आओ सबको सम कर लें
चलो जलाएं एक दिया हम, और अँधेरा कम कर लें

धुआं धरा के, दम को रोके
मंद हुए, शीतल से झोंके
अब बरखा में बस तन भीगे
जाती थी जो मन को भिगोके
बरखा में फिर से मन भीगे, ऐसा ऋतू संगम कर लें

आओ सब संकल्प करें और ये वसुधा उत्तम कर लें
चलो जलाएं एक दिया हम, और अँधेरा कम कर लें

पर्यावरण है ये.....

डॉ. पूनम पाण्डेय, रिसर्च एसोसिएट
द्वितीय पुरस्कार, वर्ष 2014

परी का ये आवरण,
पर्यावरण है ये..
इसे भी आप,
परी जैसा ही सजाइये...

ये ज्ञान है, विज्ञान है..
वेद है, कुरान है...
इसे आप पढ़िए और,
दुनिया को पढाइए....

परी के आंचल में,
अब लग रहा दाग है..
जिसका एक नमूना,
इसका बढ़ रहा ताप है..

प्रदूषण है खरदूषण,
इसे अब रोकिये...
और स्वच्छ वातावरण,
धरा पे बनाइए.....

परी का ये आवरण,
पर्यावरण है ये..
इसे भी आप,
परी जैसा ही सजाइये...

क़ानून ऐसा चाहिए,
कि तोड़ने से पहले सोचें...
बाद में पछताने का,
प्रावधान नहीं चाहिए...

संगोष्ठियाँ होती है,
सालों से इसी पर...
अब उनपे भी,
अमल होना चाहिए.....

परी का ये आवरण,
पर्यावरण है ये..
इसे भी आप,
परी जैसा ही सजाइये...
परी जैसा ही सजाए...

न्यूक्लियर से क्लियर कर,
धरती ये अपनी..
आने वाली जनरेशन को,
गिफ्ट कर जाइये..

अंत में कर रही,
“पूनम” ये विनती...
घर जाकर एक,
पौधा तो लगाइए...

परी का ये आवरण,
पर्यावरण है ये..
इसे भी आप,
परी जैसा ही सजाइये...

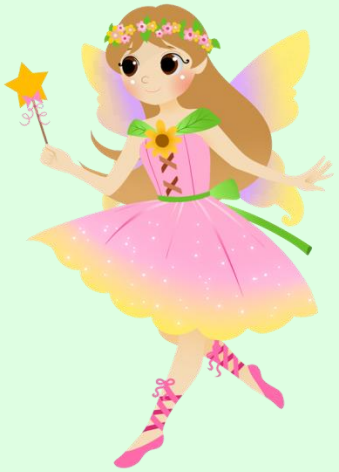

“ हिंदी आम बोलचाल की 'महाभाषा' है”
जॉर्ज ग्रियर्सन

विश्व मंच पर हिंदी की स्वीकार्यता

श्री श्रीराम शाह, वरिष्ठ लिपिक
प्रथम पुरस्कार, वर्ष 2015

प्रस्तावनाः- किसी भी देश को स्वतंत्र राष्ट्र कहलाने के लिए निम्नलिखित का होना आवश्यक होता हैः-

क) देश की अपनी भाषा

ख) अपनी सरकार

ग) अपनी भूमि

घ) अपनी सम्प्रभुता

भारत देश की अपनी भाषा (राष्ट्रीय भाषा) हिंदी है जिसकी लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि में जो बोली जाती है वही लिखी जाती है।

विशेषताः-

क) हिंदी हमारी राज भाषा है

ख) हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है

ग) हिंदी हमारी राज्य भाषा है

घ) हिंदी भारत के बाहुल्य क्षेत्रों में सबसे अधिक लिखी जाने वाली एवं बोली जाने वाली भाषा है। इसलिये संविधान (भारत के संविधान) में इसे राज भाषा का दर्जा प्राप्त है।

देश का विकासः- किसी भी देश का सर्वांगीण विकास उस देश की अपनी भाषा पर आधारित होता है। अतः अपने देश की भाषा पूर्णरूप से पल्लवित, पुष्पित होनी चाहिए तब जाकर देश पल्लवित होगा।

संविधानः- हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व बनाने के लिए, समस्त नागरिकों को सम्पूर्ण प्रभुत्व तथा भाषा को देश की गरिमा बढ़ाने के लिए समर्पित होते हुए आत्मार्पित करते हैं।

विद्वानों का कथनः

1) निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल

2) अपनी भाषा अपना देश, अपनी संस्कृति अपना वेश

3) साज सहज सुखों का सार, सादा जीवन उच्च विचार

4) पराधीन सपनेहू सुख नाहीं करू विचार देखो मनमाही।

भाषा का महत्वः- आज की तिथि में जिस रफ़्तार से हिंदी भाषा का विकास देश के अंदर या देश के बाहर (विदेशों में) हो रहा है, इससे यह लगता है कि हिंदी अब विश्व की भाषा बनकर रहेगी। इसके महत्व को भारत का हरेक नागरिक जानता है। इतः इस भाषा को अधिक मात्रा में बोला जाता है, लिखा जाता है, पढ़ा जाता है या अपने विचारों का आदान-प्रदान किया जाता है।

हिंदी के बढ़ते चरण एक छोटी कविता के रूप में:-

किसी के रोके न रूकेगी,
हिंदी के बढ़ते चरण
रस-ताल छंद रंग-राग संग,
जीती है इसी ने रण जंग
हुआ फिरंगी का मोह भंग,
इतनी है यह तीव्रगामी
जैसे सूरज की किरण
किसी के रोके ना रूकेगी
हिंदी के बढ़ते चरण।
आओ इसकी गान गावें
गान गावें शान बढावें
जग में जननी
स्वर का मान बढावें
जग चूमेगा इसके चरण
किसी के रोके ना रूकेगी
हिंदी के बढ़ते चरण।।

देश मंच पर हिंदी की स्वीकार्यता:- विश्व मंच की श्रेणी में भारत देश भी एक विशाल देश है। विश्व स्तर पर भारत देश जनसंख्या के रूप में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। जहाँ सबसे अधिक मात्रा में हिंदी लिखी जाती है, बोली जाती है। भारत का नागरिक वस्तुतः विश्व के सभी देशों में बसा हुआ है या जीविकोपार्जन हेतु फैला हुआ है, जो हिंदी को दिल से चाहता है। जब इस देश का कोई भी नेता विश्व के दौरे पर जाता है जो हिंदी से ताल्लुक रखने वालों की तादाद एकत्रित होकर हिंदी की स्वीकार्यता की पहचान दे देती है।

विश्व मंच पर स्वीकार्यता के लिए सरकार की नीति:- सरकार की नीति है कि हिंदी को विश्व की भाषा का दर्जा दिलाया जाये। इस क्षेत्र में सरकारी तंत्र अपना कार्य कर रहा है। पहले से कुछ हद तक सफलता भी मिल चुकी है। विदेश मंत्रालय विभाग, केंद्र सरकार, प्रधान मंत्री, विदेश मंत्री का विदेशी दौरा करते हुए दिनों दिन प्रयास है कि हिंदी को विश्व मंच पर स्वीकार्यता दिलायी जाये। जहाँ तक संभव होता है विदेश मंत्री या प्रधान मंत्री द्वारा विदेशों में हिंदी में भाषण दिया जाता है। हिंदी भाषण के दौरान (विदेशों में) जन सैलाब को देख कर यह आंकलन किया जा सकता है कि इसकी लोकप्रियता बढ़ रही है, जो हिंदी की स्वीकार्यता का परिचायक है।

इसके लिए भारत के सभी राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टियों का सहयोग होना चाहिए। हिंदी सबके विचार, भाव, (सद्भाव) एवं सहयोग से फल-फूल सकती है। अतः विश्व मंच पर हिंदी की जय हो।

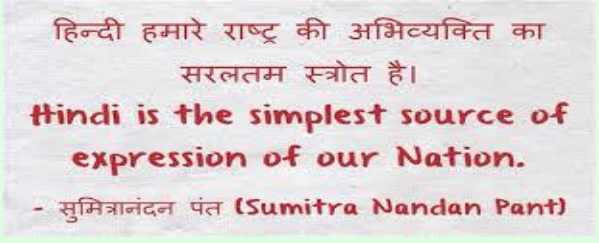

विश्व मंच पर हिंदी की स्वीकार्यता

श्री जे.पी. मीणा, वैज्ञानिक 'ग'

द्वितीय पुरस्कार, वर्ष 2015

हमारे देश की राजभाषा हिन्दी व लिपि देवनागरी को अपनाया गया है, राज भाषा हिन्दी को आजादी से पूर्व हिन्दुस्तानी भाषा या हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का विचार मंथन हुआ इसके उपरांत दास टंडन और अन्य राजनीतिज्ञों एवं अन्य महान हिन्दी साहित्यकारों ने हिन्दी को ही राष्ट्र भाषा के रूप में अपनाने पर जोर दिया। भाषा किसी भी राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम करती है। हम तभी से लेकर आज तक 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस मनाते हैं।

हिन्दी के बारे में पुराने लेखों और साहित्य से पता चलता है प्राचीन काल में भारत के लोगों के व्यवहार तथा आम जन की भाषा हिन्दी के ही प्रमाण मिलते हैं। हमारे देश में गुलामी से पूर्व राजाओं द्वारा या इस काल के अन्य लोग पत्र व्यवहार में हिन्दी का ही उपयोग करते हैं। हिन्दी भाषा विश्व की सभी भाषाओं से श्रेष्ठ हैं तथा इसका शब्दकोश बहुत विस्तृत है। भाषा किसी भी राष्ट्र के विकास में अहम योगदान देती है। यह महान संस्कृति, सामाजिक तथा वेदों के कारण ही तो भारत आदि काल में विश्व गुरू कहलाया और भारत के इतिहास को विश्व की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करके इसका अध्ययन किया कि प्राचीन सभ्यता भारत में बसती है और इससे विश्व में क्रमागत बदलाव आये हैं। भारतीय संघ मे 29 राज्य व 7 केन्द्र शासित प्रदेश है तथा विभिन्न राज्यों मे अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं फिर संघ की राजभाषा हिन्दी ही है भाषा किसी भी राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने में सहायक है जिससे अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं। हमारे देश मे अँग्रेजी शासन के बाद से अँग्रेजी का बोलवाला बढ़ा और हिन्दी आज असहाय के रूप मे आ गयी है, उसका मुख्य कारण है कि आजादी के बाद कॉंग्रेस और मुस्लिम लीग ने यह तय किया था कि 10 वर्षों बाद लोक सभा, राज्य सभा तथा न्यायालयों में हिन्दी में कार्य किया जायेगा लेकिन पाकिस्तान के अलग होने से मुस्लिम लीग हिन्दी सभा से बाहर हो गयी और धारा व अनुच्छेद के अनुपालन मे नरमी बरती गयी जिसके कारण हिन्दी हाशिए पर चली गयी है।

भाषा का राष्ट्र विकास मे योगदानः- भाषा किसी भी राष्ट्र के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, आज हम विश्व को दो भागों में विभाजित देखते है एक विकासशील तथा दूसरा विकसित राष्ट्र इसका आशय यह है कि जो राष्ट्र अपनी मातृभाषा में राजकाज, अध्ययन, अनुसंधान कर रहे हैं वे विकसित राष्ट्र की श्रेणी में खड़े हैं तथा जो राष्ट्र अपनी मातृभाषा में राज-काज, अध्ययन, अनुसंधान आदि नहीं कर रहे वे विकासशील देशों की श्रेणी में हैं। आज हमारे देश में देखते हैं प्रारंभ से 12वीं तक हिंदी में पढ़ाई होती है और उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए हमें अंग्रेजी में अध्ययन करना पड़ता है जिसके परिणाम स्वरूप एक हिंदी भाषी युवा अपनी उर्जा का 60 प्रतिशत उस भाषा को सीखने में खर्च करता है और 40 प्रतिशत अपने अध्ययन में खर्च करता है जिसके परिणाम स्वरूप वह राष्ट्र के निर्माण में अपनी शत प्रतिशत भूमिका नहीं दे पाता और हम तकनीकी एवं चिकित्सा के क्षेत्र में पिछड़ जाते हैं, वहीं विकसित देशों जहाँ पर अपनी भाषा में उच्चतर शिक्षा के लिए व्यवस्था है वहाँ पर युवा अपना शत प्रतिशत समय उसमें लगाता है जिसके परिणाम स्वरूप वह राष्ट्र हमेशा अपनी उन्नति एवं प्रगति में आगे रहते हैं और विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में खड़े हैं। उदाहरण स्वरूप आज हम अपने पड़ोसी देश चीन को देखते हैं कि वहाँ 150 विभिन्न भाषाएँ बोलीं जाती हैं लेकिन वहाँ राष्ट्रभाषा मंदारिन है और उच्चतर शिक्षा में भी अध्ययन की व्यवस्था मंदारिन में है, इस कारण आज वह विश्व में महाशक्ति के रूप में उभर रहा है और हमारे देश में विश्व का 65 प्रतिशत युवा होने के बावजूद

आज हम उस स्थान तक नहीं पहुँच रहे हैं इसका कारण है कि हमारे यहाँ पर भाषा को लेकर बड़ी द्वंदता है, जो राष्ट्र के विकास में बाधक बनी हुई है। आज हम संसद में होने वाली चर्चाओं में देखते हैं कि हमारे राजनेता वोट माँगने के लिए क्षेत्रों में देसी व हिंदी भाषा बोलते हैं लेकिन संसद में पहुँच कर वही अंग्रेजी में बात करते हैं। आज जो हिंदी का स्थान है वही यूरोप में अंग्रेजी की दशा थी परंतु उन्होंने अपनी भाषा को बढ़ाने के लिए प्रयास किया लेकिन हमारे देश में अभी इसकी शुरूआत ही हुई है। आशा करते हैं कि धीरे-धीरे हिंदुस्तान में हिंदी अपना परचम लहरायेगी।

इंटरनेट पर हिंदीः- आज हम देखते हैं कि गूगल जैसी कम्पनियों ने भी हिंदी पर शोध किया और धीरे-धीरे हिंदी का परचम बढ़ रहा है और फेसबुक तथा मीडिया में हिंदी का बोल-बाला बढ़ रहा है इससे हम यह आशा करते है कि हिंदी अपना खोया हुआ वजूद शीघ्र प्राप्त कर लेगी। भोपाल में हुए विश्व हिंदी सम्मेलन से इस बात का पता चलता है कि हिंदी साहित्य को पढ़ने व समझने के लिए कितने लोग विदेशों से हर वर्ष भारत आते है| बड़ी-बडी कम्पनियों की निगाह यहाँ पर अपना व्यापार करने के लिए है जिनके लिए हिंदी को सीखना बहुत महत्वपूर्ण है। आज कल लोग अपने सन्देश हिंदी में भेजते हैं तथा आसानी से कार्यों में हिंदी का प्रयोग किया जाता है भाषा के विभिन्न रूप हैं तथा आज-कल हिंदी समाचार पत्र व सोशल मीडिया छायी रहती है | धीरे हिंदी जन-जन में समायेगी और राष्ट्र के निर्माण में योगदान देगी।

विश्व मंच पर हिंदी की उपयोगिता- आज के परिप्रेक्ष्य में विश्वमंच पर हिंदी की उपयोगिता बढ़ रही है, और आने वाले दिनो मे हिन्दी अपना खोया हुआ सम्मान पा लेगी| धीरे-धीरे अंग्रेजी अपना दामन समेट रही है और विश्व जगत मे हिन्दी, 125 करोड भारतीयों के मन मस्तिष्क मे बसने वाली भाषा, का विकास हो रहा है। हमें जन मानस के मन मे हिन्दी का अलख जगाना है और अपनी मातृभाषा का गौरव बढ़ाना है। ताकि मैं गर्व से कहू कि मै हिन्दुस्तानी हूं और राष्ट्र का विकास तभी होगा जब राष्ट्र के जन की भाषा सरल, सहज और मन मस्तिष्क पर अपनी अमिट छाप छोडे। हिन्दी का अनादर तो देश का पतन है इसलिए हिन्दी को सारे राष्ट्र मे एक सम्मान रूप से लागू करना चाहिये तथा वर्ग क, ख, ग को मिटाकर हमारे उच्चतर शिक्षण संस्थानो मे अध्ययन के लिए हिन्दी मे व्यवस्था करना चाहिए ताकि राष्ट्र अपनी उँचाई छू सके। हिन्दी को बढ़ावा देने के लिये वर्तमान भारतीय राजभाषा विभाग जो कि गृह मंत्रालय के अधीन है तथा राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री को इस दिशा मे कार्य करना चाहिये ताकि हिन्दी जन मानस मे घर कर सके । हिन्दी को बढावा देने के लिये हमें उच्चतर स्तर पर कार्यक्रम चलाना चाहिए ताकि हिन्दी अपने चरम बिन्दु पर पहुंच सके-
“हिन्दी है हम वतन हिन्दुस्तान हमारा”

विश्व मंच पर हिंदी की स्वीकार्यता

डॉ. संजय सिंह, (रिसर्च एसोसिएट)

तृतीय पुरस्कार, वर्ष 2015

अखण्ड भारतवर्ष की आजादी के बाद वर्ष 1949 में हिन्दी को इस देश की राजभाषा घोषित किया गया । आजादी के 68 वर्षों बाद अगर आज हम इस बात की समीक्षा करें कि वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का क्या स्थान है तो बडी मिली-जुली स्थिति प्रतीत होती है। एक तरफ तो फिजी, सूरीनाम, आदि देश हैं जहाँ हिन्दी भाषा एक विषय के रूप मे पढ़ाई जाती है, ताकि वहाँ के निवासी अपने मूल स्थान से जुड़े रह सकें। जबकि दूसरी तरफ स्वंय भारतवर्ष है जहाँ आज भी हिन्दी अपना वास्तविक स्थान पाने के लिए संघर्षरत है।

आज जहाँ पश्चिमी देश हमारी भाषाओँ विशेषकर हिन्दी व संस्कृत में रूचि ले रहे है, वहीँ स्वयं भारतवासी अपनी मातृभाषा से दूर होते जा रहे हैं । आज हर एक भारतीय अभिभावक की ये लालसा है कि उसके बच्चे बड़े होकर अँग्रेजी बोलें और विदेश जाकर धनोपार्जन करे। शायद ही ऐसे अभिभावक मिलेंगे जो कि अपनी संतानों को धाराप्रवाह हिन्दी बोलते देखकर हर्षित हों, एवं उनका मानवर्धन करें।

इस परिस्थिति की जनक बहुत हद तक अंग्रेजी भाषा की वैश्विक स्वीकार्यता भी है, जो कि रोजगार प्राप्त करने का एक सुदृढ साधन है। जबकि हिन्दी भाषा के प्रकाण्ड ज्ञानियों को भी शायद रोजगार पाने मे थोड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ जाये।

यदि हम फ्राँस, जर्मनी, चीन आदि देशों का अध्ययन करें तो यह ज्ञात होगा कि ये देश अंग्रेजी भाषा पर निर्भर न हो कर अपनी-अपनी मातृभाषा को प्राथमिकता देते हैं। यदि यही भावना हम 125 करोड़ भारत वासियों में भी विकसित हो जाये तो कदाचित हम अपनी संस्कृति एवं संस्कारों से उत्कृष्ट तरीके से परिचित हो पायें। भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी के शब्द अक्षरशः सत्य है कि,

'निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कै मूल'

परन्तु अपनी भाषा की उन्नति के लिए मात्र राजभाषा पखवाडा या हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) मनाना ही पर्याप्त नहीं है। हम सबको इस भाषा को रोजगार परक भी बनाना होगा, और जिस दिन लोगों के हृदय मे यह विश्वास जागृत हो गया कि हिन्दी का ज्ञान भी उनको अंग्रेजी भाषा के समान ही बेहतर रोजगार उपलब्ध करा सकता है, विश्वास मानिये हिंदी भाषा को अपना वास्तविक स्थान पाने में नाम मात्र का समय लगेगा। अपनी भाषा, अपनी संस्कृति के विकास के लिए स्वयं भारतवासियों को भी दृढ़ होना पड़ेगा, आखिर कुछ तो बात है जो कि पश्चिमी देश हमारी सभ्यता, संस्कृति, वेद, योग आदि के अध्ययन में रूचि ले रहे हैं और ऐसे लोगो की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी हो रही है।

एक समृद्ध एवं सक्षम भाषा होने के पश्चात भी हिन्दी को वैश्विक परिदृश्य में वह स्थान नहीं प्राप्त है, जो कि होना चाहिये। अतः ये हमारा परम कर्तव्य है कि हम पहले स्वयं मे परिवर्तन लायें और फिर परिवर्तन की इस श्रृंखला को आगे बढायें और शायद तभी यह वाक्य चरितार्थ हो पायेगा ;

'हिन्दी है हम वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा'

कंक्रीट के जंगल में....

डॉ. चन्द्रकांत दीक्षित, वैज्ञानिक 'ख'

प्रथम पुरस्कार , वर्ष 2015

तुम भी खोये हम भी खोये..... कंक्रीट के जंगल में
कैसे नैना स्वप्न संजोये .....कंक्रीट के जंगल में

पेड़ काटकर छाँव ढूंढते
खोया अपना गाँव ढूंढते
भूले पनघट भूले पीपल
वर्तमान में बस कोलाहल
बीती यादें पलक भिगोयें ..... कंक्रीट के जंगल में
तुम भी खोये हम भी खोये.....कंक्रीट के जंगल में

सुखी राह से सूखी राह तक
उस मस्ती से एक आह तक
सूने पथ पर चलते चलते
गर्म धूप में जलते जलते
तुम भी रोये हम भी रोये कंक्रीट के जंगल में
कैसे नैना स्वप्न संजोये .....कंक्रीट के जंगल में

बचपन में तारों को गिनना
माँ से वो लोरी का सुनना
क्यूँ हम आज गलत हो बैठे
चाँद दिखे, वो छत खो बैठे
तुम भी सोये हम भी सोये ..... कंक्रीट के जंगल में
कैसे नैना स्वप्न संजोये .....कंक्रीट के जंगल में

भीड़ बहुत पर सूनापन है
बंटा बंटा सा हर आंगन है
रिश्तों से मिठास खो बैठे
कोई बात ख़ास खो बैठे
काट रहे हैं पेड़ जो बोये.... कंक्रीट के जंगल में
तुम भी खोये हम भी खोये..... कंक्रीट के जंगल में
कैसे नैना स्वप्न संजोये .....कंक्रीट के जंगल में

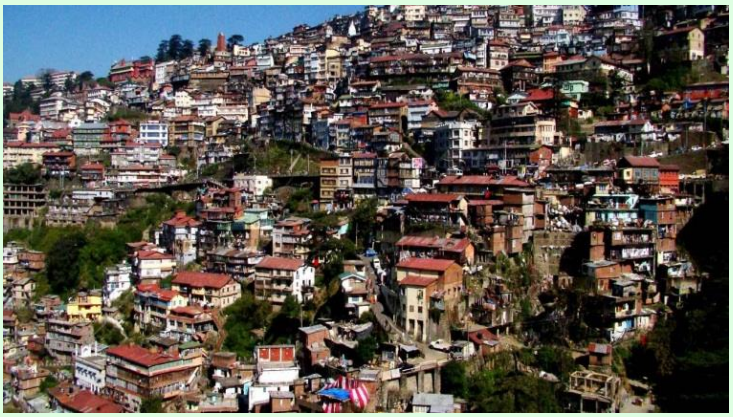

रे कारे बदरा रूठ गए ....

डॉ. संजय सिंह, रिसर्च एसोसिएट

द्वितीय पुरस्कार, वर्ष 2015

रे कारे बदरा रूठ गए, अब का खइहें होरी-धनिया .....

सावन-भादों सब धूल भये, और देव इंद्र प्रतिकूल भये,

बन शूल चुभे रवि-किरण देह, ओझल नभ से बिजरी-बुनिया ।। रे कारे बदरा .....

धरती प्यासी चोटिल घायल, ना खेत गए पग संग पायल ,

फसलें मुरझाई खेतों में, कइसे उगिहें बाली-छिमिया ।। रे कारे बदरा .....

कैसे कुल का अब पेट भरें, कैसे सामाजिक कर्म करें ,

विद्यालय शुल्क हिमालय सा, कैसे ब्याहें बिटिया रनिया ।। रे कारे बदरा .....

दीवाली कैसे दीप जले, कैसे होली में मिलें गले,

जब अन्न ना होई खेतों में, रोटी ना मिली दूनो जुनिया ।। रे कारे बदरा .....

बैलों की जोड़ी बिक जाई, सब गऊ और घोड़ी बिक जाई,

खेती है बंधक पहले से, गिरवी जाई नथ-पैंजनिया ।। रे कारे बदरा .....

मर जइहें बहुत कुपोषण से, बाकी सेठों के शोषण से,

बनकर मजूर ये धरा पुत्र, अबकी थमिहें कन्नी-गुनिया ।। रे कारे बदरा .....

भौतिक विलास के चिंतन में, नित प्रलय को तू आमंत्रण दे,

उपहार प्रकृति के लूट रहा, दिन-दूनी राती-चौगुनिया ।। रे कारे बदरा .....

सब पेड़ काट मैदान किया, बीहड़-वन रेगिस्तान किया,

कर के विनाश खग-मृग निवास, जड़-बुद्धि करें दाना-पनिया ।। रे कारे बदरा .....

जो लोग अभी भी गाते हैं...

डॉ. रजनीश कुमार शर्मा, रिसर्च एसोसिएट
प्रोत्साहन पुरस्कार, वर्ष 2015

किस गाँव नगर से आते हैं, जो लोग अभी भी गाते हैं।

गाने वाला मन नहीं बचा, गोकुल वृंदावन नहीं बचा ।

आखिर क्या-क्या पाते हैं, जो लोग अभी भी गाते हैं ।

कैसे इन आँखों के सपने, इतने पर भी नहीं टूटे।

किस मिट्टी में गड़े हुए हैं, इनके विश्वासों के खूंटे।

हम सबको आस बँधाते हैं, जो लोग अभी भी गाते हैं।

कुछ बचा नहीं इतना सुंदर, जिस पर जाकर मन रीझे।

फिर भी ऐसा क्या देख रहें हैं, कोई इनसे जाकर पूँछे।

सुर-ताल कहाँ से पाते हैं, जो लोग अभी भी गाते हैं।

अब तक इतनी लहरें थीं, जो अपनी टेक लगायें थीं।

अंतरा गीत का लेकर भी, पानी की धूम मचायें थीं।

किस-किस से इनके नाते हैं, जो लोग अभी भी गाते हैं।

किस गाँव नगर से आते हैं, जो लोग अभी भी गाते हैं ।

जलवायु परिवर्तन

श्री प्रकाश पंत, परिचर
प्रथम पुरस्कार (परिचर वर्ग), वर्ष 2015

जलवायु परिवर्तन आज विश्व की एक जटिल समस्या है। हमारे जीवन में कभी गर्मी होती है तो कभी सर्दी होती है। परन्तु आज मानव इस समस्या से समझौता कर लेता है । मौसम को तय करने के मानक वातावरण, नमी, वर्षा आदि है । आज से 150-200 वर्षों से जलवायु परिवर्तन की स्थिति बढ़ रही है जिसका मानव खुद उत्तरदायी है। अगर इंसान थोड़ा भी सहयोग जलवायु परिवर्तन के लिए नहीं करेगा तो आने वाला वक्त विनाश की ओर जायेगा। मौसम का असर जल्दी-जल्दी बदलता है और जलवायु परिवर्तन में थोड़ा समय लगता है। अगर प्राणी वनस्पति जगत इससे सामंजस्य नहीं करेगा तो पूरा विश्व विनाशकारी सिद्व हो जायेगा।

जलवायु परिवर्तन होने के निम्न कारण है-

1. महाद्वीपों का खिसकना
2. ज्वालामुखी का फूटना
3. धरती का घुमाव

1. महाद्वीपों का खिसकना- समुद्र एक विशेष भाग है, विश्व में 71 प्रतिशत समुद्र है जिस कारण महाद्वीप खिसकते हैं ।

2. ज्वालामुखी का फूटना- जब कोई ज्वालामुखी फूटता है तो वह सल्फर डाइ आक्साइड धूल कणों के साथ उत्सर्जन करता है। जो सूर्य की किरणों को अवरुद्ध करती है जिससे मौसम में परिवर्तन होता है और गर्मी का प्रकोप बढ़ता है। जिससे जलवायु परिवर्तन की आशंका बढ़ जाती है।

3. धरती का घुमाव- हमारी धरती एक विशेष कोण पर घूमती है इसी घुमाव से जलवायु में परिवर्तन होता है। जलवायु परिवर्तन से नकारात्मक नुकसान भी है जैसे-

खेती- खेती को जलवायु परिवर्तन से काफी नुकसान होता है।

स्वास्थ्य- जलवायु परिवर्तन से हमारे जीवन पर काफी असर होता है।

जलवायु परिवर्तन को रोकने के उपाय

- वृक्षारोपण अधिक से अधिक करना चाहिये।
- पेड़ों को काटने से बचाना चाहिये।
- प्लास्टिक प्रयोग कम होना चाहिये।
- सौर उर्जा का अधिक प्रयोग होना चाहिये।
- पवन उर्जा का अधिक प्रयोग होना चाहिये।

विद्यालय स्तर पर राजभाषा हिन्दी का क्या समुचित अध्ययन अध्यापन होता है ?

डॉ. आर. के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ'

प्रथम पुरस्कार, वर्ष 2016

भारत में प्राथमिक शिक्षा और वो भी शासकीय स्तर पर सरकारी विद्यालयों में शिक्षा के निरन्तर घटते स्तर से हम भली भांति परिचित हैं । शिक्षकों की संख्या का अपर्याप्त होना, समर्पण की भावना चाहे शिक्षक हो या विद्यार्थी सभी इस अभाव से ग्रस्त हैं। अन्य विषयों के साथ हिन्दी के अध्यापन की गुणवत्ता भी इससे अछूती नही है। शिक्षकों के बौद्धिक स्तर के साथ ही शिक्षक-विद्यार्थी के बीच स्वस्थ बौद्धिक समीकरण का अभाव कहीं न कहीं इस समस्या को और गम्भीर बना रहे हैं।

मुझे तो ऐसा एक भी उदाहरण स्मरण नहीं है जिसमें विद्यालयों - चाहें वो सरकारी हो या प्राइवेट में जहां राजभाषा हिन्दी के गुणात्मक पठन-पाठन पर जोर दिया गया है। ऐसी कोई कार्ययोजना नहीं है जिसके माध्यम से विद्यालयों में राजभाषा हिन्दी के गुणात्मक अध्ययन व अध्यापन पर बल दिया जा सके।

अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व तथा समाज में पाश्चात्य संस्कृति की स्वीकार्यता कहीं न कहीं हमारे नन्हे मुन्नों के मन मस्तिष्क पर भी असर डाल रही है। परोक्ष-अपरोक्ष इसके फलस्वरूप प्राथमिक स्तर से ही अंग्रेजी भाषा से लगाव व हिन्दी से परहेज की भावना हम विद्यालय में हो रहे पठन पाठन पर भी हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं । जब समाज में ही हिन्दी के प्रयोग, हिन्दी पत्राचार, वार्तालाप, पठन पाठन को अंग्रेजी के सापेक्ष निचले स्तर पर देखा जाता है तो भला विद्यालय इससे कैसे अछूते रह सकते हैं।

प्राइवेट विद्यालयों में तो स्थिति अपेक्षा के अनुरूप और भी खराब है। कारण है इन विद्यालयों में तथाकथित सम्पन्न वर्ग के विद्यार्थियों की अधिक संख्या। उक्त श्रेणी के विद्यार्थियों में प्रारम्भ से ही यह सोच बनी रहती या यूं कहें बनाई जाती है कि सभी विषयों में हिन्दी विषय ऐसा है जिसमें "केवल पास हो जायें" तो काफी है। विद्यालय विशेष रूप से प्राइवेट विद्यालय से पास हुये विद्यार्थियों की बहुत कम संख्या ऐसी होती है जो भाषा, विशेष रूप से हिन्दी में, अपना भविष्य देखती है।

प्रायः यह भी देखा गया है कि अधिकांश प्राइवेट (कान्वेंट) स्कूलों में हिन्दी में बोलने का भी प्रतिबंध होता है। ऐसी परिस्थिति में विद्यार्थी के मन में हिन्दी की उपेक्षा का भाव होना कोई आश्चर्य नहीं है।

समाज में ऐसे विद्यालय तथा ऐसी शिक्षा जिसमें अंग्रेजी माध्यम का उपयोग ज्यादा होता है, के प्रति लगाव का होना विद्यालयों में राजभाषा हिन्दी के अध्ययन तथा अध्यापन के घटते स्तर के लिए सबसे बड़ा कारण है।

परिवार में बच्चों को एक ऐसा वातावरण मिलता है जहाँ उन्हें पाश्चात्य संस्कृति तथा अंग्रेजी वार्तालाप के प्रति सम्मान दिखाई देता है । ऐसे बच्चे विद्यालयों में अन्य सहपाठियों को भी प्रभावित

करते हैं जिसके फलस्वरूप उन सभी में हिन्दी भाषा के प्रति लगाव तथा उसे (हिन्दी भाषा) जानने व उपयोग की इच्छा घटती जाती है। हिन्दी के प्रयोग की इच्छा शक्ति का घटना ही तीसरा प्रमुख कारण है जिससे विद्यालयों में हिन्दी अध्ययन तथा अध्यापन प्रभावित हो चुका है। ये विद्यार्थी अपने आदर्श भी ऐसे चुनते है जो पाश्चात्य संस्कृति के धनी हैं और जो अंग्रेजी को हिन्दी से अधिक महत्व देते हैं।

उपरोक्त तथ्यों, समस्या के वृहद स्वरूप तथा इसके कारण राजभाषा हिन्दी पर निरन्तर हो रहे दुष्परिणामों को संज्ञान में लेते हुये हमें समय रहते कुछ मूलभूत बातों का ध्यान रखना होगा –

- विद्यालयों में राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग की अनिवार्यता हो ।
- सरकारी/गैरसरकारी स्कूलों में इस बात पर विशेष जोर हो कि उन्होंने हिन्दी भाषा के उपयोग और इसके गुणात्मक सुधार में क्या उपलब्धि अर्जित करी ।
- शासकीय स्तर से इस बात की अनिवार्यता हो कि प्रत्येक विद्यालय को हिन्दी भाषा के योग्य शिक्षक लेना अपरिहार्य हो ।
- विद्यालयों में हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार तथा प्रयोग के प्रोत्साहन हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हों ।
- समाज में इस भावना को समाप्त करना कि हिन्दी भाषा में वार्ता करना पिछड़ेपन की पहचान है ।

उपरोक्त के अतिरिक्त हमें स्वयं में भी इस भावना को बलवती करना होगा कि राजभाषा हिन्दी में यदि हम सोच सकते है तो बोलनें में शर्म कैसी ? हमें अपने महाकवियों, रचनाकारों का उदाहरण याद रखना चाहिए जिन्होंने अपनी रचनाओं को हिन्दी के माध्यम से अमरत्व प्रदान किया । हमारी यही सोच तथा राजभाषा हिन्दी के प्रति आदर की भावना हमारे बच्चों में हिन्दी के प्रति रूचि पैदा करेगी और इससे विद्यालयों में भी पठन पाठन में हिन्दी की अधिकाधिक अपेक्षा होगी।

यही अपेक्षा हिन्दी के अध्यापन तथा अध्ययन को प्रभावित करने में सक्षम होगी ।

****

विद्यालय स्तर पर राजभाषा हिन्दी का क्या समुचित अध्ययन अध्यापन होता है ?

डा. फरीद अंसारी, रिसर्च एसोसिएट
द्वितीय पुरस्कार, वर्ष 2016

हिन्दी एक भाषा ही नहीं अपितु यह भारत की आत्मा और उसका दर्पण भी है। परन्तु आजकल के परिवेश में एक भाषा ही बनकर एवं दिवस तक ही सिमट कर रह गयी है।

विद्यालय स्तर पर हिन्दी की स्थिति को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि क्या राजभाषा हिन्दी का विद्यालय स्तर पर समुचित अध्य्यन एवं अध्यापन होता है तो उत्तर सभी के मस्तिष्क में स्पष्ट है कि नहीं, बिल्कुल भी नही तो इसके बाद प्रश्न ये उठता है कि कारण है-

- सामाजिक परिदृश्य
- वैश्वीकरण
- आधुनिकता
- रोजगार
- लोकप्रियता

सामाजिक परिदृश्य में देखा जाए तो आजकल के परिवेश में कोई भी अभिभावक छात्र के स्कूल में पंजीकरण से लेकर महाविद्यालयों तक यह विशेष रूप से देखता है कि उसकी लोकप्रियता कितनी है ? और समाज में उसका स्थान क्या है ? लोग क्या कहेंगे ? इस भय से वह अपने बच्चे का प्रवेश ऐसे विद्यालय में कराता है जहाँ पर अंग्रेजी का बढ़ावा है जिससे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा बनी रहे।

आज सभी जानते हैं कि पूरा विश्व एक दूसरे से जुड़ा है जिसके कारण भाषाई आदान प्रदान के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा की आवश्यकता होती है, जिसका स्थान अंग्रेजी ने ले रखा है। अब बात उठती है कि पूरे विश्व की जनसंख्या 6 अरब से भी अधिक है जिसमें सवा करोड़ से भी अधिक भारत की जनसंख्या है फिर भी हम अंग्रेजी के ऊपर बल देते हैं ।

आधुनिकता के दौर में अंग्रेजी एक फैशन सा बन चुका है अगर कई विद्यालयों की बात करें तो वहां पर हिन्दी बोलने पर विद्यार्थियों को जुर्माना देना पड़ता है खासतौर पर मिशनरी विद्यालयों में, परन्तु सत्यता यही है कि यहां पर प्रवेश के लिए विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की कतार लगी होती है। जहाँ पर हिन्दी बोलना एक अपराध है वहां पर समुचित अध्ययन एवं अध्यापन की तो बात दूर की है।

रोजगार की बात करें तो विद्यालयों में इसी को ध्यान में केन्द्रित कर प्रवेश लिया जाता है। बहुत सारी रोजगार रिक्तियों में हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी को प्रमुखता दी जा रही है तो विद्यालयों में भी अध्ययन रोजगार परक बनाने के लिए अंग्रेजी को प्रमुखता दी जा रही है । देश का दुर्भाग्य ही है कि "हिन्दी है हम, वतन है हिदोस्तां हमारा" के बावजूद इसकी उपेक्षा की जाती है।

लोकप्रियता से संदर्भ ये है कि विद्यालय को अंग्रेजी माध्यम की जगह इंग्लिश मीडियम कहा जाता है तो उसकी लोकप्रियता बढ़ती है अपितु हिन्दी माध्यम में अध्यापन की जैसे ही बात आती है उस विद्यालय की लोकप्रियता तुरन्त घट जाती है। इससे इतर हिन्दी भाषा में अध्यापन पर विशेष बल नहीं दिया जाता।

हिन्दी भाषा की वास्तविकता और आत्मीयता पर विशेष बल देने हेतु विद्यालयों में समुचित अध्ययन और अध्यापन की व्यवस्था करनी चाहिए एवं इसके लिए कई महत्वपूर्ण एवं आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

उदाहरण के लिए किसी भी विद्यालय के बच्चे से वर्णमाला के बारे में या स्वर और व्यंजन के बारे में पूछा जाए तो वह स्पष्ट नहीं कर पायेगे वहीँ अंग्रेजी अल्फाबेट के बारे में पूछा जाए तो तुरन्त ही बता देंगे।

विद्यार्थियों के लिए विद्यालय ही एक ऐसा स्थान है जहां विद्यार्थी सीखता है और वही पर उसके भविष्य का निर्माण भी होता है अतः यह आवश्यक है कि राज भाषा हिन्दी को एक उचित स्थान एवं भारत की आत्मा एवं उसकी संस्कृति को बनाए रखने के लिए एवं वैश्विक स्तर पर हिन्दी को सम्मान दिलाने के लिए विद्यालय स्तर पर अध्यापन का उचित प्रबन्ध करना चाहिए जो मुख्यतः निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

- अनिवार्यता
- सामाजिक चेतना
- विशेष महत्व
- लोकप्रियता
- शासनादेश
- आधुनिकीकरण
- उचित प्रबन्धन
- जागरुकता
- कार्यशैली
- पाठयक्रम

आजादी की 70 वर्ष बाद से लेकर पहले तक अध्ययन करने पर प्रतीत होता है कि हिन्दी की लोकप्रियता वर्ष दर वर्ष गिरती ही गयी है। हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी का लोकप्रिय होना एक अभिशाप बनता जा रहा है इसलिए हिन्दी को प्रत्येक विद्यालय में अनिवार्य करना आवश्यक है और वहां पर अध्यापन का माध्यम हिन्दी करना अनिवार्य होना चाहिए।

समाजिक चेतना अति आवश्यक है जो कि जन जागरुकता के माध्यम से ही होगी जिसके लिए हिन्दी पर बल देना चाहिए। अध्यापन के माध्यम से विद्यार्थियों को हिन्दी को विशेष महत्व देना चाहिए जिससे की छात्र एवं शिक्षक में आत्मीयता बनी रहे । शासनादेश के माध्यम से ऐसे विद्यालयों को दण्डित करना चाहिए जो हिन्दी की उपेक्षा करते है।

पाठयक्रम में हिन्दी भाषा पर विशेष बल देना चाहिए एवं शिक्षा का माध्यम भी हिन्दी होना चाहिए जिससे छात्र एवं शिक्षक में समन्यवय बना रहे।

अतः में मैं यह बताना चाहूँगा कि जब तक लोग, चाहे वो विद्यार्थी हो या शिक्षक उनमें जागरुकता नहीं होगी तब तक हिन्दी की उपेक्षा होती ही रहेगी। इस निबन्ध के माध्यम से यह बताना चाहूँगा क्योंकि हिन्दी है हम वतन है हिन्दोस्तान हमारा।

****

स्वच्छता में हमारा योगदान

डॉ. संजय सिंह, रिसर्च एसोसिएट

प्रथम पुरस्कार, वर्ष 2017

"स्वच्छता", यह एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ अत्यन्त ही प्रभावशाली एवं क्षेत्र अत्यन्त ही व्यापक है। शायद ही इस धरा पर कोई ऐसा प्राणी हो जिसे स्वच्छता नापसंद हो। विश्व के किसी भी देश में, किसी भी धर्म या सम्प्रदाय को मानने वाले नागरिकों में जो एक गुण समान रूप से पाया जाता है, वह है स्वच्छता के प्रति आकर्षण । यही कारण है कि बाल्यकाल से ही प्रत्येक व्यक्ति को उसके परिजनों एवं गुरूजनों द्वारा स्वच्छता का पाठ पढ़ाया जाता है । बचपन से ही हम सभी पढ़ते आ रहे हैं कि "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है", और हमारे उत्तम स्वास्थ्य के लिए हमारे शरीर, घर एवं वातावरण का स्वच्छ होना अति आवश्यक है। अस्वच्छता अनेक रोगों एवं विकारों की जननी है और हमारे आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डालती है। अतः एक सामाजिक प्राणी होने के नाते यह हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम अपने शरीर, वस्त्रों, घर, मुहल्ले एवं कार्यस्थल की साफ-सफाई का पूरा ध्यान दें।

आज यदि हम अपने मुहल्लों एवं शहर का अवलोकन करें तो निम्नलिखित अव्यवस्थायें व्यापक स्तर पर दिखाई पड़ेगी:

क. मुहल्ले के नुक्कड़ों पर जमा कूड़े के ढेर।

ख. सड़कों एवं गलियों में बिखरी पालीथीन एवं कागज के टुकड़े।

ग. पान एवं गुटखे के पीक से रंगी हुई सड़के एवं सरकारी भवनों की दीवारें।

घ. सरकारी अस्पतालों के परिसर में फैले जैव-चिकित्सकीय कचरे।

ड़. बाजारों एवं सब्जीमण्डियों में फैले फलों एवं सब्जियों के सड़े हुए ढेर।

च. पालीथीन, जैव अपशिष्ट एवं औद्योगिक उत्प्रवाहों से दूषित हमारी जीवन दायिनी नदियाँ।

छ. अन्य प्रदूषणकारी तत्व/पदार्थ जो हमारी धरा एवं वायुमण्डल के लिए अत्यंत हानिकारक है।

इन गन्दगियों को देखकर प्रत्येक व्यक्ति रूमाल से नाक ढक कर या अपना रास्ता बदल कर निकलना चाहता है। इसी गन्दगी के कारण हमारे दैनिक जीवन में संक्रामक रोगों, जैसे-डेंगू, चिकनगुनिया, स्वाइन-फ्लू, मलेरिया, तपेदिक, हैजा आदि का कुप्रभाव बढ़ता जा रहा है और देश में इन बीमारियों से होने वाली मृत्यु की संख्या में भी अप्रत्याशित रूप से बढोत्तरी हो रही है।

यदि हम शान्त चित्त से चिंतन एवं अवलोकन करें तो ज्ञात होगा कि इन सारी कमियों/गंदगियों के लिए मनुष्य स्वयं उत्तरदायी है। एक जिम्मेदार सामाजिक प्राणी होने के नाते ये हमारा परम कर्तव्य है कि

हम इस गंदगी से निजात पाने के लिए अपने दैनिक जीवन में स्वच्छता की आदत डालें एवं अपने घर, मुहल्ले एवं देश की स्वच्छता को बनाये रखें ।

महात्मा गांधी ने स्वयं कहा था कि "स्वच्छता में ईश्वर का वास होता है" उनके ही विचारों को पूर्ण करने हेतु भारत सरकार द्वारा 02 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान आरम्भ किया गया है। इस अभियान का लक्ष्य है कि महात्मा गाँधी जी के 150 वें जन्मदिवस 02 अक्टूबर 2019 तक देश को गन्दगी की कुरीति एवं अभिशाप से मुक्त कर लिया जाय।

देश एवं समाज को स्वच्छ रखने में एक व्यक्ति, एक विभाग या एक मंत्रालय का प्रयास कारगर नहीं होगा और ना ही यह कुछ दिनों तक चलने वाला कार्यक्रम/आयोजन है। यदि हमें अपने आस-पास एवं देश में स्वच्छता लानी है तो हमें अपने घर से आरम्भ करना होगा एवं स्वच्छता रखने की आदत को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना होगा।

निम्नलिखित क्रियाकलापों द्वारा हम अपने घर, समाज एवं राष्ट्र की स्वच्छता में अतुलनीय योगदान दे सकते हैं:

- प्रतिदिन अपने शरीर की सफाई करना।
- साफ सुथरे वस्त्र धारण करना।
- कचरे के निस्तारण के लिए कूड़ेदान का प्रयोग करना।
- सड़कों/गली/मुहल्लों में पान की पीक, कागज के टुकड़े, पालीथीन, घरेलू कचरा/मलबा आदि न डालना।
- नदियों में हवन पूजन सामग्री, जैविक अवशेष, पालीथीन, औद्योगिक कचरा आदि ना डालना।
- अपने कार्यस्थल पर कचरे को उपयुक्त स्थान पर अथवा कूड़ेदान में रखना।
- बाजारों, अस्पतालों, सरकारी भवनों में सदैव कचरा फैलाने से बचना एवं यहाँ वहां थूकने से बचना।
- खुले स्थानों पर मल/मूत्र विसर्जन से बचना एवं शौचालयों का प्रयोग करना।
- अपने घर एवं समाज में स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरुक करना।

उपरोक्त आदतों को अपने दैनिक जीवन में सम्मिलित कर हम गंदगी एवं संक्रामक रोगों के अभिशाप से अपने एवं अपने परिवार की रक्षा कर सकते हैं। इन आदतों का दैनिक निर्वाह आपको एक जिम्मेदार नागरिक होने का गर्व भी प्रदान करेगा और स्वच्छता में हमारा योगदान ही देश सेवा में हमारा अतुलनीय योगदान होगा। "स्वच्छ भारत - स्वस्थ भारत"

****

स्वच्छता में हमारा योगदान

डॉ. आर. के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ'

द्वितीय पुरस्कार, वर्ष 2017

सदियों से हम यह सुनते आये हैं कि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का वास होता है स्वस्थ मन (ह्रदय) में ही सकारात्मक विचारों का वास होता है, और सकारात्मक विचार हमारे शरीर, हमारे क्रिया कलाप का निर्धारण करते हैं।

अतः स्वस्थ तन हमारे शारीरिक क्रिया कलापों व विचारों को भी परोक्ष-अपरोक्ष रूप से प्रभावित करता है।

स्वस्थ मन या शरीर की पहली आवश्यकता स्वच्छता है जिसका प्रारम्भ हमारे अपने शरीर से होता है। स्वच्छ परिवेश को सुनिश्चित करने के लिए हमें स्वयं की स्वच्छता को सुनिश्चित करना नितान्त आवश्यक है।

स्वस्थ परिवेश के लिए स्वच्छता सुनिश्चित करना हर नागरिक का कर्तव्य है । स्वस्थ परिवेश के लिए स्वच्छता सुनिश्चित करने में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है:

- घर से निकलने वाले जल-मल का समुचित एवं पर्यावरणीय दृष्टि के अनुकूल निस्तारण।
- घरेलू ठोस अपशिष्ट का पृथक्कीकरण एवं इसकी मात्रा को न्यूनतम करने का प्रयास।
- सर्वजनिक स्थलों पर हमारे द्वारा किसी भी प्रकार के प्रदूषण को न फैलाये जाने का दृढ़ निश्चय ।
- नदियों/नालों में मवेशियों/स्वयं के स्नान पर आवश्यक सावधानी। हमारे स्नान के समय अथवा अन्य समकक्ष कार्यकलापों में साबुन के प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबंध (स्वेच्छा से)।
- किसी भी प्रकार के रसायन, दवाइयों (अनुपयोगी), पेट्रोल, डीजल या अन्य पदार्थो का भूमि पर अनियंत्रित विधि से डालने या फेकनें पर स्वेच्छा से पूर्ण प्रतिबंध। उपरोक्त प्रतिबंध को प्रभावी रूप में लागू न होने से भूमि, मृदा तथा भूजल के प्रदूषण की संभावना बलवती हो जाती है।
- यदि हमारे द्वारा कोई उद्योग संचालित होता है तो हमारी सदैव यह चेष्टा तथा ईमानदार प्रयास होना चाहिये कि उद्योग से निकलने वाला बहिश्राव निर्धारित पर्यावरणीय मानक के अनुरूप हो।
- हमारे द्वारा संचालित उद्योग में स्वच्छ उत्पादन प्रक्रिया के साथ-साथ उत्पादन से जनित तत्वों का उद्योग में पुनः चक्रण करने का प्रयास किया जाना भी उद्योग जनित प्रदूषण को न्यूनतम करने के लिए एक कारगर तरीका है।
- प्रायः यह देखा गया है कि हम हमारे पालतू जानवरों को घर से बाहर घुमाते समय इस बात का ध्यान नहीं रखते कि जानवर द्वारा जनित गंदगी भी हमारे जैसा एक अन्य व्यक्ति साफ करता है। इस विचार को ध्यान में रखते हुये हमें यह सुनिश्चित करना चाहिये कि उपरोक्त प्रक्रिया किसी ऐसे स्थान पर हो जहां से परिवेशीय दुष्परिणाम न्यूनतम हो।
- सार्वजनिक यातायात के साधन का उपयोग करते समय भी हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि जैसी स्वच्छता की हम अपेक्षा करते है उसी स्तर की स्वच्छता को हम उपयोग के पश्चात भी सुनिश्चित करें।

उपरोक्त मूल बातों का सदैव ध्यान रखते हुए हमें यह भी जानना आवश्यक है कि हमारी यह धारणा कि स्वच्छता को सुनिश्चित करना सरकार या शासकीय निकायों की जिम्मेदारी है - सदैव गलत है।

स्वच्छता की शुरूआत और अन्त हमसे ही जुड़ा हुआ है। हमारी स्वच्छता को सुनिश्चित रखने का कारगर प्रयास ही परिवेशीय प्रदूषण को न्यूनतम रख सकता है।

ऊपर वर्णित सुझावों के साथ-साथ हमारी रोजमर्रा की जीवन शैली भी स्वच्छता व स्वस्थ परिवेश को प्रभावित करती है। इस क्रम में कुछ विशिष्ट बातों का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा –

- आज हमारी दिनचर्या में इस आदत को अपना चुके हैं कि हम बाजार में किसी भी सामान के साथ प्लास्टिक/पालीथीन के कैरीबैग (लिफाफे) को भी मांगते हैं। हमें इनके उपयोग से हो रहे दुष्परिणाम को रोकने के लिए इसके नाम (कैरी बैग) में छपे प्रेरक संदेश को भी समझना चाहिये। इसके नाम की संधि-विच्छेद इसे "कैरी" और "बैग" में पृथक करती है जिसका हिन्दी अनुवाद है "थैले को लेकर जाओ"। यदि हम अपनी यह आदत बना ले कि घर से बाजार जाते समय एक थैला (कपड़े का) लेकर जायेंगे तो बाजार में प्लास्टिक/पालीथीन के लिफाफों के उपयोग पर एक प्रभावी नियंत्रण कर सकते हैं। ध्यान रहे उपरोक्त प्रयास हमारा अपना व्यक्तिगत प्रयास है और यदि हर नागरिक इस प्रकार की सोच रखे तो पालीथीन/प्लास्टिक लिफाफों के उपयोग तथा इसके दुष्परिणाम से बिना सरकारी/शासकीय प्रयास के, बचा जा सकता है।
- एक अन्य बात जो हमारी धार्मिक आस्था से जुड़ी हुई है वह है हमारे द्वारा पूजा सामग्री का नदियों, तालाबों, कुओं में निस्तारण, इसे हमें ही रोकना होगा। क्यों नहीं हम इनका आदर सहित निस्तारण अपने घर में एक स्वच्छ जल से भरी बालटी या टब में करके उस पानी का सिंचाई के उपयोग में लाने पर विचार करते हैं।

इस प्रकार के कई ऐसे उपाय है जिन की शुरूआत हमें ही करनी होगी। स्वच्छता को सुनिश्चित करते हुए स्वस्थ परिवेश के लिए हमे अपना एक सार्थक योगदान देने का संकल्प करना होगा।

संभवतया तभी हम एक जिम्मेदार नागरिक कहलायेंगे।

****

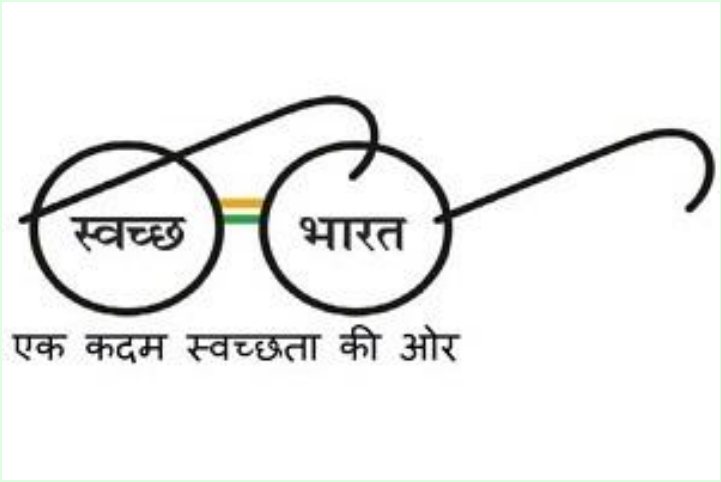

आमंत्रित रचनाएँ

गंगा मैली : उत्तरदायी कौन ?

डॉ. देवेंद्र कुमार सोनी, वैज्ञानिक 'घ'
डॉ. फरीद अन्सारी, रिसर्च एसोसिएट

अस्या जलस्य गुणाः॥ शीतत्वम्। स्वादुत्वम्। स्वच्छत्वम्। अत्यन्तरुच्यत्वम्। पथ्यत्वम्। पावनत्वम्। पापहारित्वम्। तृष्णामोहध्वंसनत्वम्। दीपनत्वम्। प्रज्ञाधारित्वञ्च। इति राजनिघण्टुः॥

Coolness, sweetness, transparency, high tonic property, wholesomeness, portability, ability to remove evils, ability to resuscitate from swoon caused by dehydration, digestive property and ability to retain wisdom.

उपर्युक्त पंक्तिया ये दर्शाती हैं कि भारतवर्ष के लिए गंगा केवल एक नदी मात्र ही नहीं, बल्कि गंगा भारत की आत्मा, देश की पहचान और उसका दर्पण भी है जिसमें हर भारतवासी अपना असली चेहरा देख सकता है। भारतीय धर्मग्रंथों में इसे पवित्र नदी माना गया है और इसे माता का दर्जा दिया गया है। गंगा केवल आध्यात्मिक, पर्यावरणीय आस्था तथा धार्मिक दृष्टि से ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि भौतिक सम्पन्नता, आर्थिक सभ्यता एवं संस्कृति तथा वैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यंत उपयोगी, लाभदायक एवं आवश्यक है।

माँ गंगा के बारे में तुलसीदास की चौपाई हैः-

दरश, परस, मज्जन अरु पाना । हरहिं पाप, कह वेद पुराना ।।

अर्थात, गंगा जी के दर्शन, स्पर्श, स्नान और पान से सभी प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं ।

गंगा नदी हिमालय के गोमुख नामक स्थान पर गंगोत्री हिमनद से निकलती है। गंगा के इस उदगम स्थल की ऊँचाई 3140 मीटर है। इस हिमनद में नंदा देवी, कामत पर्वत एवं त्रिशूल पर्वत का हिम पिघल कर आता है। यद्यपि गंगा के आकार लेने में अनेक छोटी धाराओं का योगदान है लेकिन छह बड़ी और उनकी सहायक पांच छोटी धाराओं का भौगोलिक और सांस्कृतिक महत्त्व अधिक है। भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण नदी गंगा जो भारत और बांग्लादेश में मिलाकर करीब 2525 कि.मी. की दूरी तय करती हुई उत्तराखंड में हिमालय से लेकर बंगाल की खाड़ी के सुंदरवन तक विशाल भू भाग को सींचती है। गंगा देश की प्राकृतिक संपदा ही नहीं, जन-जन की भावनात्मक आस्था का आधार भी है। 100 फीट (31 मीटर) की अधिकतम गहराई वाली

यह नदी भारत में पवित्र मानी जाती है 2071 कि.मी तक भारत तथा उसके बाद बांग्लादेश में अपनी लंबी यात्रा करते हुए यह सहायक नदियों के साथ दस लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के अति विशाल उपजाऊ मैदान की रचना करती है, जो अपनी घनी जनसंख्या के कारण भी जाना जाता है। भारत के पांच राज्य क्रमशः उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, और बंगाल गंगा नदी के पथ में आते हैं। इसके अलावा सहायक नदियों के कारण कुछ हिस्सा हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, छत्तीसगढ़ और दिल्ली को भी छूता है।

वर्तमान समय में गंगा नदी काफी प्रदूषित होती जा रही है । गंगा नदी 29 ऐसे बड़े नगरों से होकर गुजरती है जिनकी जनसंख्या एक लाख से अधिक है। जबकि इसके किनारे 23 ऐसे नगर बसे हुए हैं जिनकी जनसंख्या 50 हजार से एक लाख के बीच है। इसके अलावा 48 छोटे-छोटे शहर भी गंगा के किनारे बसे हुए हैं। गंगा में मिलने वाला अधिकांश वहिस्राव इन्हीं नगरों के आवासीय मकानों से निकलकर आता है। इसके अलावा गंगा नदी के तट पर चमड़े के कई कारखाने, रासायनिक यौगिकों को तैयार करने वाले कारखाने, कपड़े के कारखाने, शराब के कारखाने, बूचड़ खाने (स्लाटर हाउस) तथा अस्पताल भी बने हुए हैं। इनसे निकलने वाला मल-जल तथा अनेक प्रकार की गन्दगी भी गंगा में मिलती रहती है। इस प्रदूषण ने गंगा के पानी को पीने और नहाने की कौन कहे, आचमन लायक भी नहीं छोड़ा। चूँकि यह सिर्फ एक नदी नहीं है बल्कि हमारी संस्कृति में रची बसी है और हम इससे हर तरह से जुड़े हैं । ये जितनी धरा पर बहती है उससे ज़्यादा हमारे दिलों में बहती है।

अगर हम वहिस्राव की बात करें तो लगभग 6614 मिलियन लीटर प्रतिदिन (MLD) रासायनिक एवं घरेलू बहिस्राव उत्तराखंड से बंगाल के डायमण्ड हार्बर तक प्रतिदिन 144 मुख्य नालों के माध्यम से प्रवाहित किया जाता है जिसमें गंगोत्री से हरिद्वार तक 14 नालों से लगभग 444 MLD, हरिद्वार से नरौरा तक 12 नालों से 270 MLD, नरौरा से कानपुर तक 18 नालों का लगभग 1201 MLD, कानपुर से इलाहाबाद तक 14 नालों से 1780 MLD, इलाहाबाद से वाराणसी तक 7 नालों का लगभग 559 MLD, वाराणसी से राजमहल तक 25 नालों का लगभग 579 MLD एवं राजमहल से डायमण्ड हार्बर तक 54 नालों से लगभग

1779 MLD घरेलु बहिस्राव शामिल है। ये आँकड़े केवल प्रमुख शहरो के प्रमुख नालों का है जबकि इन आँकड़ो से कही अधिक बहिस्राव गंगा नदी में छोटे-छोटे गांव और कस्बे से सीधे तौर पर मिलता है। गंगा की सबसे दयनीय स्थिति कानपुर स्थित बाँध (गंगा बैराज) से इलाहाबाद के मध्य है क्योंकि यहाँ पर गंगा में बहाव सबसे कम है और लगभग 500 औद्योगिक इकाइयों के बहिस्राव के साथ-साथ प्रमुख शहरों का घरेलु बहिस्राव शामिल है। सिंचाई एवं

जल संसाधन विभाग, उत्तर प्रदेश के आंकड़ों के अनुसार गंगा नदी पर बने विभिन्न बाँध जिसमें हरिद्वार स्थित भीमगौरा बाँध तक लगभग 30527 क्युबिक प्रति सेकंड (क्यूसेक) पानी आता है, जिससे पूर्व गंगा कैनाल से 890 क्यूसेक तथा उपरी गंगा कैनाल से 7663 क्यूसेक पानी नहरों के माध्यम से विद्युत परियोजना, सिंचाई एवं घरेलू उपयोग हेतु पानी निकाला जाता है। इसके बाद लगभग 18000 क्यूसेक पानी बिजनौर स्थित चौधरी चरण सिंह बाँध तक पहुँचता है जिसमें से लगभग 5000 क्यूसेक पानी मध्य गंगा कैनाल से सिंचाई हेतु नहरों मे भेज दिया जाता है। यही पर एक और नहर निर्माणाधीन है जिससे भविष्य में लगभग 4000 क्यूसेक पानी का निष्कर्सण प्रस्तावित है। बुलंदशहर स्थित गंगा नदी पर बने नरौरा बाँध जिसके बाद गंगा का स्वरुप, प्रवाह के सन्दर्भ में काफी कम हो जाता है इसलिए यहाँ पर गंगा सिकुड़ कर छोटी हो जाती है क्योंकि प्रवाह को अधिकतर रोक लिया जाता है इस स्थान पर लगभग 13000 क्यूसेक पानी मुख्य धारा से आता है उसमें से लगभग 5320 क्यूसेक पानी निचली गंगा कैनाल से, 5307 क्यूसेक पानी समानान्तर निचली गंगा कैनाल से तथा नरौरा परमाणु विद्युत प्लांट कैनाल से लगभग 38 क्यूसेक पानी सिंचाई एवं विद्युत उत्पादन हेतु स्थानान्तरित कर दिया जाता है, बचा हुआ केवल 4096 क्यूसेक पानी ही नरौरा बाँध से गंगा की मुख्य धारा मे छोड़ा जाता है यह पानी इतना कम है कि कहीं कहीं पर जैसे कछला घाट पर इस नदी को आसानी से पैदल ही पार कर लिया जाता है। गंगा का दुर्भाग्य यहीं पर

समाप्त नही होता, उस 4096 क्युसेक पानी जो कि गंगा की मुख्य धारा मे था पुनः कानपुर के पहले स्थित लवकुश बाँध पर रोक लिया जाता है और उसमें से लगभग 80 क्यूसेक पानी कानपुर शहर की आपूर्ति हेतु यहाँ से पानी का निस्तारण किया जाता है। यह गंगा की महानता को ही दर्शाता है कि इतनी प्रतिकूल परिस्थिति के बाद भी इसका प्रवाह कभी नही रूका। गंगा नदी के पानी का लगातार दोहन एवं उस पानी को पुनर्चक्रण न कर पाने के कारण नदी के पारिस्थितिक तंत्र पर प्रभाव पड़ रहा है लेकिन इस कटु सत्य के साथ-साथ ये आवश्यकता भी है। अगर गंगा के पानी को न लिया जाय तो करोड़ो लोगों का जीवन प्रभावित होगा इसीलिए इसे जीवनदायिनी भी कहा जाता है। अब बात ये उठती है कि गंगा की इस दुर्दशा के लिए उत्तरदायी कौन है जो हमें जीवन दे रही है हम उसे क्या दे रहें है ? केवल रासायनिक एवं घरेलू बहिस्राव वो भी बड़ी मात्रा में, जिसे गंगा को पचाना भविष्य मे संभव नही होगा क्योंकि प्रकृति की सहन करने की एक क्षमता होती है। 2007 में प्रकाशित संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार हिमालय पर स्थित गंगा की जलापुर्ति करने वाल हिमनद 2030 तक समाप्त हो जाने की संभावना है, इसके बाद नदी का बहाव मानसून पर आश्रित होकर मौसमी ही रह जाएगा।

हम सभी जनों की हमेशा से एक सोच रही है कि किसी भी कार्य के लिए सरकार को दोषी ठहराना ! तो क्या वास्तव में सरकार इसके लिए दोषी है? नही, दरअसल इसके लिए सरकार को दोषी ठहराना उचित नहीं है क्योंकि सरकार बिजली, सिंचाई और पीने योग्य पानी देने के लिए बाध्य है और इन सब कार्यो के लिए गंगा के प्रवाह का नियमन करना पड़ सकता है क्योंकि इसके अलावा कोई विकल्प नही है। हम सभी के पास विकल्प रहते हुए भी हम अपनी जिम्मेदारियों

को नही समझ पा रहे है और विभिन्न माध्यमों से गंगा को प्रदूषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे है उदाहरण के लिए हम एक लीटर पानी की बोतल 20 रूपये मे लेते है और मुझे नही लगता कि हम उसकी एक बूँद भी बर्बाद होने देते हो बाकि आप समझदार है और मुफ्त में मिले अमूल्य पानी की बर्बादी किस हद तक करते है हम सभी अच्छी तरह से जानते है। लगभग 6614 MLD घरेलु बहिस्राव के लिए केवल शहरी

जनसँख्या ही उत्तरदायी है। गंगा किनारे बसे पाँच राज्यों जहाँ से गंगा होकर गुजरती है कुल 1000 औद्योगिक इकाई है जिनसे लगभग 501 MLD शोधित/अशोधित जल का बहिस्राव गंगा में होता है इन इकाइयों मे प्रमुख तौर पर शुगर फैक्टी 67, डिस्टिलरी 35, पल्प और पेपर मिल 67, टेक्सटाइल 63 एवं 442 चमड़ा उद्योग सहित अन्य कल कारखानें स्थापित है। जहाँ तक औद्योगिक इकाइयों से उत्पन्न प्रदूषण का प्रश्न है तो ये लगभग 15-18 प्रतिशत गंगा प्रदूषण के लिए प्रत्यक्ष/ अप्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी है क्योंकि इनके द्वारा जनित जल घरेलू जल की अपेक्षा अधिक विषैला होता है और इनमे रासायनिक तत्व के साथ साथ अन्य हानिकारक पदार्थ भी होते है जो कि गंगा जल मे मिलते ही उसकी गुणवत्ता को प्रभावित कर देते हैं । सरकार और औद्योगिक इकाइयां इसे कम करने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं जो कि जीरो लिक्विड डिस्चार्ज, आन लाइन मानिटरिंग सिस्टम, जल शोधन सहित ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन आदि के माध्यम से प्रदूषण को कम करने की कोशिश की जा रही है। सिर्फ गंगा नदी की बात करे तो कोई भी औद्योगिक बहिस्राव बिना शोधित किये गंगा में प्रवाहित नही होना चाहिए, ये बात और है कि कुछ औद्योगिक इकाइंया लालचवश चोरी छिपे अशोधित उत्प्रवाह को नालों के माध्यम से गंगा मे उड़ेल रही है।

औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले प्रदूषण के प्रति केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड गंभीर है जिसके लिए समय समय पर सघन निरीक्षण किया जा रहा है । देश के राजस्व, प्रगति और उत्पादन के लिए औद्योगिक इकाइयों का संचालन अत्यंत आवश्यक है जिसके लिए प्रदूषण के प्रति केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड समय समय पर इनमें सुधार हेतु दिशा निर्देश एवं नियमों से संचालन हेतु प्रतिबद्ध है। अब रही बात 80-85 प्रतिशत घरेलु बहिस्राव एवं गंगा मे कूड़ा करकट के लिए जिम्मेदारी किसकी है ? तो यहाँ स्थिति स्पष्ट होती है कि हम सभी इसके लिए प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी है यहाँ मै पुनः उदाहरण के माध्यम से बताना चाहूँगा कि चाहे आप किसी भी शहर या गाँव के हों आप अपने घर के अन्दर एवं बाहर नालियों मे बहते गंदे पानी और सड़कों पर फैले कूड़े करकट को देखें और कभी समय निकाल कर गंगा नदी के किनारे बने घाटों और गंगा के किनारे बसे प्रमुख शहरो जैसे हरिद्वार, इलाहाबाद और वाराणसी आदि जगहो पर भ्रमण करे तो कोई नाला जो सीधे गंगा मे जाकर मिलता हो अवश्य देखें आपको गंगा प्रदूषण की वास्तविकता ज्ञात हो जाएगी और इसके साथ ही इसका भी एहसास होगा कि गंगा की आत्मा पर इस सबका क्या आघात होगा और इसके साथ ही साथ गंगा की सहनशीलता सहित हम सबकी अज्ञानता और जिम्मेदारियों का अवश्य ज्ञान हो जाएगा। आइये हम सब मिलकर ये प्रण ले, गंगा को न गन्दा करें और न होने दें ।

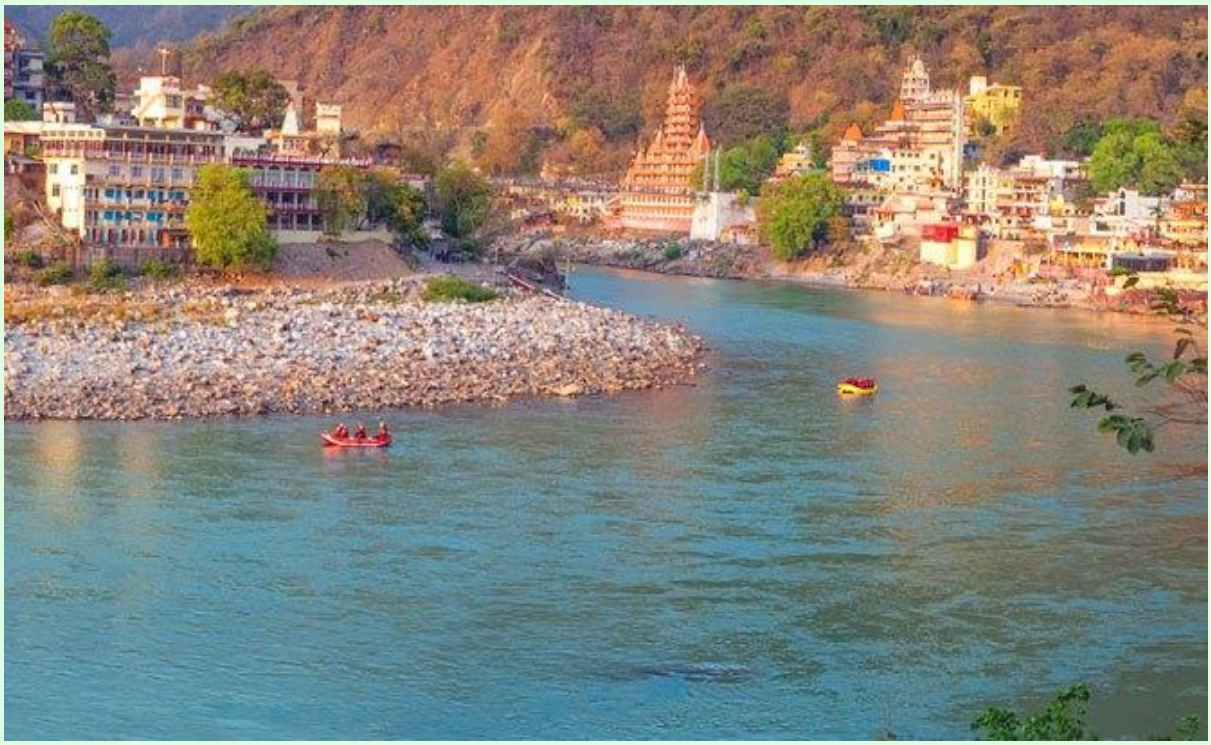

स्वच्छ रहे पर्यावरण

श्री राजेश प्रसाद शाक्य, क. प्र. स.

पोप्यूलेशन कम |

पोल्यूशन कम | |

स्वच्छ रहे पर्यावरण,

और स्वस्थ रहें हम |

हम पेड़ लगायें पीपल का,

आक्सीजन कभी न होगा कम |

पोप्यूलेशन कम, पोल्यूशन कम

स्वच्छ रहे पर्यावरण,

और स्वस्थ रहें हम |

खेत की मिट्टी बन जाये सोना,

है जैविक खाद में इतना दम |

पोप्यूलेशन कम, पोल्यूशन कम

स्वच्छ रहे पर्यावरण,

और स्वस्थ रहें हम |

जल हर जीव का जीवन है ,

इसे प्रदूषित करें न हम |

पोप्यूलेशन कम, पोल्यूशन कम

स्वच्छ रहे पर्यावरण,

और स्वस्थ रहें हम |

ना पेड़ कटे ,ना जमीन हो बंजर ,

अगर विद्युत शवदाह अपनाये हम

पोप्यूलेशन कम, पोल्यूशन कम

स्वच्छ रहे पर्यावरण,

और स्वस्थ रहें हम |

पर्यावरण नारे

श्री श्रीराम शाह, वरिष्ठ लिपिक

बूँद बूँद जल की रक्षा।
जीवन की होगी सुरक्षा।।

साइकिल चलाना है।
पर्यावरण बचाना है।।

साइकिल नही दवाई है।
स्वास्थ्य हेतु फलदाई है।।

शुद्ध वायु, लम्बी आयु ।
पर्यावरण रक्षा, जीवन सुरक्षा ।

वृक्ष लगाओ, धरा सजाओ ।

जल है तो जग है।
जग है तो जन है।।

वृक्ष धरा का आभूषण ।
दूर करे प्रदूषण ।।

जल एवं उर्जा बचाएं
पर्यावरण संरक्षण करें ।।

संतान एक, होवे नेक ।
वृक्ष अनेक-वृक्ष अनेक ।।

अच्छी और सस्ती अक्षय ऊर्जा से देश का आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संतुलन

ई.राम बालक सिंह, वैज्ञानिक 'ग'

हमारे देश की बढ़ती आबादी को देखते हुए हमें कम दर पर पर्याप्त बिजली मिल सके, जो कि हमारे दैनिक उपयोग एवं विकास के निर्माण में सार्थक साबित हो सके। देश में प्राकृतिक ऊर्जा से लेकर कृत्रिम ऊर्जा का उत्पादन करने की तकनीकी संसाधन का प्रयोग कर सरकारी एवं गैर-सरकारी सहायता प्राप्त कर पवन चक्की, सौर सिस्टम, बायोगैस और कूड़े-कचरे से बिजली बनाकर गांव, शहर और कस्बों को लाभान्वित कर देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का प्रयास सफल हो रहा है।

देश में 65 % प्राकृतिक ऊर्जा (कोयला, जल और वन सम्पदा) होने के बावजूद हर जरुरत मंद लोगों के लिए अच्छी एवं सस्ती बिजली की व्यवस्था नहीं कर सकते हैं। देश की बढ़ती आबादी को देखते हुए पूरी तरह प्राकृतिक ऊर्जा का उपयोग करते रहेंगे तो आने वाले समय में ऊर्जा का भंडार ख़त्म होने के कगार पर आ जायेगा और पर्यावरण संतुलन बिगड़ने लगेगा जिससे समस्त जीवमंडल के विलुप्त होने के आसार बढ़ जायेंगे। देश के विकास एवं पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने के लिए वैकल्पिक ऊर्जा का उपयोग करके हम सब अपनी सभी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। जैसे सूरज की ऊर्जा से सौर सिस्टम लगाकर, समुद्र, पहाड़ों, नदी एवं जलाशयों के पास पवन चक्की लगाकर पवन ऊर्जा से बिजली प्राप्त कर रहे हैं। यहाँ तक कि हम कूड़े-कचरे और गोबर से शुद्ध ईंधन, अच्छी बिजली बनाकर सस्ते दर पर हजारों घरों को रोशन कर रहे है। देश के बहुत से राज्य - आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्य प्रदेश, ओडिशा और प. बंगाल में कई बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ समुद्र एवं पहाड़ों के पास पवन चक्की लगाकर पवन ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित कर औद्योगिक इकाइयों, ग्रामीण क्षेत्रों, क़स्बों और शहरों के घरों में किफायती दर 4 रूपया 45 पैसा प्रति यूनिट के हिसाब से उपलब्ध करा रही हैं। इसीलिए ऊर्जा के क्षेत्र में भारत ने विश्व में चौथा स्थान प्राप्त कर लिया है।

अक्षय ऊर्जा से विद्युत ऊर्जा का स्रोत:

देश में अक्षय ऊर्जा को प्रारम्भ हुए अधिक समय नहीं हुआ है और आज इसने मुख्य धारा बनकर क्रन्तिकारी रूप ले लिया है। सन 2013-14 में सौर ऊर्जा का उत्पादन लगभग 3 हज़ार से 35 सौ मेगावाट था, जबकि

अकेले गुजरात राज्य में 1500 मेगावाट था। भारत सरकार ने 2025 तक देश में अक्षय ऊर्जा से लगभग 2 लाख मेगावाट बिजली उत्पादन का लक्ष्य बनाया है। इसमें सभी स्रोतों के द्वारा ऊर्जा का उत्पादन-सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोमास एवं पनबिजली परियोजनाओं से प्रदूषण मुक्त विद्युत तैयार की जाएगी। इसी सार्थक प्रयास से भारत अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में एशिया में पहला देश बनने के कगार पर है।

सौर ऊर्जा सबसे अच्छा एवं सस्ता साधन:

प्रायः सभी जानते है कि सूर्य ही ऊर्जा का सबसे बड़ा भंडार है उसकी ऊर्जा को हम सौर ऊर्जा उपकरण के द्धारा, जिसमें फोटो वोल्टिक पैनल प्लेट लगी होती है जिसके ऊपर सिलिकॉन सेल की परत होती है और यह मजबूत काँच से ढका होता है, प्रयोग कर सकते हैं। सौर ऊर्जा को हम कहीं भी धूप में रखकर विद्युतीय सुविधा प्राप्त कर सकते हैं। सौर ऊर्जा को 45 डिग्री के दक्षिणी अक्षांश पर रखकर एक अच्छी ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं। चूँकि सूरज पूरब से पश्चिम की ओर दक्षिणी अक्षांश से ही होकर गुजरता है जिससे सौर प्लेट को दिन भर धुप मिलती रहती है। यह वोल्टिक पैनल प्लेट सौर ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदल देता है। 10 किलोवाट के सौर सिस्टम से हर रोज लगभग 8 हज़ार वाट बिजली पैदा होगी, जिससे 7 कमरे की प्रकाश एवं हवा तथा 8 परिवार के भोजन की जरूरतें पूरी हो जाएगी, सौर ऊर्जा लगाने पर सरकार के द्वारा सब्सिडी देने का भी प्रावधान है।

सौर ऊर्जा के द्वारा तैयार किये गए उपकरण से सौर हीटर, सौर पंप, सौर लैंप, सौर स्ट्रीट लाईट और यहाँ तक कि सौर रिक्शा भी देश के प्रमुख शहरों में चलाया जा रहा है जिसका खर्च 10 रुपये 50 पैसा प्रति यूनिट से घटकर 4 रुपये 30 पैसा प्रति यूनिट हो गया है। आज भी देश के लगभग 17 हज़ार ऐसे गांव हैं जहाँ पर बिजली का कोई पर्याप्त साधन नहीं है लेकिन पिछले 2 वर्षों से भारत सरकार के प्रयास से लगभग 7 हज़ार 5 सौ गांवों में पवन ऊर्जा एवं सौर ऊर्जा के माध्यम से बिजली मुहैया कराई गयी है।

बायोमास के द्वारा ऊर्जा का सस्ता एवं अच्छा साधन:

बायोगैस प्लांट के द्वारा ऊर्जा एवं मीथेन गैस का उत्पादन गांवों में किया जा रहा है। क्योंकि गांवों में गोबर आसानी से अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध हो जाता है। 8 क्यूबिक बायोगैस का सयंत्र लगाने पर 35 हज़ार का खर्च आएगा और सरकार के तरफ से 12 से 15 हज़ार तक की सब्सिडी मिल जाती है। इससे 12 से 15 परिवार का भोजन और 3 लैंप आसानी से जल जाते है।

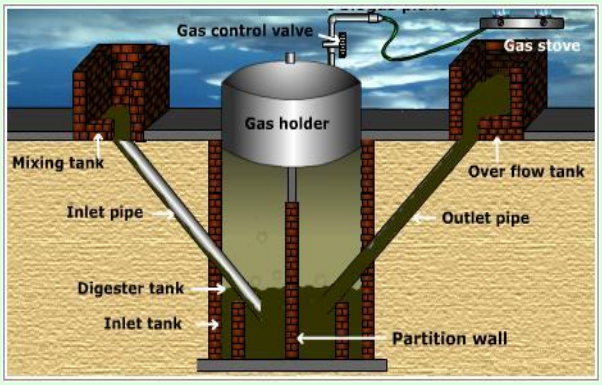

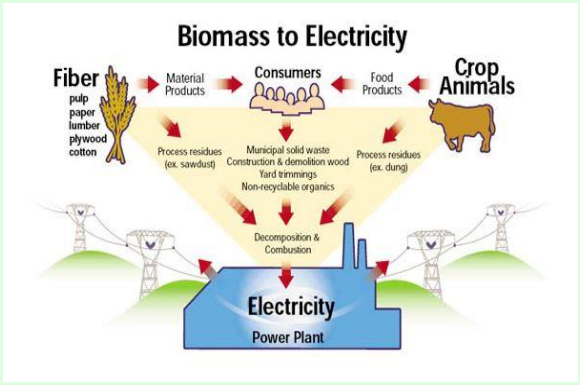

कूड़े-कचरे का सयंत्र लगाकर विद्युत बनाई जा रही है। आज देश में हर वर्ष लगभग 6 करोड़ टन कचरा निकल रहा है जिससे बिजली बनाने की हमारी क्षमता लगभग 17 हज़ार 5 सौ मेगावाट है | देश की बढ़ती हुई आबादी के अनुसार, 2020-21 तक कूड़े-कचरे की क्षमता 10 करोड़ टन तक पहुँच सकती है इससे हम अच्छी-खासी बिजली तैयार कर हज़ारों गांवों को रोशन कर सकते हैं।

आज हम सबकी भागीदारी एवं सरकार के सहयोग से अक्षय ऊर्जा के द्वारा - पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा ,बायोमास ऊर्जा एवं लघुपनविद्युत योजना के अन्तर्गत लाखों घरों को प्रकाश एवं ईंधन मिल रहा है। अक्षय ऊर्जा के माध्यम से लघु एवं दीर्घ औद्योगिक इकाईयों को सुचारू ढंग से चलाने के लिए अच्छी एवं सस्ती दर पर बिजली की व्यवस्था की जा रही है | इससे बड़े पैमाने पर लोगों को इस क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं भी बढ़ रही है। आज अक्षय ऊर्जा के माध्यम से प्रदूषण मुक्त एवं अच्छे वातावरण के साथ हमारा राष्ट्र विकास एवं उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है।

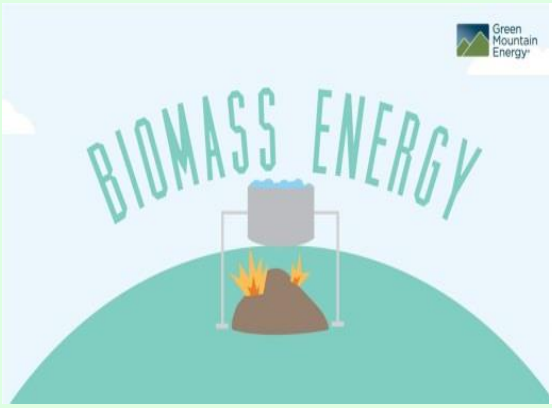

गंगा की पुकार

डॉ. राज किशोर सिंह, वैज्ञानिक 'घ'

मैंने कहा कि मत रोक मुझे, मुझको यूँ ही बह जाने दो

मेरी इस अविरल धारा को, ऐसी ही तुम रह जाने दो !

नहीं किसी से द्वेष या ईर्ष्या, नहीं किसी से बैर मुझे

जल के निश्चल भाव तले तू, मुझको सबका बन जाने दो !

मान मेरा सम्मान मेरा, तुम्ही हो अभिमान मेरा,

मेरे इस जीवन को तुम, ऐसे ही निर्मल रह जाने दो !

न मिला मुझमें गन्दा जल, ना ही डाल कचरा व अवशेष,

यूँ मुझको प्रदुषित करके, क्या तेरा होगा ये तो सोच

अपनी ही करनी का तुमको, मिलेगा ऐसा कड़वा फल

ना ही होगा धरा पे जीवन, ना ही बचेगा मानव कल !

सदियों पहले बहा करती थी, मै तो पुरे उफान पर

आज बात बन आई है मेरी, आन बान और शान पर !

बहने दो मुझको तुम अविरल, मुझको निर्मल बन जाने दो,

माँ के इस आँचल को तुम, फिर से अमृत बन जाने दो !

मैंने कहा कि मत रोक मुझे, मुझको यूँ ही बह जाने दो

मेरी इस अविरल धारा को, ऐसी ही तुम रह जाने दो !

असंतुलित पर्यावरण

श्री श्रीराम शाह, वरिष्ठ लिपिक

पेड़ सब कट गए
पौधे गमले में सिमट गए
पक्षी पलायन कर गए
खोखले घोंसले रह गए... पेड़ सब कट गए

भालू-चीता, बाघ, लोमड़िया
गीदड़ सब मर गए
गाय, भैंस, भेंड़, बकरियाँ
ठेहा पर कट गए
हाथी, घोड़ा, ऊँट-ऊँटनियाँ
पशु धन घट गए ... पेड़ सब कट गए

झील-झरना, ताल-तलैया
कुआँ-कुइयां सब पट गए
गंगा माँ की आंचल
पतले में सिमट गए... पेड़ सब कट गए

पहाड़-पठार टूट गए
टूट गए कुछ फूट गए
मानसून आना रूठ गए
खेत फसल सूख गए... पेड़ सब कट गए

खेत-खलिहान नप गए
प्लाट सब कट गए
बिल्डिंग, अटारी, टावर
बिग बाजार बन गए... पेड़ सब कट गए

सब देखत कोई ना रोकत
कोई हंसत कोई है रोवत
श्रीराम की उमिरिया
पहिले से घट गए... पेड़ सब कट गए

राजभाषा हिंदी से सम्बंधित रोचक तथ्य

संकलन - डॉ. चन्द्रकांत दीक्षित, वैज्ञानिक 'ख'

हिंदी भाषा प्रेम, मिलन और सौहार्द्र की भाषा है। इस भाषा की उत्पत्ति ही इस बात का प्रमाण है। हिंदी मुख्यतः आर्यों और पारसियों की देन है। हिंदी के अधिकतम शब्द संस्कृत, अरबी और फारसी भाषा से लिए गए हैं। हिंदी में अवधी, ब्रज आदि स्थानीय भाषाओं का भी मिश्रण है। इसलिए तो इस भाषा को 'संबंध भाषा' के नाम से भी जाना जाता है। हम सभी हिन्दी बोलते हैं, लिखते हैं और अलग-अलग तरह से इस भाषा का उपयोग करते हैं। लेकिन हिन्दी के बारे में कुछ चीजें ऐसी हैं, जिनके बारे में हमें शायद ही पता है। आइये ऐसे ही रोचक तथ्यों को जानते हैं -

1. हिंदी के बारे में एक रोचक तथ्य यह है कि हिंदी मूलत: फारसी भाषा का शब्द है, हिन्दी शब्द फारसी शब्द 'हिन्द' से आया है, जिसका मतलब 'सिंधु नदी की भूमि' है। 11वीं सदी में जब तुर्कों ने पंजाब और गंगा के मैदानी इलाकों पर हमला किया, तब हिन्द शब्द का इस्तेमाल यहां रहने वाले लोगों के लिए किया गया था।

2. संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को एक वोट से यह निर्णय लिया कि 'हिंदी' ही भारत की राजभाषा होगी। इसलिए हर साल हम 14 सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाते हैं ।

3. बिहार पहला राज्य बना, जिसने हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया।

4. हिंदी भाषा के इतिहास पर पहले साहित्य की रचना एक फ्रांसीसी लेखक ग्रासिन द तैसी ने की थी।

5. हिंदी भाषा पर पहला शोध कार्य 'द थिओलॉजी ऑफ तुलसीदास'को लंदन विश्वविद्यालय में पहली बार एक अंग्रेज विद्वान जे.आर. कारपेंटर ने प्रस्तुत किया था।

6. तत्कालीन विदेश मंत्री अटल विहारी वाजपेयी ने 1977 में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित किया।

7. ऐसा नहीं है कि हिन्दी भाषा सिर्फ़ भारत में ही बोली जाती है, हिन्दी दुनिया भर में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है । इस भाषा का इस्तेमाल मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद एवं टोबैगो और नेपाल में भी किया जाता है। हिन्दी भाषा का उपयोग 60 करोड़ से अधिक लोग करते हैं।

8. हिंदी और दूसरी भाषाओं पर पहला विस्तृत सर्वेक्षण एक अंग्रेज सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने किया था।

9. अंग्रेजी में इस्तेमाल होने वाले गुरू, जंगल, कर्मा, योगा, बंगला, चीता, लूटपाट, ठग, रायता या अवतार सरीखे शब्द हिन्दी भाषा से लिए गए हैं।

10. संयुक्त राज्य अमेरिका के 45 विश्वविद्यालय सहित विभिन्न देशों के लगभग 176 विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन जारी है।

11. हिन्दी में 'हरि' एक ऐसा शब्द है, जिसके दर्जन भर से भी अधिक अर्थ हैं; जैसे यमराज, पवन, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा, तोता, साँप, वानर और मेंढक, वायु, उपेन्द्र आदि।

12. लल्लू लाल द्वारा लिखित 'प्रेम सागर' जो 1805 में प्रकाशित हुई थी, को प्रथम प्रकाशित हिन्दी पुस्तक माना जाता है।

13. हिन्दी भाषा सीखने के लिहाज से अन्य भाषाओं की तुलना में आसान और दिलचस्प है। इसमें शब्दों का वही उच्चारण होता है, जो लिखा जाता है।

14. हिन्दी भारत की उन सात भाषाओं में से एक है, जिसका इस्तेमाल वेब एड्रेस बनाने में भी किया जाता है।

15. हर साल 10 जनवरी को पूरी दुनिया में विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

हरियाली - हरियाली

श्री श्रीराम शाह, वरिष्ठ लिपिक

हरियाली-हरियाली
फूल लगे डाली-डाली
कूकी कोयल काली-काली
हो मतवाली हो मतवाली
हरियाली-हरियाली
फूल लगे डाली-डाली

भौंरा झूमें तितली झूमें
मधुमखी झूमें फूलों की थाली
कूकी कोयल काली-काली
हो मतवाली हो मतवाली
हरियाली-हरियाली
फूल लगे डाली-डाली

रहेगी न ऊसर
उड़ेगी न धूल
अंकुरित बीज बो डाली
हम करेंगे इसकी रक्षा
शीतल वयार बहा डाली
हरियाली-हरियाली
फूल लगे डाली-डाली

विभिन्न वर्षों में विश्व पर्यावरण दिवस की थीम*

संकलन - डॉ. आर. के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ'

1974- Only one Earth during Expo '74 (केवल एक पृथ्वी)

1975- Human Settlements (मानवीय उपनिवेश)

1976- Water: Vital Resource for Life (जल: जीवन के लिए अपरिहार्य सम्पदा)

1977- Ozone Layer Environmental Concern; Lands Loss and Soil Degradation
(ओजोन परत पर पर्यावरणीय दुश्चिंताएं; भूमि क्षरण एवं मृदा अवनति)

1978- Development Without Destruction (विनाश के बिना विकास)

1979- Only One Future for Our Children – Development Without Destruction
(हमारे बच्चों के लिए केवल एक भविष्य - विनाश के बिना विकास)

1980- A New Challenge for the New Decade: Development Without Destruction
(नया दशक नयी चुनौती - विनाश के बिना विकास)

1981- Ground Water; Toxic Chemicals in Human Food Chains
(भूगर्भ जल - मानव खाद्य श्रंखला में विषैले रसायन)

1982- Ten Years After Stockholm (Renewal of Environmental Concerns)
(स्टॉकहोम के दस वर्ष बाद (पुनर्जीवित पर्यावरणीय दुश्चिंताएं)

1983- Managing and Disposing Hazardous Waste: Acid Rain and Energy
(परिसंकटमय अपशिष्ट का प्रबंधन एवं अपवहन: अम्लीय वर्षा एवं ऊर्जा)

1984- Desertification (मरुस्थलन)

1985- Youth: Population and the Environment (युवा: जनसँख्या एवं पर्यावरण)

1986- A Tree for Peace (शांति के लिए वृक्ष)

1987- Environment and Shelter: More Than a Roof
(पर्यावरण एवं आश्रय: एक छत से कुछ अधिक)

1988- When People Put the Environment First, Development Will Last
(पर्यावण का पहला स्थान - सतत विकास की पहचान)

1989- Global Warming (भूमंडलीय ताप वृद्धि / ग्लोबल वार्मिंग)

1990- Children and the Environment (बच्चे और पर्यावरण)

1991- Climate Change. Need for Global Partnership
(जलवायु परिवर्तन - वैश्विक साझेदारी की आवश्यकता)

1992- Only One Earth, Care and Share (केवल एक पृथ्वी - रक्षा एवं सहभागिता)

1993- Poverty and the Environment - Breaking the Vicious Circle
(गरीबी एवं पर्यावरण - एक दुष्चक्र का दमन)

1994- One Earth One Family (एक पृथ्वी - एक परिवार)

1995- We the Peoples: United for the Global Environment
(हम सब लोग: वैश्विक पर्यावरण के लिए संगठित)

1996- Our Earth, Our Habitat, Our Home

(हमारी पृथ्वी, हमारा उत्पत्तिस्थान, हमारा आवास)

1997- For Life on Earth (पृथ्वी पर जीवन के लिए)

1998- For Life on Earth - Save Our Seas (पृथ्वी पर जीवन के लिए - सागर का संरक्षण)

1999- Our Earth-Our Future - Just Save It! (हमारी पृथ्वी - हमारा भविष्य - इसे संरक्षित करें)

2000- The Environment Millennium-Time to Act (पर्यावरण सहस्त्राब्दी-कुछ कर दिखाने का समय)

2001- Connect with the World Wide Web of Life (जीवन के विश्वव्यापी वेब के साथ जुडाव)

2002- Give Earth a Chance (पृथ्वी को एक मौका दें)

2003- Water - Two Billion People are Dying for It! (जल - दो अरब लोगों की आवश्यकता)

2004- Wanted! Seas and Oceans - Dead or Alive?

(सागर एवं महासागर आवश्यक - जीवित या मृत ?)

2005- Green Cities - Plan for the Planet! (हरित शहर - हमारे ग्रह, पृथ्वी के लिए योजना)

2006- Deserts and Desertification - Don't Desert Drylands!

(मरूस्थल एवं मरुस्थलन - शुष्क भूमि के क्षरण पर रोक)

2007- Melting Ice - a Hot Topic? (बर्फ का पिघलना - एक ज्वलंत विषय)

2008- Kick The Habit - Towards a Low Carbon Economy

(न्यूनतम कार्बन अर्थव्यवस्था - एक आदत की शुरुआत)

2009- Your Planet Needs You - Unite to Combat Climate Change

(आपके ग्रह को आपकी आवश्यकता है - जलवायु परिवर्तन के प्रतिरोध हेतु एकजुटता)

2010- Many Species. One Planet. One Future.

(कई प्रजातियां - एक ग्रह - एक भविष्य)

2011- Forests: Nature at your Service (वन : प्रकृति आप के लिए)

2012- Green Economy: Does it include you? (हरित अर्थव्यवस्था-क्या आप इसमें शामिल हैं ?)

2013- Think, Eat, Save. Reduce Your Foodprint (सोचिये, खाइए, बचाइए - भोजन की बर्बादी रोकिये)

2014- Raise your voice, not the sea level (अपनी आवाज उठाएं - समुद्र का स्तर नहीं)

2015- Seven Billion Dreams. One Planet. Consume with Care.

(सात अरब सपने - एक ग्रह - देखभाल के साथ उपभोग करें)

2016 - Go Wild For Life (जीवन के लिए संघर्ष)

2017 - Connecting People to Nature (प्रकृति से जुड़िये)

2018 – Beat the Plastic Pollution (प्लास्टिक प्रदूषण से लड़िये)

*उपर्युक्त लिखित हिंदी अनुवाद विषयवस्तु की व्याख्या हेतु 'सांकेतिक' है |

हिंदी लेखन–सुधार की संभावनाएं

संकलन -डॉ. चन्द्रकांत दीक्षित, वैज्ञानिक 'ख'

हिंदी लेखन में कई शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग करने को लेकर अक्सर भ्रम की स्थिति रहती है, ऐसे ही दो शब्द हैं -

"कार्रवाई" और "कार्यवाही"

देखने में इन दोनों शब्दों में ज्यादा फ़र्क समझ में नहीं आता, लेकिन इनके अर्थ बिलकुल अलग-अलग हैं |

"कार्रवाई" कहते हैं "एक्शन" (Action) को और "कार्यवाही" कहते हैं "प्रोसीडिंग"(Proceedings) को | उदाहरण के तौर पर संसद या विधानसभा के सदनों में जो कामकाज हुआ, उसे कहेंगे "कार्यवाही". और सरकार ने जो कदम उठाये, किसी मामले में जो 'एक्शन' लिया, उसे कहेंगे "कार्रवाई" |

कुछ उदाहरण:

1. दवाओं में मिलावट रोकने के लिए सरकार ने अफसरों को कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिये हैं |
2. पुलिस ने बदमाशों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करने में ढिलाई बरती |
3. सरकार ने घोषणा की, कि टैक्स चोरों के ख़िलाफ़ कार्रवाई तेज़ की जायेगी |

ऊपर के तीनों उदाहरण "एक्शन" (Action) को बता रहे हैं |

अब ये उदाहरण देखें:

1. विपक्ष के शोर-शराबे के कारण विधानसभा की कार्यवाही दो घंटे ठप्प रही |
2. सुप्रीम कोर्ट ने पत्रकारों से कहा है कि वे अदालती कार्यवाही की रिपोर्टिंग करते समय ध्यान रखें कि तथ्यों को सही तरह से पेश किया जाये |
3. जांच आयोग ने मामले की सुनवाई की अपनी कार्यवाही पूरी कर ली है |

ऊपर के सभी उदाहरणों में "प्रोसीडिंग" (Proceeding) की बात हो रही है | यानी विधानसभा, अदालत और जांच आयोग में जो कामकाज हुआ, वह है "प्रोसीडिंग" और उसे कहा जायेगा "कार्यवाही" |

अब एक और उदाहरण देखें:

अदालती कार्यवाही में बाधा डालने कोशिश कर रहे एक युवक के ख़िलाफ़ अदालत ने पुलिस को तुरंत कार्रवाई करने के निर्देश दिये|

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि "कार्यवाही" और "कार्रवाई" में क्या अंतर है |

आओ गंगा को पुनः स्वच्छ बनायें

डॉ. पूनम पाण्डेय, रिसर्च एसोसिएट

धरती पर हैं जीव जितने,
उसमें तू है सबसे महान ||
निज संपत्ति नष्ट करता
रखता तू ये कैसा ज्ञान ||

प्रकृति खुद बनायी नहीं
उस पर अधिकार कैसे कहें ||
ईश्वर ने दी हमें यह सुविधा
लालच में तुम भूल गए ||

जननी जल को स्वच्छ रखो तुम
इसमें कोई दोष न आये ||
गंग धारा को रोको नहीं
बहने दो निज भांति बहे ||

दूध स्वरुप दिया प्रभु ने
इसमें मैल बहाओ नहीं ||
जाने अनजाने भूल हुई
इसको तुम दोहराओ नहीं ||

जीवन चले न बिना जल के
कटु सत्य यह भुलाओ नहीं ||
मिली विरासत में यह निधि
मतिमंद इसे गवाओं नहीं ||

प्रदूषण को दूर भगाओ
नर यंत्र विशेष बनाओ अभी ||
लगा दाग जो पृथ्वी पे
चला अभियान मिटाओ सभी ||

भटका पथ से जो अपने
उस नर को समझायें हम ||
जल धारा बहे अविराम सदा
ऐसा कृत्य दिखायेंगे हम ||

पावन गंगा की शुचिता को
आओ मिलकर बचायें हम ||

पर्यावरण-संरक्षण पर केंद्रित .....एक चिंतन

संकलन - डॉ. आर. के. सिंह,
वैज्ञानिक 'घ'

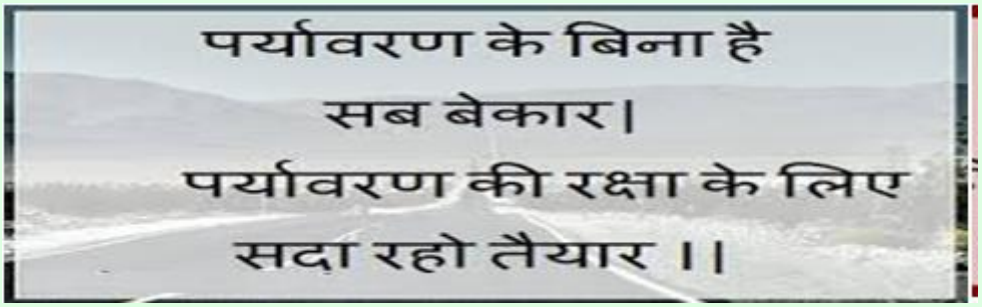

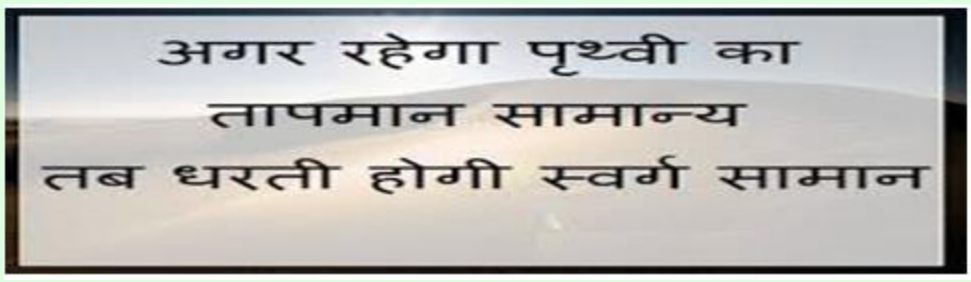

नहीं मिलेंगा जीवन दोबारा,
प्रदुषण मुक्त हो पर्यावरण
हमारा.

धरती, पानी, हवा, रखो
साफ.
वरना आने वाली पीढ़ी नहीं
करेंगी माफ़.

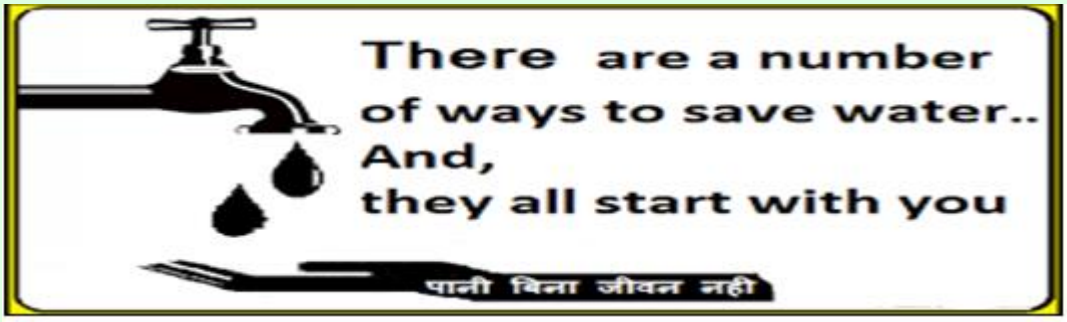

ग्लोबल वार्मिंग से है खतरे में
जान।
पर्यावरण की रक्षा करना सबकी
शान।।

हर परिवार को लेना होगा
संकल्प |
पॉलीथिन का छोड़ना होगा
विकल्प ||

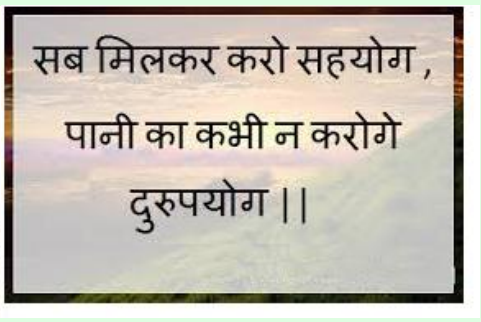
सब मिलकर करो सहयोग ,
पानी का कभी न करोगे
दुरुपयोग ||

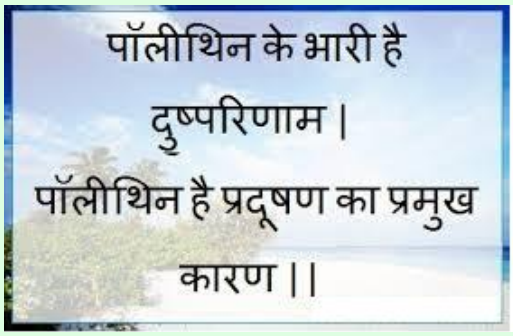
पॉलीथिन के भारी है
दुष्परिणाम |
पॉलीथिन है प्रदूषण का प्रमुख
कारण ||

एक स्वच्छ पर्यावरण
हमारे बच्चों का
अधिकार है
और
हमारा दायित्व !

विश्व में आदमी ही एक मात्र ऐसा प्राणी हैं
जो पेड़ काटता हैं, उसका कागज बनाता हैं
और उस पर लिखता हैं
"पेड़ बचाओ"

ज्ञानी पण्डित.com
वायु प्रदूषण
सांसो को भी मिलता
नहीं शुद्ध हवा का झोंका.
सोचों कोन कर रहा है
किसके साथ धोका.

पेड़ लगाओ देश बचाओ, पेड़
लगाओ जीवन बचाओ, जीवन
खुश हाल बनाओ.
Plant A Tree – Plant A Life.

प्रेरक वचन

संकलन - डॉ. आर. के. सिंह, वैज्ञानिक 'घ'

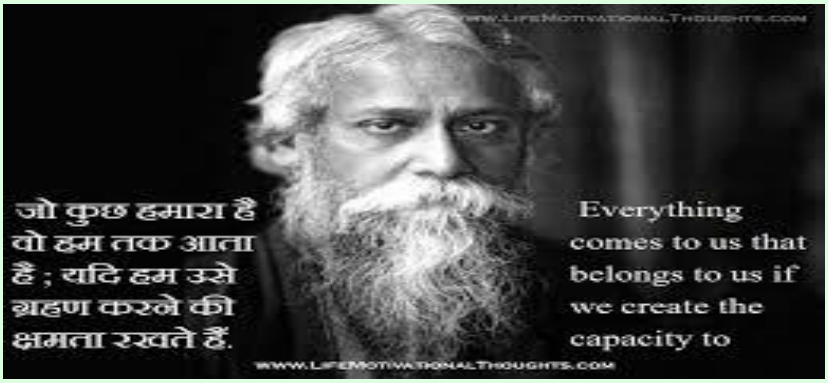

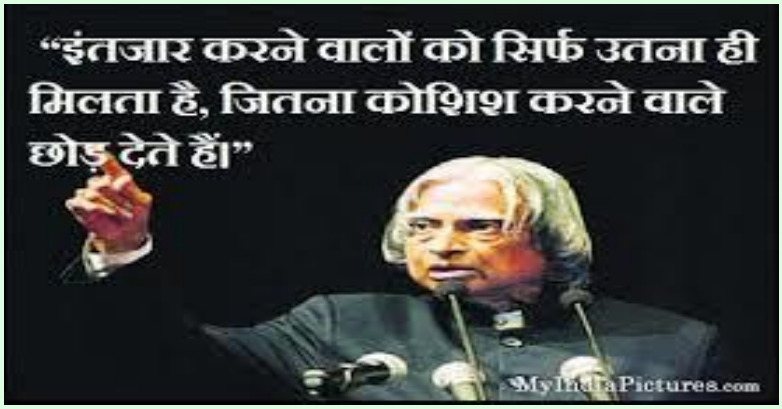

जैसे ही भय आपके करीब आये ,
उस पर आक्रमण कर उसे नष्ट
कर दीजिये.....
As soon as the fear approaches
near, attack and destroy it.
Chanakya चाणक्य
sharepicshub.blogspot

You cannot believe in
God until You believe in
Yourself.
जब तक आप खुद पर
विश्वास नहीं करते, तब तक
आप भगवान पर विश्वास नही
कर सकते

कुछ करने की इच्छा वाले व्यक्ति के लिए
इस दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं है।
सौजन्य से:QuotesDekho.Com

बिना शिक्षा के कामन सेन्स
होना, शिक्षा प्राप्त करके भी
कामन सेन्स ना होने से
हज़ार गुना बेहतर है.
Robert Green Ingersoll

एक बात हमेशा याद रखना!
LIKE US @ FB.COM/ANMOLVACHAN.IN
मंदिर बनाना,
मस्जिद बनाना
अनाथ आश्रम बनाना,
अस्पताल बनाना
गुरूद्वारा बनाना,
चर्च बनाना,
स्कूल बनाना पर कभी
वृद्ध-आश्रम
मत बनाना!!
अनमोल वचन
WWW.ANMOLVACHAN.IN
अपने माता-पिता को हमेशा
दिल से लगाकर रखना...

अनमोल वचन
WWW.ANMOLVACHAN.IN
जीवन बहुत संदर हैं, इसे और सुंदरमय बनाइए!
LIKE US @ FB.COM/ANMOLVACHAN.IN
1. मन ऐसा रखो कि किसी को बुरा ना लगे!
2. दिल ऐसा रखो कि किसी को दुःखी न करें!
3. स्पर्श ऐसा रखो कि किसी को दर्द न हो!
4. रिश्ता ऐसा रखो कि उसका अंत ना हो!
WWW.ANMOLVACHAN.IN

ज़िंदगी में अच्छे लोगो की तलाश मत करो
"खुद अच्छे बन जाओ"
आपसे मिलकर शायद किसी की
तलाश पूरी हो जाऐ.....

विज्ञान कहता है जीभ
पर लगी चोट सबसे
जल्दी ठीक होती है और
ज्ञान कहता है जीभ से
लगी चोट कभी ठीक
नही होती

राजभाषा संकल्प, 1968

संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित निम्नलिखित सरकारी संकल्प आम जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है -

****

संकल्प

****

जब तक संविधान के अनुच्छेद **343** के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी रहेगी और उसके अनुच्छेद **351** के अनुसार हिंदी भाषा का प्रसार, वृद्धि करना और उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके, संघ का कर्तव्य है :

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एंव विकास की गति बढ़ाने के हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद की दोनों सभाओं के पटल पर रखी जाएगी और सब राज्य सरकारों को भेजी जाएगी।

2. जबकि संविधान की आठवीं अनुसूची में हिंदी के अतिरिक्त भारत की **21** मुख्य भाषाओं का उल्लेख किया गया है, और देश की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओं के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक उपाए किए जाने चाहिए:

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के साथ साथ इन-सब भाषाओं के समन्वित विकास हेतु भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा ताकि वे शीघ्र समृद्ध हो और आधुनिक ज्ञान के संचार का प्रभावी माध्यम बनें।

3. जबकि एकता की भावना के संवर्धन तथा देश के विभिन्न भागों में जनता में संचार की सुविधा हेतु यह आवश्यक है कि भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श से तैयार किए गए त्रिभाषा सूत्र को सभी राज्यों - में पूर्णत कार्यान्वित करने के लिए प्रभावी किया जाना चाहिए:

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा के, दक्षिण भारत की भाषाओं में से किसी एक को तरजीह देते हुए, और अहिंदी भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषाओं एवं अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी के अध्ययन के लिए उस सूत्र के अनुसार प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

4. और जबकि यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संघ की लोक सेवाओं के विषय में देश के विभिन्न भागों के लोगों के न्यायोचित दावों और हितों का पूर्ण परित्राण किया जाए।

यह सभा संकल्प करती है कि -

(क(कि उन विशेष सेवाओं अथवा पदों को छोड़कर जिनके लिए ऐसी किसी सेवा अथवा पद के कर्त्तव्यों के संतोषजनक निष्पादन हेतु केवल अंग्रेजी अथवा केवल हिंदी अथवा दोनों जैसी कि स्थिति हो, का उच्च स्तर का ज्ञान आवश्यक समझा जाए, संघ सेवाओं अथवा पदों के लिए भर्ती करने हेतु उम्मीदवारों के चयन के समय हिंदी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्यत होगा; और

(ख(कि परीक्षाओं की भावी योजना, प्रक्रिया संबंधी पहलुओं एवं समय के विषय में संघ लोक सेवा आयोग के विचार जानने के पश्चात अखिल भारतीय एवं उच्चतर केन्द्रीय सेवाओं संबंधी परीक्षाओं के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की अनुमति होगी ।

****